

कलासन प्रकाशन
कल्याणी भवन
मॉडर्न मार्केट, बीकानेर
द्वारा प्रकाशित

धौळै दिन रौ सुपनौ

(गुजराती रै अमर उपन्यास 'दिवास्वप्न' रौ उल्थौ)

मूळ रचनाकार
गिजुभाई बधेका

रूपान्तरकार
रामनरेश सोनी

कलासन प्रकाशन, बीकानेर

संस्करण . १९९७

प्रकाशक : कलासन प्रकाशन
कल्याणी भवन, मॉडर्न मार्केट,
बीकानेर-३३४ ००१ [राज.]
फोन : ०१५१-५२६८९०

मुद्रक : कल्याणी प्रिण्टर्स
माल गोदाम रोड, बीकानेर

पृष्ठ : १००

मोल : सजिल्द ८० रिपिया
पेपरबैक ५० रिपिया

आवरण : रमेश कुमार शर्मा

बधावौ

आज मनै घणौ हरख अर गुमांन है कै देस रा जाणीता सिक्ष्याविद अर लिखारा पूजनीक गिजुभाई बधेका रौ अमर उपन्यास 'दिवास्वप्न' गुजराती सूं राजस्थांनी भासा में उल्थौ हूय'र 'धौळै दिन रौ सुपनौ' नांव सूं छप रैयौ है। ई मौकै भासान्तर रौ बीड़ौ सांभणिया भाई रामनरेश सोनी री सद्‌भावना, मैनत, खिमता अर उछाव नै हूँ बधाणी चावूं हूँ। बांरी लगन रौ ई नतीजौ है कै आज राजस्थांनी भासा रा अलेखूं बोलणियां-बांचणियां नै ईं उपन्यास रै रूप में अेक नुंवीं किसम रौ लावणौं मिल रैयौ है।

बियां तो गिजुभाई सिक्षकां अर मा-बापां सारू पंदरै-बीस पोथ्यां लिखग्या, अर टाबरां वास्तै ई दोय सौ कितावां लिखग्या, पण बांरौ 'दिवास्वप्न' उपन्यास तो माळा में सुमेरू री जियां टाळवां है। ईंरौ देस री कित्ती ई भासावां में अनुवाद हुयौ है अर कित्ती ई जग्यां सेमीनार, विचार गोस्ठ्यां अर सम्मेलन हुया है। लारला केई बरसां सूं म्हारै खंनै ईं तरै रा समंचार आता रैया है। इन्दौर रा पूज्य काशिनाथजी त्रिवेदी सैंऊं पैली सन् १९३२ में ईं रौ हिन्दी में अनुवाद कर्‌यौ। जा पछैस्तौ लारला पैंतीस-चालीस बरसां मे ईं उपन्यास माथै जाणै कित्ता लेख लिखीज्या है, ईंरी गिणती ई कोनी।

गिजुभाई बाळ-सिक्षण रा औतारी पुरस हा अर दक्षिणामूर्ति बाळ मिन्दर बांरी साधना-थळी ही, जठै बैठ'र बाळ सिक्षण रा नुंवा कूंकूं पगल्या मांड्या। आपरै बाळपणां में बांनै जीं तरै री सिक्ष्या मिली ही, बींनै लेय'र बांरै मन में बोत कड़वास ही। बींरी ठौड़ बै नुंवीं तरै री आणंददायी सिक्ष्या दैणी चावै हा, जीं रै मांय तरै-तरै रा खेल, हँसी मजाक अर हात सूं काम करणै री रोचक बातां सामिल रैवै। बांरै मन री बाळ सिक्ष्या रौ सरूप ई न्यारौ-निकेवळौ हौ। सन् १९१६ सूं १९३६ रै बिचाळै वै आपरा प्रयोग कर्‌या अर टाबरां री तेजस्वी पीढ्यां घड़ी। गुजरात रा मा-बापां नै ई बांरी पद्धति बोत पसंद आई, क्यूंकै बांरी वजै सूं टाबरां मे नुंवा संस्कार उपज्या हा। अै

सगळी बातां ई उपन्यास रै मांय लिछमीशंकर मास्टर नै मुख्य पात्र बणा'र जीं तरै सूं लिखीजी है, बांनैस्तौ पढ्यांई सरसी।

राजस्थांन में ई केई जगां गिजुभाई री बिचारधारा रै परवांण बाळ-सिक्षण रा काम सरू हुया हा! अजमेर अर जोधपुर रा नांवां री तो मनै जांणकारी है। राजस्थांन रा भायां मनै ईं बारै में बतायौ हौ। दूजी ठौड़ रा सिक्षकां-अधिकार्‍यां माथै ई बीं नुंवी हवा रौ असर जरूर पड़्यौ हुवैला।

आज रै माहौल में जद कै विद्यालयां में टाबरां री भीड़ बध रैयी है, पाठ्य पुस्तकां, कोप्यां-किताबां रौ बोज बध रैयौ है, भणाई रै नांव माथै फगत लेक्चर पद्धति चाल रैयी है, टाबरां में आप रौ काम आपौ-आप करणै री ऊरमा खतम होय रैयी है, भणणियां-भणाणियां रै बिचाळै जाण-पिछांण तक रैयी कोनी, ईं तरै रा वातावरण में गिजुभाई रौ औ उपन्यास अेक साफ-सुथरौ मारग दिखावै, अंधारा में उजास री किरणां फैलावै।

आपणां लोक-जीवण रै मांय मनोरंजन अर सिक्षण रा घणांई तरीका मौजूद है। जरूत है कै विद्यालयां री दीवारां सूं बारै सीखवा रा जित्ता-कित्ता ई साधन आसानी सूं मिल रैया है, बां नै पढ़ाई रै काम में लिया जावै। गिजुभाई लोक-वारता, लोकसंगीत, लोक नृत्य, लोकवाद्य, लोकगीत, लोकक्रीडा, नाटक, भ्रमण, पर्यावरण-ग्यांन नै जीं तरै सूं बाळ मिंदर री दिनचार्य रै मांय दाखल करी ही, बीं विधि नै आज भळै अजमाणै री जरूत है। बाळ सिक्षण ईं तरै रौ होणौ चइजै कैआपांरा टाबर गुलाम नंई स्वतंत्रचेता हुवै, परावलंबी नंई स्वावलंबी हुवै, अेकलखोरा नंई सामाजिक हुवै, मदतगार अर परोपकारी हुवै। गिजुभाई री सिक्ष्या री तासीर जे ई उपन्यास सूं छण-छण 'र बांचणियां सिक्षकां, माईतां, सिक्षा रा अधिकार्‍यां तांई पूगै अर जे वै यींनै अमल में लावै तो बाळ सिक्षण मे सुधारां री कीं उमेद की जा सकैं। सांची पूछौ तो आज सिक्ष्या रै मांय सुपना जोवणियां री जरूत है। भलेंई वै 'धोळै दिन रौ सुपनौ' जोवणिया हुवौ। ईं दिसा मे औ उपन्यास अेक भौमिया री गरज सारैला। पोथी री छपाई योत सौणी है। ईं सारू प्रकासक ई बधाई रा पात्र है।

-विमुबेन बधेका

दक्षिणामूर्ति बाळ मन्दिर
भावनगर-३६४ ००२

अनुवादक री कलम सूं

ई टाणै

टाबरां री भणाई नै लेय'र कैई तरै री अबखायां निगै आवै। कठैई बैठण री जग्यां रा फोड़ा तो कठैई भणाणियां रा तोड़ा। कठैई आं दोयां रौ बन्दोबस्त हुवै तो रुखाळा कोनी लाधै। जिकै मांयकर इसकूलां री निगैदास्ती राखणियां रौ जाबक ई तोड़ौ आयग्यौ। कोई आंकस ई कोनी रैयौ: न आंख रौ, न लाड-प्यार रौ, न मीठै-मुदरै बैवार रौ। किलासां खाली पड़ी हुवै तो कोई पूछणियौ कोनी कै छोरा कठै न्हाटग्या; कै छोरा ऊधम क्यूं मचावै, दरयां क्यूं फाड़ै; कै भणाणिया कठै गया, हाजर क्यूं कोनी? कठैई छोरां नै पाठ कंठां करबा रौ दोरौ कांम देय'र खुद भणाणिया टेबल माथै ऊंधा पड्या खरड़ाटा भरै तो बांनै सागेड़ा लबड़धकै लेबाळा कोनी कै सिरीमानजी, कुड़स्यां तोड़णी छोडौ अर छोरां रै बिचाळै जाय'र बांरै मांय बैठौ, बांसूं बातां करौ, बांरौ बिसवास जीत'र नुंवीं जात री हँसी-खुसी, मौज-मस्ती आळी भणाई री नुंवीं लीकां मांडौ। आज बां लोगां री नसल ई नीठगी लागै जिका स्याणां नै स्याणा कैय सकै अर बदमासां नै बदमास। कैई जणां हाल ई अंगरेजां री घड्यौड़ी भणाई री जूनी लीकां माथै चालता हुया, आपरा निजू अेदीपणां में ई तरै गरक हुयौड़ा है कै बां दरड़ां सूं बारै ई निसरणौ कोनी चावै। भणावौ तो भणावौ अर नंई तो नंई। छोरा ई भणै तो ठीक अर नंई भणै तो घूड़ बावौ। बस, घ्याड़ी नंई रुळणी चईजै।

आपणा घरां रा टाबर आखै मुलक री रंगीनी निजरां सूं जोवण री हूंस लेय'र इसकूलां रै मांय आवै। पण बठै बांनै सांभै कुण? बांसूं बातचीत कुण करै? बांनै रमावै कुण? काण्यां कुण सुणावै? हँसावै कुण? कुण पाणी रौ पूछै? कींनै कै पड़ी है? घणखरा भणाणिया आपरा टाबरां रा माईत हुवै, पण इसकूलां में बै गरू रौ चोळौ धारण करतां ई जाणै आपौ क्यूं बिसर ज्यावै?

कै ठा बै दोलड़ी मनोदसा में क्यूं जीवै? माँ-बाप रै नातै जिका आपरा टाबरां नै हेत-नेम सूं उछेरै, आपरा टाबरां री नबळाई, सबळाई, अबखाई, खिमता, भोळापणौ अर हुंस्यारी जाणै, अर जिका उछाव-उमाव सूं आपरै हातां काम करबा में लाग्योड़ा टाबरां री आदतां जाणै, बै भणाणियां रौ दरजौ धारतां ई माँ-बाप आळी हेतालु दीठ टांड माथै नाख'र आपरौ बैवार इयां-कियां करबा लाग्य ज्यावै? बै इत्ता दीठ-बायरा क्यू हूज्यावै? सास्तर कैवै कै माँ टाबर री पैली गरू हुवै। जणा माँवां री गोद्यां सूं भाज'र इसकूला मे आबाळा टाबरां सारू बठै रा भणाणियां लाड-प्यार रौ बैवार जता'र बां टाबरां री ममताळू मायड़ क्यूं नंई बण सकै?

कांई वजै है कै इसकूलां में पैलीपोत उछाव-उमाव सूं आबाळा टाबर की दिनां में इसकूल रै नांव सूं भौ खाबा लागै? भणाणियां नै आघै सूं जोवतां ई बै ओरां रै मांय क्यूं लुक ज्यावै? सवाल औ है कै इसकूलां टाबरां नै समजणौ क्यूं कोनी चावै? कांई वजै है कै आपरै घरां में खटपट कर'र मत्तैई सीखबाळा टाबर इसकूलां में सीखबा सारू रुचि कोनी दिखावै? वांरी मोज-मस्ती अर आजादी, चंचळाटी अर हाऊताई जाणै कठै अलोप हूय ज्यावै? लागै जाणै घणखरा टाबरां नै इसकूल रै मांय घर जिसौ हेत, अपणायत, हँसबा-रमबा अर सवाल पूछबा री छूट कोनी मिळै। बठै आंख्यां काढ़ता, चूंठिया चमकाता, बात-बात पर गदीड़ मेलता भणाणियां नै जोवतां ई टाबरां री सूथणां आली हूय ज्यावै। ईं हालत में 'कींरी गाय अर कुण नीरै'' आळी कैबत सई ढूकै।

छोरां नै हँसतां-हँसावतां, रमतां-रमावतां भणावा रौ अेक अखतरौ ईं सइका रा दूजा दायका में भावनगर (गुजरात) में हुयौ। देस री गुलामी रा बरसां में जुदी-जुदी ठौड़ टाबरां अर किसोरां री नुंवी तरै री भणाई रा अखतरा आगै ई हुया हा। स्याति निकेतन, गुजरात विद्यापीठ, जामिया-मिलिया, गरूकुळ कांगड़ी, वनस्थळी, अर कासी हिन्दू बिस्वबिद्यालय आळी जियां भावनगर री 'दिखणा मूरती' रौ ई नांव सिक्ष्या रा नुंवां प्रयोगां रै मांय सिरै गिणीजै। आं सगळां बिद्यालयां अर बाळ मिन्दरां रौ असली मकसद औ ई हो कै सिक्ष्या रौ ईं तरै कौ ढाळौ ढळीजै जिकै सूं मिनखपणै रौ मांन राखणिया, सैंचनण हियै आळा सुपातर मिनख त्यार हुवै, अर बै देस नै गुलामी रा फंदा सूं आजाद करा'र ईंनै बधापै रै रस्तै लेय ज्यावै। ईं खातर आं सगळां

बिद्यालयां अंगरेजी राज रै मांय रैतां थकां देसी भणाई री इसी न्यारी-निकेवळी रीतां काढ़ी कै देखतां-देखतां आजादी री लड़त सारू जूझणिया अर बंदूकां सामी सस्तर-बिहूणी छाती ताण'र मंडणिया आतम बळ सूं परझळता मायड़ रा सपूत त्यार हुया। आखै मुलक में सायत ई कठैई दूजी ठौड़ आजादी री ईं तरै री लड़त जोवण-बांचण नै लादै जठै इस्तक री हिंसा-बिहूणी क्रांति हुई हुवै।

बापू री सीख रो असर नैंना-मोटा देस रा सगळा लोग-लुगायां माथै हो, चायै बांरी कोई जात-बिरादरी क्यूं नी हुवौ। बापू रा राजनीत रा प्रयोगां नै सिक्ष्या रै मांय ढुकाबा रौ नुंवौ अखतरौ बां ई दिनां में गिजुभाई बधेका नांव रा प्रयोगबीर सिक्षक भावनगर में कर्‌यौ। बांरी प्रयोगथळी रौ नांव है दिखणामूरती बाळ मिन्दर। बै हा वकील। आछी-भली वकीलात छोड़'र बै ईं पासै आया हा। दो-अेक बरसां में ईं बांनै ठा पड़गी कै टाबरां री भणाई रौ ढरड़ौ तो सफा चूळियै उतर्‌यौड़ौ है अर ईं नै सागी ठायै लाणौ पड़सी।

गुलामी री जूनी भणाई में भणाणियां रौ दरजौ ऊंचौ हो, अर बै ग्यांन रा दाता गिणीजै हा। बांनै सै इखियार हा। बै बोलता अर टाबर सुणता, बै हुकम छोडता अर टाबर हुकम ओडता। टाबरां रौ दर में ई मांन नीं हो। कदैई सिंचळ्या नीं रैवणियां टाबरां माथै इसकूल में पूरी बंदोकड़ी रैती। ईं तरै रा गुलामी रा ढरड़ा सूं बांडे आबाळा टाबर आजाद कियां हूय सकै? गुलाम रौ तो मन ई गुलाम रैवै। ईं सारू गिजुभाई आपरा बाळ मिन्दर रै मांय नुंवीं सिक्ष्या रो सिरी गणेस करतां थकां अेलान कर्‌यौ कै अठै री भणाई रौ केन्द्र बिन्दु बाळक है अर सिक्ष्या री सै प्रवृत्यां बांनै निगै राख'र सरू करीजैला। टाबरां नै भरपूर आजादी रैवैला। बै मत्तै ई तरै-तरै रा आपरी परसन रा काम करै अर सीखै। यठै सूं 'माड़साब' अर 'गुरूजी' जिसा नांवां नै देसूंटौ दिरीजग्यौ। बांरी जग्यां 'भाईजी' 'भाई' अर 'भाई साब' नांव बुलीजब लाग्या। गिरिजाशंकर बधेका रौ ई मांव टूंकौ हूयग्यौ–गिजुभाई। इयां ई दूजा सिक्षकां रा नांव राखीज्या।

गिजुभाई रौ बाळ-सिक्ष्या रौ बौ प्रयोग इत्तौ क्रांतिकारी निवड़्यौ कै कीं अरसा में ठौड़-ठौड़ केई नुंवा बाळ मिन्दर खुलग्या। गिजुभाई आपरा साईनां नै तो नुंवीं सिक्ष्या री बारखड़ी मांड'र बता ई दी, पण माईतां नै ई बाळ मिन्दर री सभा मे बुला'र कै परचौ भेज'र बताय दी कै थैं टाबरां नैं

डरावौला-धमकावौला नंई, मारपीट नंई करौला,थै वांनै लाड सूं समजावौ, काण्यां सुणावौ, बांरी बातां सुणौ, वांनै घर रा काम मत्तै ई करवाद्यौ, बांनै सवायौ मांन द्यौ अर बांरौ भरोसौ राखौ। थैं बांनै नुंवीं-नुंवीं चीजां फोर'र जोबा द्यौ, नाचबा-गाबा द्यौ, चित्र बणावा द्यौ, बांरा सवालां रौ उकतायां विना पडूत्तर द्यौ। अर सांचाणी गिजुभाई री बातां रौ माईतां माथै गैरौ असर हो। बांनै खातरी ही कै गिजुभाई रा बाळ मिन्दर में बांरा टाबर जीं तरै री भणाई करै है वीं सूं बै आजाद सोच वाळा, मैनती अर सळ्या सैरी बणैला।

सन् १९१६ सूं लेय'र १९३६ तांई गिजुभाई गुजरात रै मांय आपरी नुंवी तरै री सिक्ष्या सूं विचारवान, नीतिवान अर तेजस्वी पीढ़ी रौ निरमाण करयौ। गिजुभाई तरै-तरै री काण्यां कैय'र सगळा विषय भणाता। गुजराती भासा रै मांय वीं बगत टाबरां री बाळ पोथ्यां रौ काळ हो। गिजुभाई दोय सौ रै नैड़-गैड़ बाळ पोथ्यां लिखी। सिक्षकां अर माता-पिता सारू ई पन्दरै पोथ्यां लिखी। अै सगळी बां रा निजू अनभवां री वार-वार बांचणजोगी पोथ्यां है। पण बां रै मांय अेक इसी टाळवीं लाखीणी पोथी है, जिकी पैंसठ बरसां पछै आज ई सगळां रै बांचबा अर घर-घर में बिसावाजोगी है। आ पोथी जे कोई दूजा मुलक रा सिक्षक री अंगरेजी, जरमनी, जापानी, स्पैनिस कै रूसी भासा में लिख्योड़ी हूंती तो हातूंहात करोडूं पोथ्यां बिक ज्यांती अर दूजी भासावां में ईं रौ उल्थौ हूय ज्यातौ। पण ईं रा अभाग (?) कै आ गुजराती भासा मे लिख्यौड़ी ही, जिकै सू लोगां री निजरां कोनी चढ सकी।

ईं पोथी रौ नांव है 'दिवास्वप्न'। राजस्थांनी में हूँ ईंरौ नांव राख्यौ है 'धौळै दिन रौ सुपनौ'। औ सिक्ष्या रौ अेक सलूणौ उपन्यास है। हूँ ईं नै हरमन हेस री 'सिद्धार्थ', विलियम जेम्स री 'टाक्स विद टीचर्स', वसीली सुखोम्लीन्स्की री 'टु चिल्ड्रन आई गिव माई हार्ट', कोबायासी री 'तोतोचान', अेश्टन वार्नर री 'टीचर' कै जॉन हाल्ट री 'हाउ चिल्ड्रन फेल' नांव री जग विख्यात पोथ्यां जित्ती ई मैताऊ रचना मानूं।

आज री सिक्ष्या रै मांय जिका सुधारां-बधारां अर बदळावां री गुंजास है आंनै अेक रोचक कथानक घड़'र ईं उपन्यास रै मांय इत्ती दिलचस्पी सूं पेस करया है कै बांचणिया मत्तै ई सिक्ष्या री अबखायां'र कम्यां सूं रूबरू हूय ज्यावे अर बां सूं सलटवा रा कीं उपाव ईं समज ज्यावै।

सन् १९३१ में औ उपन्यास गुजराती में लिखीज्यौ। इन्दौर रा

गांधीवादी चिंतक अर मध्यभारत रा पैला सिक्ष्या मंत्री काशिनाथजी त्रिवेदी सन् १९३२ में ईं रौ हिन्दी में अनुवाद कर्‌यौ। जा पछै पचास बरसां तांई औ उपन्यास अंधारा में गतागुम पड़्यौ रैयौ। सन् १९८४ में ईं रौ हिन्दी अंगरेजी अनुवाद "टीचर टुडे-नया शिक्षक" रै मांय जद छप्यौ तो आखै देस में ईं रै खांनी हजारू सिक्षकां, सिक्षा-प्रेमियां, अर अधिकार्‌यां रौ ध्यान गयौ। पछैस्तो जग्यां-जग्यां पत्रिकावां अर कितावां में औ उपन्यास छपतौ रैयौ। देस री कैई भासावां में ईं रा अनुवाद हुया अर औ नुंवीं सिक्ष्या री नुंवी दीठ रौ अेकर भळै आगीवांण बण्यौ।

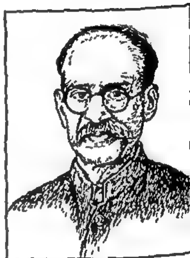
राजस्थांनी में लिखणै रौ म्हारौ घणौ अभ्यास अर म्हावरौ कोनी हौ तोई मायड़भासा हूणै सूं मत्तैई ईं पोथी रौ अनुवाद करणै री हिम्मत आयगी अर बा पार ई पड़गी। अनुवाद रौ काम नदी रै उमड़'र आबा सरीखौ हुवै। या पाणी रै सागै नुंवीं उपजाऊ माटी लावै तो औ नुंवां सबद अर भासा रौ नुंवौ म्हावरौ लेय'र आवै। ईं पोथी में ई गुजराती रा कीं नुंवां सबद आया है। जिका मारू-गुर्जरी अंचळ रै मांय सईकां सूं बैवार में आता रैया है। यांनै वापरबा सूं आपणी भासा री सगती में वधापौ ई हुवैला। आज मायड़ भासा रा चावा पाठकां रै हातां मे औ उपन्यास राखतां मनै बोत खुसी है।

गिजुभाई री पुत्रवधू अर दिखणामूरती बाळ मिन्दर री नियामक आदरजोगा विमुबेन बधेका रौ हूँ घणौ उपकार मानूं कै बै आशीरवाद रै रूप में ईं पोथी री भूमिका लिख'र म्हारौ मांन बधायौ है। कलासन प्रकासन रा भाई मनमोहन कल्याणी रौ ई घणौ आभार मानूं कै बै ईं पोथी नै छापण रौ बीड़ौ उठायौ अर आज आ पोथी त्यार है।

सैण्ट्रल जैळ रै सांमी
बीकानेर–३३४ ००५

रामनरेश सोनी

दोय बोल



मनै कोई सला दीनी कै म्हारा सिक्ष्या रा बिचारां नै बजनदार तात्विक लेखां में पोवण री ठौड़ जे कथा री सैली में घड़'र लिखूँ तो? ईसूं मनै कोसिस करणै रौ बळ मिल्यौ अर नतीजै रूप औ उपन्यास रचीज्यौ- 'दिवास्वप्न'।

दिवास्वप्नां रै मूळ में जे सांची-सखरी मैसूस करयौड़ी बातां मौजूद रैवै तो बै कूड़ी कोनी लागै। औ दिवास्वप्न म्हारा जीवता जागता मैसूस करयौड़ा तजरबां सूं ऊपज्यौ है, अर मनै भरोसौ है कै ज्यांनदार, क्रियावान अर कलपना करणिया सिक्षक ईनै आपरै सारू हकीकत में सांचौ रूप देय सकैला।

-गिजुभाई बधेका

पैली खण्ड

अखतरा री सरुआत

(१)

हूँ यांच्यौ-बिचार्च्यौ तो घणौ ई हो, पण मनै अनभव नी हो। मनै लाग्यौ कै अनभव लेणौ जरूरी है, जणांई म्हारा बिचार पाका हूसी अर जणां ई मनै ठा पड़सी कै म्हारी कलपना में कित्ती थोथ अर कित्ती सांच है।

हूँ भणाई रै मौटै अैलकार खंनै गयौ अर वांसूं प्राथमिक पाठसाळा रौ अेक वरग भणाई सारू सूंपणै री मांगणी करी।

बडा साब थोड़ा मुळक्या'र कैयौ : 'रैवाई द्यो! अै काम थांसूं कोनी हुवै। टींगरां नै भणाणौ, अर भळै प्राथमिक साळा रा टींगरां नै, ईं में परनाळै रौ पाणी ठेठ डागळै चढाणौ पड़ै। भळै थैं ठेरया बिचारणिया लिखारा। टेयल माथै बैठ'र लेख लिखणा सौरा है, कलपना में भणाणौ ई सौरौ है, पण सांपड़तै काम करणौ अर पार उतारणौ अधरौ है।'

हूँ बोल्यौ : 'जणां ई तो मनै खुद तजरबौ करणौ है, म्हारा बिचारां में सुभटता वर सुभावीकता लाणी है।'

बड़ा साब कैयौ : 'जणां ठीक है। थैं चावौ हो तो भलां ई अेक बरस राजी-खुसी अनभव करौ। हूँ थांनै प्राथमिक साळा री चौथी किलास सूंपूं हूँ। औ सांभौ वींरौ अभ्यासक्रम, अै वींरी पोथ्यां, अर अै रैया सिखण खाता री छुट्यां रा नेम-असूल!'

हूँ वां नै घणै मांन सूं जोया। अभ्यासक्रम नै हूँ गूंज्या में गेल्यौ अर चौथी री पोथ्यां डोरी सूं बांधण लाग्यौ।

साब कैयौ : 'जोवौ! थांनै दाय आवै जिका प्रयोग अर अखतरा आजादी सूं करौ, क्यूंकै ईं खातर ई थैं आया हो, पण इत्ती बात निगै राखीज्यौ,

कै बारवैं मईनै परीक्ष्या आय'र ऊभी रैवैला, अर थांरौ काम परीक्ष्या सूं मापीजैला।'

हूँ बोल्यौ : 'कबूल! पण म्हारी मांगणी है कै परीक्ष्या लैणिया थैं ई रैवोला। थांनै ई म्हारै काम रौ कयास लगाणौ पड़सी। जद थैं मनै भणाई रा प्रयोग अर अखतरा करणै री छूट देय रैया हो, तो थांनै ई म्हारौ काम दिखायां मनै चैन मिळैला, थैं ई म्हारी सफळता कै निस्फळता री वजै जाण सकौ।'

बडा साब मुळक'र हाँ भरी अर हूँ आफिस सूं बांडै आयौ।

(२)

हूँ आखौ अभ्यासक्रम जोयौ। मनै खातरी हुयी कै कित्ता ई फैरफार हूय सकै। पोथ्यां ई निगै यारै काढ़ी। गुण-दोस आंख्यां सामी तिरण लाग्या। किसा सुधार हूय सकै, औ हूँ बिचार लीना। पैलड़ै दिन सूं लेय'र छैड़लै दिन तांई रा काम रौ जाणै कै मन में आलेख हूयग्यौ। परीक्ष्या अर बींरै नतीजै रा दिन ई हूँ जोय लीना। ई बात रौ मंसूबौ ई बंधग्यौ कै आखै बरस ई तरै काम चालसी, काम हूसी अर बींरौ औ नतीजौ निकळसी। बिचारां ई बिचारां में रात री दोय कद बजगी, ठा ई कोनी पड़ी। सेवट आंवती काल सूं कियां-कांई करणौ, बींरी विगत कागद माथै टूंक'र तीन बज्यां सूयग्यौ।

सुबै हुई। उछाव हो, सरधा ही, वेग हो। न्हा-धो'र कलेवौ करयौ अर बगतसर तीन नंबर री साळा में जाय पूग्यौ। हालघड़ी साळा उघड़ी कोनी ही। हैडमास्टरजी आया नी हा। चपड़ासी बांरै घरै कूंच्यां लेवानै गयौ हौ। टींगर आंवता-जांवता हा अर सड़क माथै दौड़ा-दौड़ी करता हा।

मनै लागै हो कै कद साळा उघड़ै अर कद किलास में जाय'र काम करया मांडूं? कद म्हारी भणाणै री नुंवी जुगत दाखल करूं? कद व्यौस्ता अर स्यांति री रजूआत करूं? कद सरस रीत-भांत सूं पाठ समजाऊं अर कद भणातां-भणातां छोरां रौ मन मोय लेऊँ?

यीं बगत सायत म्हारै मगज में लोई अणूतै वेग सूं वैंवतौ हूसी।

घंटी बाजी। छोरा किलास में जाय'र बैठ्या अर हैडमास्टरजी सागै घाल'र म्हारी किलास बताई। वै छोरां नै कैयौ : 'जोवौ, औ थांरा लिछमी-

शंकरजी मास्टरजी है। अे कैवै जियां करणौ है। आंरो हुकम मानीज्यौ। देख लैया, कोई ऊधम नंई करै!'

हैडमास्टरजी बोल रैया हा, जद हूं धकला वारै मईनां रा म्हारा साथ्यां नै जोय रैयौ हो। कोई मूंडै मुळक्यौ, कोई याडी आंख मिचकारी, कोई अकड़'र गायड़ हिलाई, कोई अचूंबै अर मस्खरी सूं म्हारै सामी मींट मांड'र जोवण लाग्यौ, तो कीं यगना हुयौड़ा ऊबा ई रैया।

हूं जोयौ कै अे टींगरां नै मनै भणाणौ है– अे मसखरा, सैतान, हैंकड़ीयाज अर अजय-गजब छोरां नै! मन थोड़ा दचक्यौ, छाती थथड़ी, पण सोच्यौः 'फिकर नंई, होळै-होळै जोय लेस्यूं!'

हूं रातै टूंक्योड़ी पुर्ज्यो गूंज्या सूं काढ'र जोयौ। लिख्यौ होः सैंऊं पैली स्यांति री रमत, पछै वरग री साफ-सफाई री जाँच, पछै सहगान, पछै यातचीत।

हूं छोरां नै कैयौ :'आऔ, आपां स्यांति रौ खेलौ खेलां। जोवौ, हूं 'ॐ स्यांति' योलस्यूं, जणा सगळा मून धार'र यरौबर पाल्थी वाळ'र बैठ ज्याइज्यौ। कोई हिलैला नंई। हूं यारणा औढ़ाळ देस्यूं जणा अंधारौ हूय ज्यासी। थैं स्यांत रैस्यौ तो थांनै च्यारूंमेर रौ घूंघाट सुणीजसी। यौ सुण'र थांनै घणौ मजौ आसी। थांनै माख्यां रौ भिणभिणाट सुणीजसी। थांनै थांरी आंवती-जांवती सांस सुणीजसी। पछै हूं गाऊंला अर थैं सांभळौला।'

इत्तौ कैयां पछै हूं स्यांति री रमत आदरी। हूं 'ॐ स्यांति' बोल्यौ, पण टींगर तो आपसरी री यातां अर बाथेड़ां में अळूझ्या रैया। हूं दोय-च्यार यार बोल्यौ, पण जाणै हवा में बोलतौ होऊं। हूं अमूजग्यौ। आ तो कियां कैऊं कै 'चुप रैवौ। गड़यड़ नंई?' थाप देय'र डरपाइजे कियां? खैर, हूं धकै चाल्यौ अर बारयां बंद करी। अंधारौ हुयौ अर पछै ध्यान (?) चाल्यौ। छोरां में ऊं कोई 'ऊं ऊं' करया लाग्यौ, कोई 'हाऊ-हाऊ' करबा लाग्यौ तो केई धमाधम पग पछाड़बा लाग्या। इत्ता में ई अेक जणौ ताळी बजा दी, तो सगळा ई ताळ्यां पाड़बा लाग्या। पछै कोई हंस्यौ तो हंसी रौ खिलकौ उडबा लाग्यौ। हूं खिसियावंणौ हूयग्यौ। मूडौ फक्क हूयग्यौ। हूं बारयां खोल दी अर थोड़ी ताळ औरड़ा सूं बांडै निसरग्यौ। आखी किलास मस्ती में आयगी; छोरा एक दूजा नै 'ॐ स्यांति कैय रैया हा। कीं खड़्या हूय'र बारयां औढ़ाळता हा।

मनै लाग्यौ : म्हारी अे टूंक्योड़ी टीपां अळी गयी। घर में बैठां-बैठां

टीपां लिख'र कलपना में भणाणौ सौरौ हो, पण अे तो लौ रा चीणां चबाणा हा। अजै तांणी घूंघाट अर ऊधम में उछरैला छोरां सांमी स्यांति री रमत रमणी भैंस नै भागौत सुणाबा जिसी ही। पण चिन्त्या नंई। चोखौ ई हुयौ कै पैलै ई कवै में माखी आयगी। काल सूं नुंवा गणेसजी मांडस्यूं।

हूँ पाछौ वरग में आयौ अर छोरां नै कैयौ : 'हणै-अबार वधारै काम नंई करां। काल सूं नुंवौ काम सरू हूसी, आज थांनै छुट्टी।'

छुट्टी रौ सबद सुणतां छोरा 'हो-हो' करता किलास सूं बांडै निसरग्या अर पूरी पाठसाळा में चळभळाट माचग्यौ। 'छुट्टी, छुट्टी' रा बोल वातावरण में गूंजबा लाग्या। छोरा कूदता, उछळता, उलळता घरां खांनी भाजबा लाग्या।

दूजा सिक्षक अर निसाळिया ई ताकबा लाग्या : औ कांई रासौ है?' हैडमास्टरजी अेकदम नैड़े आय'र भंवां ताण्यां बोल्या : 'छुट्टी कियां कर नाखी? हाल तांणी दोय घंटां री जेज ही।'

हूँ बोल्यौ : 'आज छोरा भणबा सारू अभिमुख नी हा। आज बै आकळ-बाकळ हा। स्यांति री रमत में मनै आ बात ठा पड़ी ही।'

हैडमास्टरजी कड़कड़ी खाय'र बोल्या : 'पण इयां थैं परबारा ई पूछ्यां बिना छुट्टी कियां देय सकौ? अेक वरग रा विद्यार्थी घरां जासी जणां दूजा कियां पढसी? थांरा इसा अखतरा अठै कोनी चालै।'

वै रौब जतांवता फेरूं बोल्या : 'ई थांरी अभिमुखता – फभिमुखता नै जाबा द्यो। भळै, स्यांति री रमत तो चालै मोंटेसरी साळा में। अठै प्राथमिक साळा में तो धड़ देणी-सी ल्हापै में धरौ, फट देणी-सी सैं चुप हो ज्यावै! अर पछै रीतसर दूजा भणावै बियां ई थैं भणावौ तो बारवैं मईनै फळ मत्तै ई सामै आय ज्यासी। आज रौ दिन तो अळ्यौ गयौ अर उल्लू बण्या बधारै में।'

मनै म्हारा हैडमास्टरजी माथै दया आई। हूँ बोल्यौ : 'साब! ल्हापै में धर'र भणाबा रौ काम तो सगळा कर ई रैया है, अर बींरौ ई फळ हूँ जोवूं हूँ कै छोरा इत्ता उछांछळा, असभ्य, जंगळी, उग्र अर आकळ-बाकळ है। हूँ तो जोय लीनौ के अै च्यार वरसां री भणाई में छोरा इत्ती ई बातां सीखी है– 'हो-हो', 'हू-हू', अर ताळ्यां पीटणौ! पाठसाळा तो आंनै दाय ई कोनी। छुट्टी रौ नांव सुणतां ई उछळ-उछळ'र नाटग्या।'

हैडमास्टरजी कैयौ : 'जणां हूँ ई देख लेस्यूं कै थैं कांई नौ की तैरा करस्यौ।'

हूँ होळै-होळै पगल्या धरतौ मोळै हिवड़ै घरै आयौ। पड़्यौ पड़्यौ बिचारबा लाग्यौ : भाईड़ा! कामड़ौ तो मुस्कल है। पण मुस्कल हूणै में ई म्हारी खरी कसौटी है। कोई चिन्त्या नंई। आपां नै हारणौ कोनी। इयां ई भळै स्यांति री रमत हूंवती होसी? मोंटेसरी पद्धति रै मांय ईंरै सारूं पैलां सूं कित्ती ई तालीम करणी पड़ती हूसी? हूँ ई थोड़ो भोदू तो हूं ई. कै पैलड़ै दिन सूं ई औ काम सरू कर दीनौ। पैलां मनै बांसूं जाण-पिछांण साधणी जोइजै। जणां कठै ई वै म्हारौ कैयौ सुणसी अर कीं करसी। जठै छोरां रै मनड़ां रै मांय पाठसाळा नंई पण छुट्यां वाली हुवै, बठै काम करणै रौ मुतलब है भगीरथ रौ गंगा नै लावणौ।

दूजै दिन कराणियै काम माथै बिचार कर'र हूँ सूयग्यौ। रात तो दिन रा काम री जुगाळी अर आंवतै काल रै काम रा सुपनां में ई ढळगी।

साळा उघड़ी'र हूँ गयौ। छोरा म्हारी दोळ्यूं फिरबा लाग्या अर हँसी उडांवता हुवै बियां गम्मत में, पण डरयां बिना कैया लाग्या : 'माड़साप! आज भळै छुट्टी देय द्यो नी? आज ई छुट्टी, छुट्टी, छुट्टी।'

हूँ बोल्यौ : ठीक जणां। छुट्टी तो आज ई करस्यूं पण आखै दिन री नंई, फगत दो कलाक री। पण ढबौ। हूँ थांनै अेक काणी कैवूं। रागळा सुणौ। पछै आपां दूजी वातां करस्यां।'

हूँ तुरत काणी उगेरी।

'अेक हो राजा। वींरै ही सात राण्यां। सात्यूं रै सात [illegible] अर सात राजकुंवरयां!'

हाकौ-कूकौ अर रोळौ करता रौ छोरा म्हारै [illegible]।
हूँ काणी कैतो-कैतो थोड़ो ढब'र वांनै कैयौ: '[illegible] सरखा बैठो। इयां ठीक थोड़ी लागै!'

सै थोड़ा-थोड़ा ठीक बैठग्या, पण [illegible] काणी [illegible] माड़साप! हद देणी कैवौ, आगै कांई हुयौ?'

हूँ मुळक'र आगै वात टोरी : '[illegible] म्हैल अर म्हैलां-[illegible]।'

छोरा तो [illegible]

[illegible]

ही। कोई बोलै न चालै। हैडमास्टरजी सोचबा लाग्या कै आज ईं वरग में इत्ती घणी स्यांति कियां? बस बै वरग में आय धमक्या। मनै आय'र पूछ्यौ : 'क्यूं, काणी सुणा रैया हो?'

हूँ बोल्यौ : 'हाँ जी! काणी, अर नुंवी तरै री स्यांति री रमत, दोन्यूं सागै ई चाल रैयी है।'

हैडमास्टरजी पाछा गया परा। काणी चालती ही पण आड़ै-पाड़ै रा वरगां सूं रोळौ घणौ आंवतौ हो। हूँ बोल्यौ: 'जोवौ, च्यारूंमेर कित्तौ रोळौ मच रैयौ है?' छोरा नै ई बौ रोळौ अणखांवणौ लाग्यौ।

काणी आदीटै पूगी जणां हूँ कैयौ: 'बोलौ भाईड़ां! छुट्टी जोईजै तो काणी बंद कर द्यूं? नंईतर चालू राखूं?'

सै बोल्या . 'चालू, चालू। छुट्टी कोनी जोइजै म्हांनै।'

हूँ कैयौ : 'ठीक जणां, धकै सुणौ काणी, पण............आपां बीच मे थोड़ी-सी बातचीत कर लेवां। पछै छुट्टी री घंटी बाज्यां तांणी हूँ थांनै काणी ई सुणास्यूं।'

अेक छोरौ बोल्यौ : 'नंई बातचीत काल कर लैया। अबार तो झट देणी-सी काणी कैवौ, जिकौ सैपूरण हूय सकै।'

हूँ बोल्यौ : 'काणी इत्ती लंबी-लईड़ है कै च्यार दिनां ताई चालसी।'

सगळा बोल्या : 'ओहो! इत्ती लांबी? जणा तो मजौ आय ज्यासी।'

हूँ जेब सूं रजिस्टर काढ़्यौ अर नांव लिखबा लाग्यौ। बारीसर सगळा आप-आपरा नांव लिखाया: पट-पट, झट-झट। पछै हूं हाजरी लीनी अर कैयौ : 'देखौ, अबै सूं आपां काणी उगेरयां पैली हाजरी भरस्यां पछै काणी कैस्यां।' इत्तौ कैय'र हूँ काणी मांडी जिकी ठेठ घंटी बाज्यां तोड़ी चाली।

समै पूरौ हुयौ पण छोरा बोल्या : 'नंई, अजै बैठस्यां, थैं काणी कैवौ।'

हूँ बोल्यौ : 'बस भायां, अबै काल।' भळै पूछ्यौ : 'क्यूं भई, काल छुट्टी राखां कै काणी?' सै बोल्या: 'काणी, काणी, काणी।' इयां कैय'र बै चलैग्या।

गई काल आळै 'छुट्टी, छुट्टी, छुट्टी सबदां री ठौड़ आज हवा में 'काणी, काणी, काणी' रा बोल गूँजै हा।

मनै लाग्यौ: 'हालौ, आज रौ दिन तो सुधरग्यौ। सांचाणी, आ बात

सवा सौळाना सांच है कै काणी रौ जादू गजब रौ है।'

(४)

दूजै दिन सुवै सगळा छोरां मुळकता-मुळकता वरग मांय दाखल हुया। हूँ किलास में पूग्यौ'र वै सगळा अेक-दूजा माथै गुड़ता-पड़ता मनै घेर लियौ। बोल्या: 'हालौ माड़साब! अबै काणी कैवौ।'

हूँ बोल्यौ: 'पैली हाजरी, पछै थोड़ी बातचीत अर पछै आपणी काणी'

गूंज्या सूं चाक रौ कटकौ काढ़'र हूँ वरग रै बिचाळै अेक वरतुळ मांड्यौ अर बोल्यौ : 'जोवौ, रोजीना थांनै ई रै माथै आय'र बैठणौ है।' हूँ बैठ'र दिखायौ : 'ई तरै। आ ठौड़ म्हारी। अठै बैठ'र हूँ थांनै काणी कैस्यूं'

सगळा बैठग्या। हूँ ई बैठग्यौ। हाजरी ली, अर काणी उगेरी। सै अभिमुख हा। काणी फटकारी। मंत्रीज्योड़ा पूतळां री जियां मोयीड़ा वै सगळा काणी सांभळता हा। बिचाळै काणी ढाब'र हूँ कैयौ: 'क्यूं, थांनै काणी किसीक दाय आवै?'

'म्हानै काणी बोत दाय आवै।'

'थांनै काणी सुणनौ सुवावै कियां ई काणी बांचणौ ई भावै?'

'हां, म्हानै काणी बांचणी ई परसंन है, पण इसी किताबां लाधै कठै?'

'पण काणी री पोथ्यां हूँ थांनै लाय द्यूं तो थैं बांचस्यौ कै नंई?'

'बांचस्यां, बांचस्यां!'

इत्यार नै अेक चतर टींगर बोल्यौ:'पण थांनै काणी तो म्हानै पञ्चायत संभळावणी ई पड़ैला। अेकलां म्हानै ई बांचणी पड़ै, आ नंई हुवै।'

हूँ बोल्यौ : 'ठीक।' पछै हूँ काणी आगै बधाई।'

घंटी बाजी अर काणी अटकी। सगळा म्हारी दोळ्यूं ऊभा होयग्या। कीं तो मनै हेत सूं जोवण लाग्या, कीं म्हारा हात सूं अड़ रैया हा होळै-होळै, अर कीं आप रै मन में ई मस्त हा।

हूँ कैयौ : 'जाओ भागौ, साळा ऊँ पादरा घरै जाओ।'

छोरा बोल्या : 'कोनी जावां। थैं काणी कैवौ, सिंझ्या तोड़ी अठै ई बैठस्यां।

टींगर गया'र कीं सिक्षक म्हारै खंनै आया। कैबा लाग्या :' भाई साब!

आ तो कोजी करी। म्हारा वरग रा छोरां नैं ई अबै काणी चईजै। आजकालै बै भणबा में चित-मन कोनी राखै। हर बगत आ ई बात कै म्हैं काणी सांभळया जास्यां, नंईतर थैं ई कैवौ।'

हूँ बोल्यौ : 'तो थोड़ी-घोत कैयां करौ!'

बै बोल्याः 'पण कैणी आवै कींनै है? अेक ई काणी आंवती हुवै जणां कैवां नीं?'

हूँ मूंछ्यां में मुळकतौ रैयौ।

(५)

दूजै दिन दीतवार हो। हूँ बडा साब सूं मिलया गयौ।

साब बोल्या : 'हैडमास्टरजी कैत्ता हा कै थैं तोआखी बगत काणी ई कैयां करौ हो।'

हूँ बोल्यौः 'हाँ साब। हणै-अबार तौ काण्यां ई चाल रैयी है।'

साब पूछ्यौ : 'जणां प्रयोग कद करस्यौ? पाठ्यक्रम पूरौ कियां हूसी?'

हूँ कैयौः 'प्रयोग तो साब चालू ई है। सिक्षकां अर निसाळियां नै अेक-दूजा रै नैड़ा लाबा में काणी कित्ती जादूगरी नीवड़ै, ई चीज रौ हूँ खुदौखुद अनभव कर रैयौ हूँ। जिका छोरा पैलड़ै दिन मनै सुणता ई नी हा अर जिका मनै 'हा-हा, हू-हू' कर'र अमूजौ अणा देता, बै ई काण्यां सुणबा नै मिळतां ई स्यांत होयग्या है। बै म्हारै खांनी हेत सूं जोवै। म्हारौ कैयौ मानै। कैवूं बियां ई बैठै अर 'चुप रैवौ, गड़बड़ नंई' इयां तो मनै कैणौ ई नी पड़ै! निसाळ सूं बै टोरयां ई कोनी टुरै।

बडा साब बोल्याः 'भलौ, आ तो ठा पड़ी। पण अबै नुंवी रीत-भांत सूं पढ़ाणौ कद सरू करणौ है?'

हूँ कैयौः' क्यूं साब पढ़ाबा-सिखाबा री आ ई तौ नुंवी रीत है। काणी रै मारफत आज ब्यौरत्ता सिखा रैया हां, अभिमुखता री त्यारी करा रैया हां, भाषा री शुद्धि अर साहित्य री जाणकारी देय रैया हां। काल कीं दूजी बातां री सिखाई-भणाई चालैला।'

साब बोल्याः 'निगै राखीज्यौ, काणी ई काणी मे बरस नी वै ज्यावै!'

हूँ कैयौः 'हाँ जी! थैं ईं यात री चिन्त्या मती करौ।'

(६)

काणी सारु विद्यार्थी किलास मे गौळाकार जच'र बैठ्या हा। हूँ योड माथे मांड्यौ :

आज रौ कामः हाजरी, बातचीत, काणी। हाजरी भरयां पछै हूँ बातचीत छेड़ी। हूँ कैयौः 'ल्याऔ देखांणी, थांरा नख कित्ता वध्यौड़ा है? सै खड़ा होय'र आप-आप रा हात दिखाओ।'

अेकूंअेक छोरा रा नख वध्यौड़ा हा। नखां में घणौ ई मैल हो।

हूँ कैयौः 'थांरी टोप्यां तो हात में लेय'र जोवौ, कित्ती मैली'र फाटी-टूटी है?'

सगळा टोप्यां तपासी। कोईक री ई टोपी सई ही।

हूँ कैयौः 'जोवौ, थांरा कोट रा बटण पूरा है?' सगळा कोट सांमी जोयौ। दोय-च्यार जणां रा ई बटण पूरा हा।

पछै हूँ बोल्यौः 'आज अवै घणी जांच कोनी करां, काणी मे उंवार हूय रैयी है।' इत्तौ कैय'र हूँ काणी सरू कर दी।

काणी विचाळै अेक छोरौ बोल्यौः 'काणी री पोथ्या रौ काई हुयौ?'

हूँ कैयौः 'दो-अेक दिनां मे लियास्यूं। हाँ, जिका काणी री पोथ्यां पढ़णौ चावै, वै हात ऊंचौ करै।'

अेकूंअेक विद्यार्थी हात ऊंचौ कर लियौ।

हूँ पूछ्यौ : 'थैं जिकी-जिकी काणी री पोथ्यां पढ़ी हुवै, बांरा नांव तो बोलौ।' दोय-च्यार जणां ई दोय-च्यार पोथ्यां बांची ही। चौथी तांई आयां पछै ई वै पाठ्यपुस्तकां टाळ'र दूजी पोथ्यां दर मे ई कोनी बांची ही।

हूँ पूछ्यौः 'थां मे सूं कोई मासिक पत्र-पत्रिका बांचतौ हुवैला?'

दोय जणां कैयौः 'जी, म्है बालसखा बांचां हां।'

हूँ कैयौः 'ठीक जणां। हूँ काण्यां ल्यास्यूं, थैं पढ़ीज्यौ। इत्ती सारी काण्यां ल्यास्यूं के थैं बांच-बांच'र धाप ज्यास्यौ।'

सगळा ई राजी दीसता हा।

पछै काणी आगै चाली, जिकी घंटी बाज्यां तांई चाली। छुट्टी हुई अर

हूँ कैयौ: 'भायां अेक बात सुणता जाइज्यौ। गोळा माथै बैठ'र सुणौ। काल अै नख कटा'र आइज्यौ, भलौ! मत्तैई काट सकौ तो काट लीज्यौ नंईस्तो बापू नै कैय'र कै नाई आवै तो बी सूं कटवा लीज्यौ।'

अेक बोल्यौ: 'हूँ तो दांतां सूं काट लेस्यूं।'

हूँ कैयौ: 'नंई भाई! इयां मती करी। नख कैस्तो नैरणी सूं कटीजै अर कै छुरी सूं।'

पछै हूँ कैयौ: 'आपां अेक तमासौ करस्यां।'

सगळा पूछ्यौ : 'कांई?'

'थांनै उघाड़ै माथै पाठसाळा आवणो है। अै मैली टोप्यां कांई काम री? भळै आपां नै टोपी री जरूत ई कांई है?'

सगळा हँसबा लाग्या। बोल्या. 'उघाड़ै माथै ई भळै पाठसाळा आईजै? हैडमास्टरजी बकै नीं!'

हूँ कैयौ: 'हूँ तो काल सूं उघाड़ै माथै आस्यूं अर थै ई आइज्यौ।'

छोरा बोल्या: 'पण बापू ना पाड़ै तो?'

'तो कैय देया कै आ तो फिजूल री अळबत है। मैली टोप्यां पैरणै सूं तो न पैरणी आछी।'

हूँ भळै बोल्यौ: 'जोवौ! कोट रा बुतान जरूर टंकवां लीज्यौ। इयांन तो चोखौ कोनी दीसै।' सगळा टींगर मन में बिचार करता-करता घरै गया।

मारग में मनै हैडमास्टरजी मिळ्या, बोल्या: 'अरे भाई! थैं तो कीं रौ की करबा लागग्या। अै सगळा चौळका थैं क्यूं करौ? नख कटाणा, अर बटण टाकणा, अर औ, अर बौ. . ... । भणाई री नुंवी रीत-भांत सरू करबा आया हो, तो बा ई करौ नीं! अै काम तो मा-बापां रा है, बै ई करसी, नंईस्तो आपां नै कै? भळै सुणौ, उघाड़ै माथै तो छोरा साळा में आ ई नंई सकै। आ असभ्यता बाजैली। ईं बाबत मे बडा साब रौ हुकम जोईजै।'

हूँ कैयौ: 'साब, भणाई री अै ई तो नुंवी रीतां'र बातां है। मैलाघेला अर ढगधड़े-बायरा छोरां री पैली पढ़ाई ईं नै टाळ'र दूजी होय कांई सकै? थैं जोवौ तो सरी, जद सूं हूँ बानै आ बात याद अणाई, बै सरमीज्या तो सरी! बांनै लाग्यौ तो सरी कै ईं तरै मैलौ नंई रैवणो। मनै तो खातरी है कै घणखरा छोरा साफ-सफाई सूं रैवणौ सरू कर देसी। रैयी टोप्यां री बात, तो ईं बारै में हूँ साब रा बिचार जाणल्यूंला। जठै तांई बांरौ हुकम नंई मिळैला बठै ताइ

हूँ कैयौ: 'म्हारै खंनै अेक दूजी योजना है, पण थैं मंजूर करौ जद नीं। योजना आ है कै सगळा छोरां नै किलास री पोथ्यां तो लाणी ई पड़ै। हिन्दी री चौथी किताब, बींरी कुंजी; अर इतिहास री पोथ्यां तो सगळा छोरां नै खरीदणी ई पड़ै।'

'हां, सई है।'

'हूँ इयां करणी चावूं कै छोरां सूं पाठ्यपुस्तकां री खरीद मती कराऔ अर बां पोथ्यां रा दाम सूं चोखी-चोखी पढ़णजोगी पोथ्यां खरीद लेवां अर बांसूं अेक पुस्तकालै बणा लेवां।'

'अच्छ्या, पण पाठ्यपुस्तकां बिना पढ़ावोला कियां?'

'ईं माथै हूँ बिचार कर राख्यौ है। भणाणै री पद्धति में बदळाव माथै मनै पूरी खातरी है। हूँ थांनै काम कर'र दिखास्यूं अर ईं बारै में पूरी खातरी अणा देस्यूं।'

'बोत आछ्यौ, हूँ जाणूं हूँ कै औ थांरौ ई प्रयोग है, अर थांनै ई नतीजो बतावणौ है। पण मनै थोड़ी चेतावणी तो देवणी ई जोइजै कै देखौ, छोरा रखड़ै नंई। थांरा अखतरा में हूँ बरौबर साथ हूँ, पण छाती में अेक धड़कौ ई है तो सरी।'

हूँ कैयौ: 'साब! थैं भरोसौ राखौ। अेक बार देखौ तो सरी। कोसिस आपणी है, भगवान चावैला तो सफळता आपणी ई हुवैला।'

'अच्छ्या! पण साल रै आखिर मे थारै ईं पुस्तकालै रौ कांई होसी? पोथ्यां टाबरां नै बांट देवौला?'

'हाँ, अेक तरै सूं पोथ्यां आखै वरग री है। बै वरग नै ई पाछी मिलणी जोइजै। पण जे मा-बापां नै समझा सकां कै बै अै पोथ्यां पाछी नंई मांगै'र वरग रा पुस्तकालै सारू रैबा देवै तो वरग रौ पुस्तकालै कायम हूय ज्यासी अर सालो-साल बींरै मांय नुंवी-नुंवी पोथ्यां उमेरीजसी।'

'कै ठा थांरी बात लोगा रै गळै उतरसी कै नंई? बियां बिचार सौणौ है। ईंनै अेकर अजमाणौ जोइजै। पण सवाल पाछौ खड़्यौ हुवै कै वरग में भणाती बगत पाठ्यपुस्तकां रै बिना थै काम कियां धिकास्यौ?'

'जी, ईं बाबत हूँ सोच राख्यौ है।'

दूजै दिन साळा उघड़ी। मनै अनेसौ हो कै सायत छोरा उघाड़ै माथै आवै। पण म्हारी आंख्यां खुलगी। ठा पड़ी कै मा-बाप टाबरां नै बियां जाबा री ना पाड़ी ही। वै कैयौः 'उघाड़ै माथै ई कदै जायां करै? थांरौ मास्टर तो बावळौ है।'

हूँ नख जोया, पण कोई-कोई रा ई कट्यौड़ा हा। घर री जात-जात री अबखायां ई ईंरी वजै ही। कोट रा बटण टांकबानै कुण निकमो हो? अेक मां कैवायौ होः 'माड़साव! थैं भणावा नै आया हो तो भणाऔ नी, पण औ नुंवा-नुंवा चौळका क्यूं मांडो हो? म्हानै ई कीं काम काज तो हुवैला ई, कै टींगरां रा नख काटां, बटण सीवां, औ करां, बौ करां? म्हारा छोरां रौ तो इयां ई चालसी। म्हानै तो आगै ई मरणै ई फुरसद कोनी, भळै थांरी आ बेगार कुण ऊंचै?'

हूँ तो ठार हूयग्यौ। सोच्यौ हो, साळा खुलतां ई वरग साफ-सुथरौ लाधैला, पण उल्टा इसा-इसा सनेसा सुणवानै मिल्या। खैर, कोई चिन्त्या नंई। हूँ सोच्यौ :'इयां काम नी सरै, अेक खांनी मनै मा-बापां रौ सैकार साधणौ पड़सी अर दूजै खांनी इसी योजना सरू करणी पड़सी जिकै सूं साळा में ई टाबरां नै आं वातां रौ चस्कौ लाग ज्यावै।'

बीं दिन हूँ टाबरां सूं घणी बातचीत टाळ'र सीदी काणी सरू कर दी अर मांड्यौड़ी काणी पूरी कैय दी।

छोरा कैयौः 'दूजी काणी।'

हूँ बोल्याः 'काल सूं नुंवी काणी सरू करस्यूं। आऔ, आज कोई खेल रम्मां।'

'खेल?' छोरा अचरज सूं म्हारै सांमी ताकवा लाग्या।

'हाँ खेल रमस्यां, आपां रमस्यां। थांनै किसा-किसा खेल आवै?'

'घणा ई आवै, पण अठै खेल कियां रमीजै?'

'क्यूं नंई रमीजै?'

'जी, आ पाठसाळा है। अठै भळै कदेई छोरा रम सकै? थैं कदेई रमतां जोया है?'

'पण आपां रमस्यां। हूँई थांरै भैळै रमस्यूं। आओ रम्मां।'

केई छोरा तो थांमला-री जियां खड़्या रैया और कीं 'हो-हो' करता रमण नै नाट्या। इत्ता में ई रौळौ माचग्यौ। दूजी किलासां रा छोरा ई कमरां सूं झांक-झांक'र देखण लाग्या। दूजा सिक्षक ई म्हारै सांमी जोवण लाग्या।

ईं गाळै में ई अेकाअेक हैडमास्टरजी आया अर मनै टोकता थकां कैयौ: 'देखौ, अै रमतां अठै नजीक में को रमीजै नी। रमणौ हुवै तो यीं मैदान में जाऔ परा। अठै दूजां नै अड़चण आवै नी!'

हूँ छोरां नै लेय'र मैदान में गयौ।

छोरा तो छूट्यौड़ा घोड़ा री दांई उछळ-कूद मचावै हा। 'खेल, खेल, हाँ भाईड़ा खेल!'

हूँ पूछ्यौ : 'किसौ खेल रमस्यौ।'

अेक बोल्यौ : 'खो-खो।'

दूजौ बोल्यौ: 'नंई कबड्डी।'

तीजौ बोल्यौ : 'सतौळियै रौ दांव।'

चौथौ बोल्यौ : 'जणां म्है कोनी रम्मां।'

पांचवों बोल्यौ : 'अैनै रैबा द्यौ, आपां तो रम्मां।'

हूँ गळ्यां में बिगड़्यौड़ी छोरां री आदतां देखी। हूँ कैयौ :'देखो भाई! आपां तो रमण नै आया हां। 'नंई' अर 'हां', 'कोनी रम्मां' अर 'रमस्यां' इयांन ई थांनै करणौ हुवै तो पाछा किलास में चालौ परा।'

छोरा बोल्या : 'नंई, म्हानै तो रमणौ ई है।'

हूँ कैयौ :'हालौ जणां! आज खो-खो खेलस्यां। दो जणा आगीवांण बण ज्यावौ अर बाकी रा भीडू।'

भीडू बणबा मे ई घणी ताळ लागी। अेक कैयौ: 'हूँ भीडू बणस्यूं', दूजौ बोल्यौ : 'हूँ बणस्यूं।' सेवट हूँ दोय जणां रा नांव नक्की करया, दो फांट बणाई अर रमत मांडी।

पण आ तो गळी आळा टींगरा री रम्मत रैयी। मूंडा मे जीब घाल'र कोई रम्मै जणांक! हर कोई बिना वजै कीं न कीं बोलतौ ई रैवै। 'लै मियां, अपड़ देखाणी!', 'औ पकड्यौ!', 'थारी के मजाल कै अपड़ लेवै?', 'अरे, चेतौ राखौ, हूँ कैवतौ कोनी हो कै निकळ ज्यासी! भारी लफ्फा मारतौ हो, बौ नाटग्यौ नी बठीनै सूं ! ल्यौ हारग्या नी?'

मनै लाग्यौ कै औ रमत रौ मैदान है कै कूंजड़ा बजार? आ खो-

खो री रमत है कै रौळा-रप्पा री बाजी?

खेल खतम होतां ई जीत्यौड़ा छोरां में सूं अेक जणौ बोल्यौ : 'ल्यौ म्हे जीत्याजी, म्हे जीत्या। थें खस्या तो घणा ई पण जोर कांई चालै। भीड़ू सांतरा हुयां ई कै हुयौ?'

सामलौ चिड़ग्यौ अर घुरक्यौ, बोल्यौ : 'हाँ, हाँ हारग्यौ। अब कांई करसी?'

बौई छोरौ भळै बोल्यौ : 'थे हारग्या म्हे जीतग्या, थें हारग्या म्हे जीतग्या।'

हारणिया रौ मूंडौ लालबम हो।यौ कैयौः'बस, अबै चुप करौ, नंईतर देख लैया औ दग्गड़ आवै।'

जीतणियौ बोल्यौ : 'आया ई आया! हूँ तो चिड़ास्यूं, चिड़ास्यूं, चिड़ास्यूं–अै हारग्या, अै हारग्या,अै हारग्या!'

पैला छोरा री रीस काबू कोनी रैयी। उठा'र भाटौ बगायौ। भाटौ बरणाट देणी-सी सामला रै माथै लाग्यौ अर लोई रो रैलौ बैंवण ढूक्यौ। हूँ सोच्यौ :घणी भूंडी हुई आ तो! रुमाल फाड़'र बीं रै माथै पाटौ बांध्यौ ।सगळां नै खंनै बुला'र हूँ कैयौ : 'बस, काल सूं रमणौ बंद।'

सै बोल्याः 'पण साब, आं दोयां री लड़त में म्हारौ कै कसूर?'

हूँ कैयौ :'थां लोगां नै म्हारी दो-अेक सरतां कबूल हुवै तो ई रमण नै आवांला।'

सै बोल्या : 'कबूल है, कबूल।'

हूँ कैयौः 'पैली बात तो आ, कै रमती बेळां बेबात कोई नंई बोलै। बोलसी जिको बांडै बैठ ज्यासी।'

सै बोल्याः मंजूर है।

'दूजी बात आ कै रमत में हारबा-जीतब री बात कोनी हुवै। आ तो रमत है। ईं में अेकर अेकानला भीड़ू लारै रैय सकै, तो दूजी वार सामला भीड़ू लारै रैय सकै। ईंरै मांय थें हारग्या अर म्हे जीत्या जिसी बात कोनी हुवै। खेलणै रो मुतलब है खेलणौ, कूदणौ, मजौ लेवणौ। हारणौ अर जीतणौ अर पछै माथौ फोड़णौ, ईंरी कांई जरूत?'

सै बोल्या : 'आ ई मंजूर है।'

म्हे सगळा रम-रमा'र पाठसाळा में आया। सागै पैलौ माथौ फूटेड़ौ

छोरौ ई हो। दूजा सिक्षक अर छोरा सै बींनै जोवण सारू बांडै आया। अेक मसखरौ छोरौ बोल्यौः 'क्यूं, किसीक जबरी रमत रमाई।'

दूजौ बोल्यौ : 'अै तो फाग रमबा नै गया हा!'

छुट्टी हुई जणा सिक्षक अर हैडमास्टरजी मिळ्या। अेक सिक्षक कैयौः 'कियां? आज तो भारी जुद्ध करवा दियौ थै!'

दूजौ बोल्यौः 'अजी साब! इसी रम्मत में थैं कांई काढ्यौ! आ ठैरी बारा बापां री परजा, ईं नै तो साळा रै बाड़े में ई राखणौ'र घोखाणौ-पढ़ाणौ। छूटा छोड्या नीं, अर अेक-दूजा रा खप्पर खोल्या नीं। गळ्यां में रोजीना कांई हुवै जिकी थांनै ठा कोनी कांई।'

हैडमास्टरजी कैयौः 'हूँ तो धारतौ ई हो कै आज की नुंई-जूनी हूसी। पण ठीक ई हुई, अै सिरीमानजी नै अेकर तजरबो होणौं जरूरी हो, ईंरै बिना अैंरो काळजौ कियां ठरतौ? साळा में ई कदेई खेल हुवै?'

हूँ बोल्यौः 'साब! खेल ई तो साचो भणतर हुवै। दुनियां रा नांमी-नांमी म्हापुरष खेल रै मैदान सूं ई निपज्या है। रमत रौ मुतलब है चरित्तर।'

हैडमास्टरजी कैयौः 'जणां ई तो आ मारकूट अर माथा-फूट हुई!'

बातां हो ई रैयी ही कै इत्ता में ई माथौ फूटेड़ा छोरा रौ बाप रातौ-पीळौ फूंफावतौ आय धमक्यौ। बोल्यौ 'ईं तरै रौ भणतर म्हांनै नंई जोइजै। देखौ नी, औ माथौ खुलग्यौ! कठै है हैडमाड़साब? कुण मारयौ ईंनै?'

हूँ बोल्यौः 'देखौ भाई साब! अै छोरा तो रमबा नै गया हा। बठै छोरा-छोरा आपसरी मे लड-भिड़्या अर लागगी।'

बाप पूछ्यौ : 'पण अैंनै रमण रौ हुकम कैण दियौ? साळा में भणाई हुवै कै रमत? अै तो आखै दिन गळ्यां में रमता ई रैवै है? थांनै छोरां नै भणाणों हुवै हो भेजूं, नंईस्तौ भेजणौ बन्द!

हूँ बोलौ-बोलौ सुणतौ रैयौ।

हैडमास्टरजी बोल्याः 'सुणौ भाई साब! अै सिरीमांन नुंवा सिक्षक बण'र आया है अर भणाई रा नुंवा-नुंवा अखतरा करै है। आज अै रमत रौ अखतरौ करयौ हो। बीं रौ ई नतीजौ है आ भिड़ंत अर माथाफोड़ी।'

छोरा रौ बाप कैयौः 'मनै कोनी पौसावै थांरा अखतरा-बखतरा। छोरां नै सीदौ-सीदौ पढ़ाणौ हुवै तो पढावौ नंईतर अठै सूं उठा लेस्यूं।'

ईं बगत दूजा सिक्षक मूंछ्यां लारै मुळक रैया हा। पण ईं वेळां हूँ

कांई बोलूं?

घरै गयौ। रोटी कोनी भायी। औरा में जा'र सोचण लाग्यौ: 'मारया भई, खोटी पजी! खैर। रमत रा नेम-असूल बताया तो है, भळै बताय देस्यूं। बाकी रमत तो रमाणी ई जोईजै। म्हारै हिसाब सूं तो सांचौ सिक्षण औ ई है।

पड़्यां-पड़्यां ख्याल आयौ :'क्यूंनी मा-बापां री अेकाद सभा बुला'र बांनै रम्मत री मैमा समजावूं! बांसूं साफ-सफाई अर ब्यौस्त सारू सैयोग देबा री अरदास करूं! बांरी मदत नंई मिळसी तो म्हारौ काम मारयौ जासी। आपरा टाबरां वास्तै मा-बाप इत्तौ ई नंई करसी कांई? म्हे सिक्षक लोग मा-बापां रौ सैकार नंई मांगां तो आ म्हारी ई खोट है! तो क्यूं नंई काल ई अेक सभा बुलाऊं?'

(८)

सभा भरीजी। पण बींनै सभा कैवां तो कियां? चाळीस मा-बापां नै तेड़ौ भेज्यौ हो, पण आया सात जणां ई। हूं कित्तौ दुमणौ हुयौ, बींरौ छेड़ौ कुण जोवै हो! हूं भासण री सागैड़ी त्यारी कर राखी ही, पण करतौ कांई। मनै लाग्यौ कै कोसिस करणो आपणै सारू है। हालौ, भासण रौ ई औ अखतरौ सई!

घणौ ई काळजै सूं हूं अेक कलाक तोड़ी मनमोवणौ भासण दियौ। सात जणां में सूं अेक नै घरां सूं तेड़ौ आयग्यौ अर बै गया परा। दूजा उकताइजेड़ा सुणता रैया। पण म्हारौ मुद्दौ घणौ मैताऊ हो अर बींरै बारै में बांनै समजाणौ जरूरी हो।

हूं बांनै सांचै भणतर अर कूड़ै भणतर री तंत री बातां घणी ई झीणवट सूं बताई। हूं बांनै आतमा री उन्नती अर बींरै सागै साफ-सफाई रौ रिस्तौ समजायौ। हूं बांनै खेल सागै चरित्तर री सांकळ जोड़'र समजाई। हूं बां नै हियै मांय सूं उपजतै सांचै नियमन री मैमा अर बींरौ मोल बतायौ। हूं बांरै सांमी आजकालै री पाठसाळा री सिक्षण-पद्धति अर कूड़ै नियमन नै भांड'र बांरौ भुक्कौ कर नाख्यौ।

पण चीकणै घड़ै छांट ठैरै जणां! बापड़ा दोय-च्यार जणा तो सरमा-

सरमी आयोड़ा हा, बैई घरां जाबानै उंतावळा हा, अर भासण सैंपूरण होतांई बै भाग छूट्या।

लारै रैयग्या म्है सिक्षक अर म्हारा बडा साब। साब थोड़ा मुळक'र बोल्याः 'भाई लिछमी शंकरजी। आ तो भैस आगै भागौत होयगी। थांरा फलसफा नै अठै समजै कुण है?'

लारै सूं कोई सिक्षक होळैसीक डळी खिसका दी: 'बावळौ है जी'

मनै चोखोस्तौ कोनी लाग्यौ पण हूँ घूंटड़ौ गिटग्यौ। हूँ म्हारी आतमा रै मांय ईं बात नै मैसूस ई करी कै हालघड़ी हूँ थोड़ौ बावळौ -'भण्यौ-गुण्यौ मूरख' तो हूँ ई! अजै तांणी मनै ठा ई कानी कै मामूली आदम्यां रै सांमी कियां भासण देणौ जोइजै!

सगळा सिक्षक ठी-ठी करता घरां गया।

(९)

दस-बारा दिन बीत्या'र हूँ पुस्तकालै रौ काम पाछौ सांभ्यौ। काण्यां बोत कैईजगी ही। विद्यार्थी चौथै वरग रा हा। अबै बां रै हातां में किताबां री जरूत ही।

हूँ छोरा नै कैयौ 'काल थैं चौथी किताब अर इतिहास रा दाम लेता आइज्यौ। किताबां री ब्यौस्ता अठै सूं हूय ज्यासी।'

दूजै दिन अेक छोरौ चौथी किताब अर इतियास ले'र ई आयग्यौ। बोल्यौ : 'जीं दिन हूँ चौथी में चढ्यौ हो, वी दिन ई म्हारा बापू अै किताबां मोलाय लाया हा!'

दूजौ बोल्यौः 'म्हारा बडा भाई खंनै अै किताबा ही, जिकी लियायौ।'

तीजौ बोल्यौ : 'मनै अठै सूं किताबां कोनी लेणी, मुम्बई सूं म्हारा फूंफौसा भिजवा देवेला।'

भळै अेक छोरौ बोल्यौः 'म्हारा बापू पईसा देवै कोनी। कैवै हूं मत्तेई किताब ला देस्यूं।'

हूँ सोच्यौः मारया भई! कलपना में तो पुस्तकालै रौ मेळ मिळणै सौरौ हो, पण खराखरी कित्तौ दोरौ है।

कीं छोरा पईसा लाया हा। हूँ बांनै रसीद देय'र पईसा खंनै राख लिया। छोरां नै हूँ कैयौः 'ठीक है भई!'

दूजै दिन छोरा बोल्या: 'म्हारी पोथी! म्हारौ इतियास!!'

हूँ कैयौः 'अै थांरा पईसा भेळा कर'र हूँ काण्यां री अै नुंवी किताबां लायौ हूँ। थैं कैवता हा नीं, कै थांनै काण्यां री किताबां बांचण में मजौ आवै'

छोरा बोत राजी हुया। बै सौणी-सौणी रंगील पुट्ठां अर चितरामां आळी किताबां जोवतां ई बांरै माथै टूट पड़्या।

हूँ कैयौ: 'आपां खंनै अबार तो पनरै ई पोथ्यां है। पनरै जणां बांच सकै। बाकी रा बीस जणां म्हारै खंनै आवौ परा। हूँ बांचूँ, थैं सांभळौ।' गड़बड़-गोटाळौ टाळबा नै हूँ फेंरू कैयौः 'अेक सूं पनरै तांई रा बिद्यार्थी अै पोथ्यां बांचसी अर बाकी म्हारै खंनै आय ज्यावौ।

पनरै जणां पनरै पोथ्यां उठा'र भूखा बाघ री जियां टूट पड़्या। हूँ कैयौ:'देखौ भायां! अेक किताब बांच्यां पछै मेज माथै रख दीज्यौ, अर दूजी किताब पड़ी हुवै तो उठा लीज्यौ। इयां थांनै अेक-अेक कर'र सगळी किताबां पढण नै मिल ज्यासी।'

बाकी छोरां नै हूँ म्हारै खंनै बिठा लिया अर आदर्स वाचन सरू कियौ। हूँ लैजा सूं, भाव-भंगी अर नेम परवांण बांचण लाग्यौ, पण दूजां पनरै जणां रौ पढ़णै रौ रौळौ! ढब'र हूं कैयौ:'भायां!'सै मन में पढ़ौ, क्यूंकै म्हांनै अड़चण हुवै।' कीं देर तो रौळौ कम हुयौ पण मून बांचणै री बांरी रफत कोनी ही। बै जोर-जोरसूं बांचै हा। मुदरा होय'र बै तो पाछा ऊंचा सुर में बांचबा लाग्या। हूँ बांनै कमरै मे अळगा-अळगा बैठ'र बांचण सारू कैयौ अर हूँ मांयनै रैयौ।

आदर्स वाचन खूब चाल्यौ। पसंद री काणी ही, जिकौ सगळा ई मजौ ले-ले'र सुणी। छुट्टी री घंटी तांई पोथी रौ वाचन अर आदर्स वाचन चालतौ रैयौ। पछै म्है घरां गया परा।

(१०)

काण्यां, खेल, पुस्तकालै, आदर्स वाचन, साफ-सफाई अर ब्यौस्ता री खटपट करतां-करतां दोय-तीन मईना गुड़कग्या।

हूँ म्हारै काम रौ हिसाब माडण नै बैठौ। हुयोड़ै काम माथै मींट मांडी।

मनै लाग्यौ कै हालघड़ी पाव रूई में सूं पैली पूणी ई कोनी कतीजी ही। पाठ्यक्रम रा हिन्दी, गणित, इतियास अर पदारथ पाठ इत्याद विषयां में तो कीं कोनी हुयौ हो। दूजी किलासां में तो घणौ ई काम निवड़्यौ हो, अर बरस उतरतां मनै ई वौ सगळौ काम कर'र दिखाणौ हो, आ ई म्हारा अखतरा री सरत ही।

औ तो ठीक है, पण हूँ जित्तौ-कित्तौ ई काम पूरौ कर्‌यौ है, वींनै तौ निजर बारै काढूं! काणी-कैणौ बोत बढिया तरै सूं ढाळै पड़्यौ हो। वींरी वजै सूं छोरां मे ब्यौस्ता अर अभिमुखता केळवीजी ही। पण अजै ताणी चम्पकलाल अर रमणलाल नै काणी दाय कोनी आई ही। रामजीवण अर शंकरलाल नै काणी साव सौरी लागै ही। काणी री बगत राघव अर माधौ आंख्यां टमकारै, आंगळ्यां नचावै अर दूजां री कूंट काढै। ईंरो तो उपाव अजै करणौ ई हो।

हाँ, आ सांची है कै रमत रमाणै सूं विद्यार्थी अबै म्हारै सागै खुल'र बातां करै, मनै कीं गिणै, म्हारै सूं डरै कोनी अर खेल्यां पछै घणौ ध्यान देय'र म्हारौ आदर्स वाचन सुणै। पण अजै खेल री बेळां अब्यौस्ता अर रौळा-रप्पा रै मांय थोड़ी-सी ई कमी आई है। खसूं तो घणौ ई हूँ पण हाल घणौ लाम्बौ मारग नापणौ बाकी पड़्यौ है।

वाचनालै में अजै पोथ्यां थोड़ी-सी है। हूँ अजै तांणी पाठ्यपुस्तकां री ठौड़ पुस्तकालै रचवा री बात मा-बापां रै गळै कोनी उतार सक्यौ। हूँ सोचै हो कै अेकर मा-बापां नै भासण देय'र समजास्यूं तो सै ठीक हूय ज्यासी। पण अठै तो मा-बापां री फगत इत्ती ई आदत पड़ी है कै 'पढ़ा द्यो'। दूजी बात सुणबा री न तो वांनै फुरसद है, अर न बांरा भेजा में बैठै। खैर, चिन्त्या नंई। अै सै काम लारै पड़्यां ई पार पड़सी। आज नंई तो काल, हाल घणां ई दिन पड़्या है म्हारै खंनै।

हूँ आगै सोच्यौः भई, सिक्षण रौ औ अखतरौ तो मोटौ म्हाभारत निवड़्यौ! जित्ती घणी आपणी कलपना, समजण अर आदर्स बित्ती ई गैरी वींरी ऊंडाई अर मोटी अमूजणी। मन में कित्ताई सवाल गुदौ देवै हा। साफ-सफाई नै लेय'र अजै तांणी कीं नंई हुयौ। टोप्यां बिंया ई पड़ी ही। दो-अेक दिनां तो पैरण रा गाबा चोखा दीस्या, पछै तो पाछी बा-री-बा रफत! नख फावड़ां री जियां बधण लाग्या। अै कामां रै लारै पड़्यां टाळ'र मारग कठै हो। समाज

मे नुंवी टेव बिगसाणै रौ काम घणौ धीजौ मांगै, पण सेवट बार-बार करत्या ई पार पड़ै।

चिन्त्या अेकला छोरां री ई स्तौ कोनी ही। बडा साब ई उंतावळा हूयग्या हा। क्यूंकै वांरा ई अफसर अर दुसमी हुवै ई है। बै जस रा भागी ई बणणा जावै अर नतीजौ ई बेगौ-बेगौ चावै। म्हारी मदत करणै री बांरी सगती ई मरजादा-मांय ही!

म्हारा भीडू सिक्षकां नै म्हारै मांय रत्ती भर भरोसौ कोनी। बै तो मनै सफा बावळौ ई गिणै। सायत हूँ थोड़ा-बोत हूँ ई! बियां तो हूँ अनभव-यायरौ ई हूँ, पण वांरी मान्यतावां अर भणाई री रीतां नै हूँ हाथ जोडूं! बांनै तो जोवतां ई डील में कंपकंपी छूटण ढूकज्यावै। ईं विच्चै तो हूँ करूं जिकै रौ दरजौ बांसूं सवायौ ऊंचो पड़ै। म्हारा विद्यार्थी मनै जोवतां ई भाग तो कोनी छूटै। बै मनै चावै, म्हारौ मांन राखै, कैयौ बोल उपाड़ै। जद कै आं सिक्षकां रा विद्यार्थी आंनै जोवतां ई भाग ज्यावै, लारै सूं आंरी कूंटां काढ़ै। अै सै हूँ म्हारी आंख्यां देखी है। अेक ई छोरौ इसी कोनी जिकौ सिक्षक रै खंनै जाय'र हेत सूं खड़्यौ हूय सकै, मुळक'र बातचीत कर सकै। बै वरग में तो मून धार'र बैठै, हिलणौ ई जाणै बिसर ज्यावै, पण बांडै निसरतां ई धीगामस्ती करै। ईं बाबत में हूँ म्हारा विद्यार्थ्यां ने वाजबी छूट देय राखी है। बै वरग मे जरा-सी गड़बड़ कर सकै पण बांडै आयां बीसूं बधारै गड़बड़ कदैई नई करै। पण म्हारा साथी सिक्षक इल्जाम लगावता कैवै कै हूँ छोरां नै बिगाड़ूं हूँ, बदमास बणाऊं हूँ, फगत काण्यां सुणाऊं हूँ, भणाऊं कोनी; खेल रमा-रमा'र बांनै आवारा बणाऊं हूँ। ठीक है भाईडां, देख्यौ जासी। म्हारै विचार सूं तो अै खेल अर अै काण्यां आधूंआध भणाई है, सिक्षण है।

इत्तौ होतां सातर मनै कदैई नंई भूलणौ चइजै कै म्हारौ काम दौरौ है, अघरौ है। इयां मान'र ई हूँ काम करतौ रैस्यूं।

वारा रा टणका बाज्या'र म्हारी विचारधारा टूटी। हूँ बोल्यौः 'हे भगवान! सेवट तौ सौक्यूंई थारै हात है', इया कैय'र म्हारी सगळी चिंतावा बी रै खौळै न्हाकी अर 'काल री बात काल देखस्यां' इयां निश्चै कर'र हूँ सूयग्यौ।



दूजौ खण्ड

अखतरा री गति-प्रगति

(१)

तीजौ मईनौ बैठौ। मनै लाग्यौ कै अबै रोजीना रा काम री खतावणी करातौ चालूं, जीसूं मनै ई ठा पड़ती रैवै कै अठवाड़ियैसर कित्तौ काम निवड़ै। ईरै सागै ई हूँ अेक मईना रा काम रो आलेख कर्‌यौ जणा मनै लाग्यौ कै नोंधपोथी री उपयोगिता है। नोंधपोथी लॉगबुक जिसी नंई, पण फगत दिसा-सूचक यादी रुपी ही।

काणी तो रोजीना चालती ही अर खेल ई खेलीजता हा। बीच-बीच रै मांय बातचीत, आदर्स वाचन अर सरीर री तपास ई चालती ही। वाचनालै ई होळै-होळै पगल्या धरतौ आगै बधतौ हो।

(२)

हूँ अभ्यासक्रम रा विषयां मे सूं लागू करणौ सरू कर्‌यौ। अेक दिन सुबै हूँ कैयौ: 'लिखौ डिक्टेशन।' छोरा म्हारै सांमी जोवण लाग्या। बै सायत सोची ई कोनी ही कै हूँ ई ढब रौ सिक्षक हूँ जिकौ श्रुतिलेख लिखासी, गृहकार्य देसी-लेसी, नकसौ पूछसी अर इसा-इसा ई काम करासी। अेक तरै सूं जोवां तो हूँ ई ढब रो हो ई कोनी। बै मनै इसौ जाण्यौ ई कोनी हो।

हूँ बोल्यौ: 'लिखौ।'

घणकरां खंनै पाटी-बरता ई कोनी हा। पाटी-बरतै रौ अर दूजी पोथ्यां रौ बारै काम ई कोनी पड़्‌यौ हो, जिकै सूं बै खाली हात आवा लाग्या हा। खंनलै वरग सूं हूँ पाट्यां-बरता मंगाया अर श्रुतिलेख लिखावण नै बैठौ।

कैयां मूंडो मचकोड़्‌यौ, कैयी बोल्या: 'माड़साब, काणी कोनी कैवौ?'

दूजौ छोरौ बोल्यौः 'पोथी तो भणाई कोनी, जणां डिक्टेशन कींरै मांय सूं लिखास्यौ।' अेकाद भळै बोल्याः 'पैली म्हानै बांच लेबा द्यौ, जिकौ गलत्यां नई होवै।'

मनै लाग्यौ:वा भई! अै सगळा तो जूनै ढंग-ढाळै री पढ़ाई मे उछर्‌योड़ा है। डिक्टेशन रौ बोदौ अरथ अै बरौबर जाणै है, जिकै सूं ई भिड़क रैया है। श्रुतिलेख आंनै सुवावै कोनी जणां ई तो पोथी मांय सूं आगूंच बांचणी चावै है।

हूँ पुस्तकालै आळी अेक पोथी सांभ'र लिखाबा मांड्यौ। हूँ अेक आखौ वाक्य बोलग्यौ। पण हूँ दोय-च्यार सबद बोलूं'र छोरा अड़दा-पड़दा सयद सुणतां ई लिखण ढूकै। आखौ वाक्य सुणैई कोनी। वै 'हे, हैं', 'कांई कैयौ', 'कांई बोल्या सा ' अेकै सागे पूछया लागै। हूँ बोल्यौ : 'देखौ, पैली हूँ थानै श्रुतिलेख लिखबा रौ गुर बताद्यूं। जद हूँ बोलूं तद थैं बरौबर म्हारै सांमी जोवौ, अर जिकौ बोलूं यौ बरौबर सुण-समज'र लिख द्यौ। भळै पाछा दूजौ वाक्य सुणबा नै म्हारै सांमी जोवौ।' ईं तरै हूँ बांनै लिखाबा लाग्यौ। पण वांरी जूनी-पुराणी बांण इयां कद छूटै। पछैस्तौ जद नुंवी आदत पड़गी तद बार-बार पूछणै री जरूत ईं कोनी रैयी। हूँ अेकर ई बोलतौ, दूजै बोलतौ ई कोनी।

डिक्टेशन लिखीजी अर पाट्यां नीचै धरीजी। जद तपास करी तो ठा पड़ी कै वांमें हिज्यां री चूकां हुवै, जुड़वां आखरां री बांनै गतागम कोनी, अर आखर ई अेक सरखा सौणा कोनी लिखीजै।

हूँ कोई रै ई गलत्यां कोनी काढी। सगळी पाट्यां देख'र पाछी अपड़ाय दी। सगळा कैवण ढूका : 'म्हारी गलत्यां कित्ती है? म्हारी कित्ती है? म्हारौ ऊंचौ लंबर, ईंरौ उतरतौ लंबर।'

अत्यार नै अेक छोरौ बोल्यौः अबै तो लिछमी शंकरजी ई आपां नै भणासी अर लंबर देसी.........अर मजौ आसी।'

हूँ कैयौ : 'हूँ अै धंधा करबाळौ कोनी। सई है। थांनै सगळां नै सई लिखणौ आवै है। काल फैरू लिखस्यां। इयां करतां-करतां थैं घणौ ई सौणौ लिखबा लागस्यौ। नित-हमेस लिख्यां तो लिखणौ आ ई सी! गलत्यां काढ़'र आपांनै करणौ ई कांई है?'

अेक जणौ कैयौः 'पण लम्बर अर पैलौ-दूजौ?'

हूँ बोल्यौः 'थै लोग म्हारै खंनै काणी सुणौ हो, बींरै मांय लम्बर अर

पैलै-दूजै री जरूत पड़ै?'

'नंई।'

'थैं खेल खेलौ हो, बींरै मांय कठैई लम्बर री जरूत रैवै?'

'नंई।'

'थारै मांय कैई डीगा अर ठींगणा है, बींरै मांय लम्बर अर पैले-दूजै री जरूत पड़ै?'

'नंई।'

'थांमें सूं कैई जाडा है अर कैई पतळा, बींमें कोई कदेई पैलै दूजै लम्बर माथै रैवै?

'नंई।'

'कोई पैसा आळौ है अर कोई गरीब है, ईं बात नै लेय'र थांनै पाठसाळा में कदेई लम्बर मिळै?'

'नंई।'

'अै बातां है, जणां आपणा वरग रै मांय आगै-लारै अर पैलै-दूजै जिसी बातां री जरूत ई कोनी। कविता आवै तो गावौ, नंई आवै तो बांचौ, याद करौ; रमणौ नंई आवै तो देख-देख'र सीखौ, आवै तो रमौ, मजा करौ। डिक्टेशन सई लिखै, आखर सौणा लिखै तो बींनै देख-देख'र दूजा ई सौणा अर सई लिखौ। हूँ कोई नै पूछू अर कोई नै याद नंई हुवै तो जिकै नै आवै बौ बता दैवै, नंईतर हूँ बताय देस्यूं। बस, इत्ती तो बात है।'

सगळा आंख्यां फाड़्यां जोवता रैया। बाँरै सारू जाणै अै अचूंबै री बातां ही। छेड़ै जातां हूँ कैयौ: 'आपां का वरग री तो बात ई न्यारी-निकेवळी है, अेक अळगी अर नुंवी बात है। अठै नुंवी तरै सूं काम हुवै, आ "आपणी किलास" है नी!'

"आपणी किलास", "आपणौ वरग" दोय-च्यार बार अै सबदां माथै हूँ जोर देय'र कांई बोल्यौ छोरां माथै ईंरौ ओपतौ रंग चढग्यौ। बै ई कैवण दूका: "आपणी किलास तो बेनामून है। आपणौ वरग मुतलब अेक नुंवी बात!'

श्रुतिलेख नै लेय'र हूँ अेक ई अठवाड़िया में कीं खास-खास सुधारा कर नाख्या। छोरां नै हूँ कैयौ कै रोजीना घरां सूं कोई न कोई पोथी में सूं च्यार लैणां जोय'र सई-सई लिख ल्यायां करौ। हूँ ई खुद बांनै रोजीना दस मिनट तांई श्रुतिलेख लिखाणौ चालू राख्यौ। बांसूं अेक-दूजा नै लिखाया अर

अेक-दूजा री गळत्यां काढण सारू पनरै मिनट राख्या हा।

जुड़वां आखरां नै सई-सुद्ध लिखाबा अर समजाबा सारू हूँ दौरा जुड़वां-आखरां री अेक चोपड़ी बणाई, जिकी में चौथी किलास रा सगळा जोडाक्षर भेळै हा। बा पोथी हूँ बारी-बारीसर बांचण नै अर पाटी माथै लिखण नै छोरां नै दी।

चौथी किलास में आबाळा दौरा सबदां री एक पानड़ी ई हूँ बणाया लाग्यौ अर वींरौ उपयोग कियां करणौ, ई माथै सोचबा लाग्यौ।

अबै म्हारौ काम कीं ढंगधड़ै सूं ठीकठाक चालबा लाग्यौ।

(३)

अेक दाड़ै खंनला कमरा रै मांय सूं अेक छोरा रै अरड़ावणै रौ रोळौ सुणीज्यौ : 'अरे बाप रे, मरग्यौ रे।'

म्हां लोगां रा कान खड़ा हूयग्या, क्यूंकै म्है तो काणी में मगन हा। छोरां रौ ध्यान जोरामरदी बठीनै चलैयग्यौ। हूँ काणी नै ढाबी अर छौरां कानी देख'र कैयौ: 'थां में सूं अेक बिद्यार्थी जाय'र देख्याओ कै कांई हुयौ? कुण रौवै है? क्यूं रौवै है?'

अेक हुंस्यार छोरौ देख्यायो, बोल्यौ: 'जी, वीं किलास में माड़साय जीवणलाल नै मार्‍यौ है।'

'क्यूं, भई।' हूँ पूछ्यौ।

'वींनै भूगोळ याद कोनी ही।'

'तो ई में मारबा री कांई बात ही।' हूँ भळै पूछ्यौ।

अेक छोरौ पडूतर देतौ बोल्यौ:'पाठ याद कर'र नंई ल्यासी जणांस्तौ मार ई पड़सी।'

हूँ कैयौ: 'पण पाठ नंई आवै जणां?' दूजौ छोरौ वींनै सारौ लगातौ बोल्यौ:'पाठ तौ याद हूणौ ई चइजै। याद नंई हूसी जणां माड़साय और करसी ई कांई? गदीड़ तो धरसी ई!

हूँ पूछ्यौ: 'पण कोई नै घोक्यां ई याद नंई आवै, जणां?'

वीजौ बोल्यौ:'तो ई माड़साय तो पक्कायत मारसी। वै भळै और करसी ई कांई? याद नहीं हूसी तो माड़साब मारसी, ठोकसी, गदीड़ धरसी!'

हूँ कैयो: 'चोखी बात है। पण योलौ थांरै मांयनै सूं मार खावा नै कुण-कुण त्यार है?'

सगळा बोल्या: 'नां! इयां तो कुटीजणौ कुण चावै?'

हूँ कैयौ: 'हूँ थांनै याद करवा नै देवूं अर थैं याद नंई कर'र आओ, जणां मनै थांनै मारणौ ई चइजै?'

'पण म्हे तो याद कर'र ई आस्यां।'

'थै बींनै घोकौ अर तो ई थांनै याद नंई रैवै जणां............?

'तो कांई हुयौ..............तो ई थैं म्हांनै नंई मारौ तो चोखी बात। मारयां तो लागसी ई! हां, म्हांनै याद नंई रैवै तो थैं भळै समजा दीज्यौ, म्हे घणां ई घोकस्यां।'

हूँ कैयौ: 'अछ्या भई! तो आपा पाछी काणी सरू करां!'

पण छोरा रौ जी बीं जीयणलाल में अटक्यौडौ हो। थै सगळा बोल्या: 'थै देख लीज्यौ माड़साब! जीवौ इत्तौ उस्ताद है कै यौ लारै सूं माड़साब नै गाळ्यां काढसी, भींत माथै वांरी तसवीर मांडसी अर सागै-सागै गाळ्यां लिखसी?'

हूँ कैयौ: 'जीवा नै इयां नंई करणौ चइजै। माड़साब रै सागै इसौ बैवार चोखौ कोनी लागै।'

सगळा कैवण ढूक्या: 'पण माड़साब ई तो बींनै कोजा मारै है!'

हूँ पूछ्यौ : 'ईंरौ कै उपाव है?'

छोरा बोल्या: 'उपाव तो ओ ई है कै माड़साब ईं नै ठोकै नंई।

हूँ भळै पूछ्यौ. 'जणां पाठ नै लेय'र कांई करणौ चइजै।'

छोरा पडूतर मे कैयौ: 'जिका पाठ याद कर'र नंई आवै बांनै साळा सूं बाडै काढ़ देणौ चइजै। कूट्यां कै लादै? कूट्यां ई बिद्या आवती हुवै, जणास्तौ टीगर रोजीना ई कुटीजै है नी?'

अेक जणौ बोल्यौ: 'अजी, जीवण नै पढ़णौ कोनी सुवावै। बींनै तो सुसियां अपड़बा रौ करड़ौ चस्कौ है अर बियां जिनावर हांकबा रौ बौ रसियौ है ई।'

दूजौ बोल्यौ: 'सिरीमान जी! जीवौ अठै ई तो कुटीजै है। बांडै तो यौ सगळां री फुडंतरी उडावै। म्हे तो सगळा ई बीसूं डरपां!'

हूँ पूछ्यौ : 'बौ कीं जात रौ है?'

छोरा बोल्या: 'जी, जात रौ कोली। बींरौ बाप सरकारी नोकर है।

वीं नै जोरामरदी भणावै? अेक माड़साब ई पढावा नै राख्यौड़ा है।'

हूँ कैयौः 'अछ्या छोड़ौ वात! हालौ, आपां काणी पूरी करां!'

काणी कैय'र म्हे उठ्या ई हा कै घंटौ बाज्यौ। मार-कूट अर वीं रै नतीजै माथै सोचतौ-सोचतौ हूँ घरै गयो। मनै तो मार-कूट करणी ई कोनी ही, जिकौ म्हारै मन में घणी ई निरांति ही।

इयां ई करतां-करतां थोड़ा दिन ओज्यूं बीतग्या।

(४)

अेक दिन हूँ ऊपर आळा साब खंनै गयौ अर वांनै कैयौः'साब, अेक इसौ हुकम काढौ कै जिकै सूं पाठसाळा मे आबाळा छोरां नै साफ-सुथरा गाबा पैर'र आणौ पड़ै। माथै टोपी राखणी हुवै तो बा मैली नंई हुवै। वाळ राखणा हुवै तो पट्टा वायोड़ा हुवै। हफ्तै री हफ्तै टायरां रा नख कटवावै अर बध्योड़ा हुवै तो वाळ ई कटवावै। कोट माथै पूरा बटण हूणा चइजै। अेकूं अेक बिद्यार्थी सिनान कर'र साळा आवै, कै पछै हात-पग तो धोयोड़ा हुवै ई।'

साब धीजै सूं सगळी बातां सुणी'र मुळक्या। कैयौः 'क्यूं भई, मा-बाप थांरी बात अणसुणी करै है कांई?'

हूँ कैयौः 'मा-बापां नै हूँ तो घणौ ई समजाऊं पर हियै उतरै जणां नी। चोखा-भला मालदार मा-बाप ई सुणै कोनी। कैवैः 'टाबरपणा में म्है ई इयां ई जाता हा पाठसाळा।...........रोजीना री रोजीना औ टामण कुण करै? थांरौ काम भणावणौ है भाई, थैं थांरै भणाओ नी! बाकी बातां म्है मत्तै ई देख लेस्यां।' हाल तांई साव चिन्योसौ सुधार हुयौ है, अर सांची पूछौ तो हूँ इसा बिद्यार्थी नै भणाणी ई कोनी चावूं।'

साब बोल्याः 'थांरौ कैणौ सौळाना सई है। आपां रौ जन समाज है ई इसौ। ईं नै सैंस्कारी बणाणै रौ मुतलब है अेडी रौ परसेवौ चोटी तांई पुगाणौ। फेरूं ई जद सूं भणाई रौ औ खातौ म्हारै हस्तै आयौ है तद सूं कैई माइतां माथै चोखौ असर हुयौ है।

हूँ कैयौः 'तो ई थै इसौ हुकम कोनी काढ़ सकौ?'

'भई, इसौ हुकम हूँ कोनी काढ़ सकूं। आ म्हारै हद-बारली बात है।'

'हद बारली? तद थैं इत्ता लूंठा खाता रा अैलकार कियां हुया?'

'भई, आ ठैरी नैंनी-सी रियासत। दूजी ठौड़ां ई अैलकारां नै इसा हुकम काढवा रौ हक हुवै कोनी।'

हूँ पूछ्यौ : 'जणां पछै?'

साब कैयौः 'मोटोड़ी सत्ता नै मचकावौ। बठै सूं ई इस्तक रा फरमांन जारी हूय सकै। पण इस्तक रा फरमांन लोगां पालैला कित्ताक? जद बै ई आपणौ हुकम नंई पाले जणां आपां करस्यां कांई?'

'बांरा टाबरां नै साळा सूं बांडै काढ़ देस्यां।'

'आ कोनी हूय सकै। इयां करस्यां तो च्यारूंमेर रामारौळौ ई मच ज्यासी।'

हूँ कैयौः 'जी, होबा में तो सै हूय सकै, पण सत्ता रै बिना हुंस्यारी कै काम री? सांची बूझौ तो म्है ठैस्था मास्टर, अर मास्टरां री जिनात ई कांई है?'

साब बोल्याः 'खैर, इयां ई समजल्यौ और धिकै जठै तोड़ी धिकावौ'

'नंई साब! आ कोनी हुवै। सेवट हूँ साळा रै मांय बणसी जिसी धरछूट कर'र रैस्यूं। टींगरां में जाणै जिसी टेव केळवस्यूं, आ उपरांत फुरसद मिळतां ई ईंनै लेय'र लोगां नै हचमचा देस्यूं? खरी बात तो आ है साब, कै लोगां नै चायै ईंसूं की लेणौ-देणौ नंई हुवै पण साळा रौ औ गंदगी रौ माहौल अलेखूं रोगां रै उछरणै रौ कायमी मुकाम है। ईंनै माटी भेळौ करणौ ई पड़सी।'

साब बोल्याः 'भलौ! थांनै सुवावौ बिया करौ। अखतरा करवा नै ई थैं आया हो, पण औ चौथौ मईनौ आयग्यौ है। देखौ, बगत भाज्यौ जावै है।'

नमस्कार कर'र हूँ घरै आयौ। घर रा खर्चा मे सूं हूँ दोय बढ़िया झाड़ू खरीद'र लायौ (कंटिंजेसी रै पैटै तो इत्ता पईसा कठै हा कै खरीद सकूं), अेक नैनो काच, कांगसियौ, खादी रौ अेक तौलियौ अर अेक नैनी-सी कतरणी खरीदी। भलौ समजौ कै साळा रै चौभीतै मांय नळकौ हो। बीं दिन हूँ वरग में आ सगळी त्यारी कर राखी ही।

हूँ छोरां नै लैणसर ऊभा राख्या। अभिमुख तो बै चोखी तरै हा ई। बानै म्हारै सूं हेत ई हो। बै जाणता हा कै हूँ जो क्यूं ई करूंला वांनै ई नफौ होसी।

हूँ काच में सगळां रा मूंडा दिखाया अर कैयौ: 'जोवौ, जिकां जिकां नै लागतौ हुवै कै बांरा मूंडा, आंख्या अर नाक-कान गंदा है, बै नळका माथै जाय'र धोयल्यौ। सागै ई हात-पग धोयल्यौ अर पट्टा ई आला करल्यौ।'

सुणतां ई बै तो दड़बड़-दड़बड ऊपरांथळी न्हाट्या अर हात-पग, मूंडौ धौबा लाग्या।

हूँ सोच्यौ: आं टींगरां नै आगै-लारै चालणौ अर क्रमवार काम करणौ बताणौ पड़सी। इयां लबड़-धबड़ काम तो आपणौ आखौ समाज करै ई है। इसी भूंडी'र फूड़ आदतां सूं आपां नै अै टाबरां नै उगारणौ चइजै।

तुरतौतुरत हूँ यठै जाय'र अेक लीटी खींच दी अर कैयौ: 'देखौ, सगळां ई लीक माथै ऊभा रैवौ अर बारी-बारीसर नळ माथै जावौ।'

हूँ खादी रौ तौलियौ लेय'र खड़्यौ रैयौ। अर छोरा बारीसर हात-पग, मूंडौ, माथौ पूंछवा लाग्या।

पाठसाळा रै चौभींतै मांय ई तरै रौ काम पैलीपोत हूय रैयौ हो। मारग बैंवता मिनख ई जोबा लागग्या कै निसाळ में भळै औ कांई हुवै है।

हाथ-मूंडा धोय'र सगळा किलास में गया। हूँ बांनै कांगसियौ देय'र सुवावै जियां ई पट्टा बावण नै कैयौ। टोप्यां अेक खुणा में संवट'र रखा दी ही। छोरा अबै फूटरा-फरा, सौणा अर साफ-सुथरा दीसै हा।

हूँ खड़िया माटी सूं वरग रै मांय गोळ घेरौ बणायौ अर सगळां नै बठै बिठाया। हूँ ई बठै बैठ्यौ अर बांनै कैयौ: 'अबै जोवौ, थांरा हात कित्ता साफ है? थांरा मूंडा कितना फूटरा लागै है? थांनै औ दाय आवै कै कोनी आवै?

सै बोल्या: 'जी, दाय आवै।'

हूँ कैयौ: 'जणां जोवौ, रोजीना पाठसाळा में आतां ई थैं औ काम निवेड़ लियां करौ, पछै आपां दूजौ काम करस्यां।'

बीं दिन मनै घणौ ई चोखौ लाग्यौ। जी सौरौ हूयग्यौ।

हूँ बोल्यौ: 'आओ आज आपां अेक कवित्या गावां।' हूँ जिकी पैली कवित्या बोली ही, बा अेक प्राथना ही। मत्तैई म्हारै मूंडै प्राथना निसरगी।

बीं दिन नख कोनी देख्या। गाबा अर बटण जोवण रौ काम ई याकी हो। तोई हूँ टाळग्यौ अर बीं दिन दूजौ काम उपाड़्यौ।

हूँ सोच्यौः इतिहास री भणाई रौ पायौ तो काणी सूं न्हाक्यौ हो, अबै कवित्या री भणाई रौ पायौ लोकगीत गा'र न्हाकूं! हूँ घणौ ई ऊंडौ सोच'र नक्की कर लियौ कै छव मईना तोड़ी हूँ नींव भरणै रौ काम करस्यूं, पछैआळा मईनां मे रीतसर भणतर री चिणाई करस्यूं।

बिद्यार्थ्यां नै जद ई तरै री कीं नुंवी चीज लाद ज्यावै तद हँसी-ठट्ठौ, मसखरी अर खिलकौ तो खरौ ई है। हूँ लोकगीतांऊं सरुआत करीः 'जोवौ, हूँ थांनै गीत गवास्यूं, सैं रळ'र गाइज्यौ।'

हूँ गीत उगेरयौः

'कानौ काळजियै री कोर
हेली, कानौ काळजियै री कोर।'

पण लारै कोई टेर झेल ई कोनी सक्यौ।

मनै अचूंबौ हुयौ। चौथे वरग रा विद्यार्थी इत्तौ ई कोनी गा सकै? पण गीत गाबा री यांरी आदत कठै ही। दूजौ गीत उगेरयौः

'म्हारौ है मोर, म्हारौ है मोर
मोतीड़ा चरंतौ म्हारौ है मोर।'

हमकली कीं सळवळ्या।

पण जद आखै वरग रा सगळा छोरा रळमिळ'र अेकै हेलै खरौ-खोटौ गाबा लाग्या तो पाठसाळा में रौळो गूंजबा लाग्यौ।

खंनली किलास रा सिक्सक आय'र बोल्या : 'भाई साब! बस करौ। कान पड्यौ कीं कोनी सुणीजै।'

अेक माड़साब कैयौः 'ई भाई नै तो राजीना कीं न कीं चौळकौ करबा ई सरै! अै म्हानै सौरै सांच सुख सूं पढ़ाबा ई देसी? अैनै कांई परवा? अैं रौ अखतरौ पार पड़ग्यौ जणांस्तौ साव म्हानै ई कैसीः ल्यौ थे इयां करौ, वियां करौ– अर जे अखतरौ पींदै बैठग्यौ तो अै आप रा डंड-कवंडळ लेय'र दूजी ठौड़ पूग ज्यासी!'

हैडमास्टरजी ई आयग्या। कैबा लाग्याः 'अजी लिछमी शंकरजी! आ कोई पौसाळ है कै चटसाळ, जिकौ थैं मारणी री जियां ई कवित्या गवा रैया हो? अै थांरा नुंवा अखतरा है? अै गीत छोरां रा बाप-दादा ई जाणै है!'

सै गया परा। हूँ सोच्यौ: कोजौ फंस्यौ भाया थूं! खैर, सगळां रौ भैळै
गाणौ तो टाड माथै न्हाकौ, फगत गाणौ सुणबा री बात ई अबार चालबा द्यौ।

हूँ छोरां नै कैयौ: 'ढबौ, हूँ गाऊं थैं सगळा सुणौ।'

हूँ 'नथ घड़ दे रे सोनारा, म्हारी नथ घड़ दे रे' गीत गायौ। म्हारी राग इसी ही, जाणै गधैड़ा नै ई मोय लेवै। पण भली जाणौ कै बेसुरौ कोनी हो, जिकै सूं गाणौ चाल्यौ तो सरी पण मनै ई लखावण लाग्यौ कै म्हारी राग सुरीली होती तो कांई कैणी! पण हूँ ढब सूं लटकां करतौ गायौ। बियां तो हूँ हाव-भाव सूं गाबा रौ अभ्यास कर्‌यौ हो, अर कैई छोरां नै दाय ई आयौ हो, पण तो ई कैई छोरा आळस मरोड़बा अर अेक-दूजा रा चाळा करबा लाग्या। चम्पकलाल बाडी आंख सूं म्हारी कूंट्यां काढतौ हो। आ बात म्हारै निजर बारै कोनी ही। तो ई हूँ बोल्यौ कोनी, क्यूंकै टींगरां री अै आदतां नै सुधारबा रौ काम ई हूँ म्हारै हात लेय राख्यौ हो।

जिका छोरा संगीत रा सौकीन नंई हा, हूँ बानै कैयौ: 'भई, थै लोग गाबाळां रा घेरा सूं थोड़ा टळ'र बैठौ। थैं पाटी माथै दावै ज्यूं लिखौ कै चित्र बणाऔ।'

हूँ दूजौ गाणौ गायौ। रस वद्यौ। पछै तीजौ उगेर्‌यौ। पण दूजौ गाणौ सैं नै दाय आयौ अर बै बार-बार गायौ। जियां-जियां म्है गाता रैया, रस बधतौ ई रैयौ। छोरां नै हूँ कैयौ: 'देखौ, थैं म्हारौ गाणौ फगत सुणीज्यौ, पण बोलीज्यौ मती। साळा रै चौभींतै तो हरगिज ई मती बोलीज्यौ।'

दोय दिन हुया'र छोरा 'नथ घड़ दे............' गीत गाबा लाग्या। पण म्हारौ सखत हुकम हो कै चौभींतै सूं बांडै गा सकौ।

गांवड़ा रा लोग बातां करबा लाग्या: 'अै गीत भळै कीं जात रा?'

भाणौ दरजी बोल्यौ: 'अै तो नौड़तै री भवाई में गाइजै जिका है।'

रुघौ बोल्यौ: 'जणां ओ मास्टर गरबा आलौ हूसी कै सिखाबा नै आयौ हूसी।'

छोरां री मांवां कैवण लागी: 'साळा मे लुगायां रा हरजस क्यांरै बास्तै गवावै?'

हूँ तो अै बातां माथै कान ई कोनी मांड्या। इयां सुण्यां कियां चालै? आपां नै तो जूझणौ ई चईजै, जणां ई तो नुंवा चइला मंडै!'

छोरा नितूकै नुंवी-नुंवी गीत-कवित्यावां गावा लाग्या अर हूँ वांरी मन

भांवती कवित्यावां नक्की करबा लाग्यौ। इयां करतां-करतां पांच-पनरै गीत तो धणखरां रै कंठा हूयग्या। हाँ, दोय-च्यार छोरा इसा ई हा, जिकां नै संगीत दाय कोनी आयौ। बीं बगत बै बांचता कै लिखता। हूँ ई बांरी घणी चिन्त्या कोनी करतौ।

बै ई दिनां हूँ म्हारै वरग रै मांय डांडिया रास रौ नाच दाखल करबा रौ मतौ कर लियौ हो।

ईं बगत म्हारै वरग में ईं मुजब काम चालै हो: काणी कैणौ, पोथ्यां बांचणौ, आदर्सवाचन, रमत अर खेल, श्रुतिलेख, गीत-कवित्या सुणाणौ, साफ-सफाई अर प्राथना।

(६)

अेक दिन म्हारी साळा में अेक परमहंस बाबाजी पधारया। बांरै साथै हैडमास्टरजी ई हा। बै बाबाजी री ओळखांण करातां थकां मनै कैयौ: 'अै म्हाराज नामी धर्मोपदेसक है। राज री सगळी साळावां में आंनै जाय'र धरम रौ उपदेस देबा री सुबिधा दिरीजी है। आज अै आपणा साब रौ कागद लेय'र अठै उपदेस सारू पधारया है।'

हूँ म्हाराज नै घणै मांन सूं परणाम करयौ, आसण दियौ अर कैयौ: 'अच्छ्या म्हाराज, आप आपरौ बखाण सरू करौ।'

टींगर तो म्हाराज री घुटैड़ी खोपड़ी अर मूंडै सांमी ताकै हा। म्हाराज री निबळी-दूबळी काया, पळपळातौ चैरौ-मोरौ, हात में कवंडळ टींगरा सारू कौतग री चीज-वस्त बणगी।

हूँ बिद्यार्थ्यां नै कैयौ: 'देखौ भायां! स्वामीजी म्हाराज उपदेस करसी, सगळा ध्यान सूं सांभळीज्यौ।'

अबै तो छोरा म्हारौ कैयौ समजबा लागग्या हा, बै स्यांति सूं बैठग्या।

स्वामीजी उपदेस करबा लाग्या: 'देखौ बिद्यार्थ्यां! ईं दुनिया में सै सूं लूंठौ है ईस्वर। बौ ई दुनिया घड़ी। बीं री वजै सूं ई आ दुनिया है। बौ आपणौ आद-कारण है।'

ईं तरै ईस्वर री मैमा चालण लागी। हूँ बोलौ-बोलौ बैठ्यौ हो। बिद्यार्थी स्यांत हा, पण होळै-होळै अस्थांति सळवळीजबा लागी। कोई आळस मरोड़बा

लाग्यौ।कोई पाटी माथै कांकरा सूं लीकट्यां अर मीड्यां बणाबा लाग्यौ, कोई पोथी ऊंची-नीची करबा लाग्यौ।कोई री आंख्यां की राती होबा लागी तो कोई आंगळी ऊंभी कर'र बांडै गयौ। अेक गयौ'र लारै-लारै दूजौ ई गयौ। दो-अेक छोरा बातां करबा लाग्या कै हूँ बांनै बोला रैबा री सेन करी अर बै चुप हूयग्या।

हूँ म्हाराज नै बिनती करतां कैयौः 'कीं सौरी बातां कैवौ, जिकी आँरै पल्लै पड़ै।'

बियां तो स्यामीजी सरल हा। कैतां ई बै तो हिन्दू धरम री, पोथ्यां री, बां मै लिख्यौड़ी बातां री चरचा सरू कर दी। तो ई छोरां नै बां री बातां मे मजौ कोनी आयौ।

हूँ सोचबा लाग्यौः धरम रा उपदेस कांई इयां ई दिरीजै? धरम रौ ततब, जिकौ घणौ अघरौ है अर जिकै नै जाणबा में आखी जिनगाणी खपा देणी पड़ै, कांई बीं नै ईं तरै सूं समजायौ जा सकै? कांई आ ई है धरम री सिक्ष्या अर धरम रौ ग्यांन! धरम री आ जाणकारी कठैई जीव-वायरौ खोळियौ तो कोनी?'

म्हारै मन में बिचारां री छोळां उछळै ही, अत्यार नै ई स्यामीजी सिलोक बोलबा लाग्या।छोरा मन मसोस'र जियां-तियां स्यामीजी नै सुणै हा। बातां बांरी समज सूं बारै ही, जिकौ बै खिलकारै चढ्यौड़ा इयां ई हूंकारौ देबा लाग्या।

स्यामीजीस्तौ सांच्याणी हिवड़ै सूं आपरी बातां बतांवता हा।बां रै लैखै औ काम घणौ जरूरी अर पवित्तर हो। बै तो बरौबर आपरौ धरम पालै हा पण छोरां रै लेखैस्तो औ भैंस आगै भागौत बांचणौ ई हो।

अबै स्यामीजी सिलोकां रौ म्यानौ समजाबा लाग्या। छोरां नै बौ सुणणौ ई पड़्यौ।पछै स्यामीजी पाटिया माथै चाक सूं अरथ लिख्यौ अर छोरां नै बीं री नकल काप्यां में टीपण रौ कैयौ। ईं रै पछै बै बोल्याः 'अै सिलोक थै झांझरकै बैगा ऊठ'र बांच्यां करौ, रात नै सूवौ जद ई बांच्यां करौ, थां रौ दिमाग, बळ, तेज बधैला!'

म्हारै वरग रा दस-दस, बारा-बारा बरसां रा बै टींगर। बां नै कांई पडी ही धरम री अर सिलोका री? पण तो ई बै सिलोक अर आं रौ अरथ काप्यां में उतारयौ।

म्हारा बिचार आगै बदवा लाग्या: धरम री सिक्ख्या सारू कांई अवै दूजी कोई ठौड़ बंची ई कोनी, कै अवै पाठसाळावां में दिरीज रैयी है? पैली मिन्दरां मे परबचन हुयां करता हा अर बीं रै मुजब ई घरां में मा-बाप बैवार करता हा। घरां रा बै आचार-विचार छोरां सारू धारमिक सिक्ख्या रा ई रूप हा। पण अवै कैस्तौ लोगों नै धारमिक परवचन सुणबा री फुरसद कोनी, कै बूडा-बडेरा सुण-सुण'र धापग्या कै कीं दूजी ई राफड़ है जिकै सूं औ काम पाठसाळावां रै धकै चढ्यौ है।

हूँ बिचारां में लामीज्यौड़ौ हो कै अत्यार नै छुट्टी री घंटी रणकी।

थाक्यौड़ा बिद्यार्थी स्यामीजी नै परणाम कर'र आप-आप रै घरै गया। हूँ स्यामीजी लारै रैया। हूँ कैयौ: 'म्हाराज! आज म्हारै घरै ई भिक्ख्या लेबा री मैर करौ।

म्है जीमण नै बैठ्या। बातां करतां-करतां धारमिक सिक्ख्या रौ सवाल पाछौ आयौ। म्हाराज बोल्या: देखौ भाई! आजकालै धरम जिसी चीज अलोप हूय रैयी है, जिकौ पैली सूं ई टाबरां में धारमिक सिक्ख्या रा सैंसकार घालणा चइजै।'

हूँ बोल्यौ: 'पण म्हाराज! औ काचा-कंवळा दिमाग ईस्वर, धरम, आतमा जियांकली दौरी बातां झेलसी कियां? पाठसाळा में आज परबचन करता थकां आप देख्यौ कोनी कै छोरां नै आप री बातां में दर मे ई रस कोनी हो। बै तो बापड़ा सभ्यता री खातर बोला-बोला बैठा रैया!'

स्यामीजी बोल्या: 'सई बात है। टाबरा नै तो रमणौ, खेलणौ, कूदणौ ई बालौ लागै। काणी केवौ तो बांनै दाय आवै। पण धरम री बातां बांनै परसन हुवै कै नंई हुवै, तो ई बांरै मुंडागै धरणी चइजै, बांनै कंठां कराणी चइजै।'

'पण स्यामीजी! धरम फगत मूंडै ई कोनी रैवै। धरम तो जागण है अर बौ हियै मे जागै जणां ई खरौ हुवै। आ भावना तो तद ई जागै जद कै मानखै नै ईंरी भूख लागै। ईंरी ई बगत आवै जणां पार पड़ै। म्हाराज! कांई थांनै इयां कोनी लागै के औ सगळी बातां छोरां माथै बेटैम रौ भारौ लादवा जिसी है?'

स्यामीजी चकारिया में पजग्या। हूँ भळै कैयौ: 'म्हाराज! धरम री बात सांची है। धरम मानखै री जिनगाणी सारू अेक न्याव है। मानखौ तिर'र

संसार-सागर रै वीं पार जाणी चावै। पण सांचाणी थांनै लागै कै औ काम दौरौ कोनी? अै बातां मामूली लोगां रै मगज सूं बांडै री बातां है। बै बठै तांई पूंचै ई कोनी। भळै ई रै सारू कित्ती ई आगूंच त्यारी री जरूत पड़ै, बा करणी ई चईजै।'

स्यामीजी बोल्या: 'हां, सई बात है, पण................।'

हूँ अधबीच मे ई बोलण लाग्यौ: 'धरम कोई साग-मूळा कै हाट बजार री चीज-बस्त कोनी हुवै। पोथ्यां में छप्योडी बातां ई धरम कोनी हुवै। आपनै आ बात मैसूस कोनी हुवै कै धरम जिसी मैताऊ बात नै घणीऊं घणी गूढ़ अर गुपत राखणी चईजै अर करड़ी हियाफोड़ मैनत कर्‌यां पछै ई आ साधक रै हात लागणी चईजै?'

स्यामीजी बोल्या: 'हाँ, जणां ई तो आपणां बडेरां नै गरू रै आस्रम में रैणौ पड़तौ हो अर धरम रा मरम नै समजबा सारू काया नै निचौय न्हाखणी पड़ती ही।'

हूँ कैयौ: 'पण आज तो म्हैं घरां-घरां अर साळावां-साळावां उपदेस देय'र लोगां नै धरम रौ ल्हावौ बांटबा नै निसरग्या हां।'

स्यामीजी बोल्या: 'भई! औ तो कळजुग है। आजकालै गरू खंनै कित्ताक जणा जावै है?'

हूँ कैयौ: 'नंई जावै तो पड़्या रैवौ। धरम नै इयां बेच्यांऊं कै भेट दियांऊं तो कोई धरमी बणबा सूं रैयौ।

स्यामीजी बोल्या: 'जणां थै ई बताओ, कांई करणौ चईजै?'

हूँ कैयौ: 'मनै लागै कै नाना-नाना टाबरां नै धरम रौ उपदेस नंई करणौ ई आछ्यौ है। बांनै तो ई वेळां निरोगी काया, तंदुरुस्त मन, निरमळ दिमाग, अर काम करवा री बेथाग ताकत चईजै। बांनै हर तरै सूं बळवान बणाणौ चईजै!'

स्यामीजी बोल्या: 'सई है, जिकौ बळवान हूसी बौ ई आतमा नै अपड़सी!'

हूँ कैयौ: 'हूँ तो आ बात अणूंती ई मानूं कै बगत आयां मानखै में जवानी अर बुढापा री जियां धरम-जिग्यासा ई खुदौ खुद फूट्यां करै। वेटैम रौ गिस्तास्रम जियां ओपरौ लागै बियां ई बगत-बायरी धरम-चरचा ओपरी लागै। धरम नै टाबरपणां सूं ई रोजीना री बातचीत रौ कै सिलोक बोलवा

रौ भाथौ वणायां तो उंदौ काम हूसी कै धरम री खरी जिग्यासा ई मोळी पड़ज्यासी। ठीक है, औ ई अेक जरूरी पासो है, पण ईं नै घणौ मैताऊ वणा देस्यां जणांस्तौ मानखै रौ विगसाव ई थम ज्यासी, यौ भाटै सरस्तौ वण ज्यासी।'

स्यामीजी वोल्या: 'थांरी यात सई है। हूँई इयां ई धारूं हूँ। इत्ता दिनां रै अनभव पछै हूँ ई मैसूस करूं हूँ कै रोजीना रै कूटणै-पीसणै सूं आंतो आयोड़ा छोरा रै ईं विसै में कांटा खुभण ढूकसी। मनै इयां लागै कै म्हानै दूजी ई रीत-भांत सूं टावरां नै धरम री सिक्ख्या देणी चईजै।'

हूँ कैयौ: 'माफ करीज्यौ स्यामीजी! म्हारो तो औ कैणौ है कै आपां नै धरम नै जीणै री कोसिस करणी चईजै। माईत कोसिस करै अर सिक्यक कोसिस करै। किलास री पोथ्यां में दूजी कथावां रै सागै ई धारमिक म्हापुरषां अर यां री यातां रळाणी चईजै। यगत आयां टावरां नै दूजी काण्यां री जियां पुराण अर उपनिसदां री काण्यां ई कैईज सकै है। जीं तरै इतियास-पुरषां री काण्यां कैईजै वियां ई टावरां नै धारमिक-पुरषां री काण्यां ई कैईज सकै है। इत्ता सैंस्कार कैवौ तो सैंस्कार अर आगूंच त्यारी कैवौ तो आगूंच त्यारी मोकळी है। याकी करमकांड अर सिलोक-पाठ, धरम सिक्यण अर धारमिक पोथ्यां रौ अभ्यास आपां आयाळा बगत रै सारू टाळ सकां हां।'

स्यामीजी बोल्या: 'जणां थै मनै कांई काम सूंपोला?'

हूँ कैयौ: 'टाबरां री भणाई रौ । आप ई म्हारी जियां पढ़ावा रौ काम सांभौ!'

स्यामीजी बोल्या: 'पण स्यामी बण र हूँ अबै सिक्यक रौ धंधौ सांभू?'

हूँ कैयौ: 'औ ई तो थांरौ काम है म्हाराज! टाबरां री पढ़ाई रौ काम आप लोग संभाळ लेस्यौ तो चोखा-भला सिक्यकां री कमी पूरी हूय ज्यासी अर खरौ काम हूसी।'

स्यामीजी हँसतां-हँसतां हात धोया।

वीं दिन सूं स्यामीजी सूं म्हारी ओळखांण घणी ई बदगी। आजकालै बै नुंवै सिक्यण रा म्हारा विचार बांच रैया है अर हूँ बा रै खंनै धरम-ग्रंथां रौ अभ्यास कर रैयौ हूँ।

बगत झपाटैबंध भाज्यौ जावतौ हो। बरस बीत्यां तोड़ी म्हारौ पाठ्यक्रम तो सैंपूरण हूणौ ई चईजै हो, अर बौ ई घणी चौखी हदभांत सफळता सागै। ईं रै उपरांत जे हूँ सरावणजोग सुधारा-बधारा कर'र बताऊं जणांस्तौ म्हारै अखतरा रौ कीं अरथ है।

हूँ सोच्यौ : 'अबै मनै इतियास सांभणी चईजै।'

हूँ इतियास री पोथ्यां जोई, पण मन धीज्यौ कोनी। अेक पोथी मे घटनावां गळत ही, दूजी में बोदी दीठ ही, तीजी में पईसा जीमबा री निजर ही, चौथी में शैली-दोस हो अर सैंसूं घणी बखांणीज्योड़ी पोथी बडोड़ा बास्तै तो ठीक ही, पण छोटा छोरां सारू सफा अटाळी ही।

हूँ सोच्यौः अैं पोथ्यांऊं तो काम कोनी चालै। जणां कांई करूं? काण्यां कैय'र इतिहास भणाऊं तो कियां रैसी?

काण्यां तो सैंनै भावै ही। पण आज तांई तो दूजै भांत री काण्यां कैयी ही, आधी सांची अर आधी कूड़ी कलपना री; गप्पां री अर अजब-गजब परस्यां री। इतियास री काण्यां में अै बातां कोनी आवै, छतां हूँ काणी सरू करी। लूखी-सूखी इतियास री हकीकतां नै सांधा दे-देय'र हूँ काणी कैयी। पण छोरा आकळ -बाकळ होबा लाग्याः

'सिरीमानजी, आ तो काणी कोनी!'

'जी, ईं तरै री काणी म्है कोनी सुणां।'

'जी, काल जिसी कैयी ही, बिसी कैवौ।'

'चालौ नी, रमया चालां।'

'जी, आपां तो गीत गास्यां।'

हूँ सोच्यौः अब की बार तो हूँ सफा निस्फळ रैयौ।

सगळा मनै च्यारूंमेर सूं घेर लियौ अर हौळैसीक म्हारौ हात खींच'र खेल रा मैदान में लेयग्या।

रात रा हूँ सोचबा लाग्यौः अै छोरां नै इतियास री आखी सचाई कैयां तो काम सरै कोनी। इतियास री सै हकीकतां सांपड़तै जोय'र आखर-आखर तो लिखै ई कुण है! सायत् काणी कैया सूं ई इतियास दिलचस्प बणै तो बण सकै। भळै काणी मे काणीपणौ तो होणौ ई चईजै। ईं वास्तै हूँ मूळ घटनावां

कै असवाड़ै-पसवाड़ै हूंवती कलपित घटनावां सजा'र इतियास पढ़ास्यूं, तो ठीक ई रैसी!

दूजै दिन हूँ काणी उपाड़ीः

'अेक मोटौ सारौ जंगळ हो। यठै भीलां री बस्ती ही। अजय डील-डौळ हो बांरौ। वै इसा तीरन्दाज हा कै उड़ता पंखीड़ां नै अचूक मार नाखता। वीं जंगळ रै मांय अेक झूंपड़ी ही। वगैरा-वगैरा।

विद्यार्थी काणी रा जादू में फंसग्या अर रस पीवा लाग्या। हूँ वनराज री काणी सरू करी ही, पण मूळ हकीकत रै आसै-पासै सांतरौ रंग सजायौ हो।

काणी अधूरी रैयी।

दूजै दिन छोरा दूजौ कीं काम करवा ई कोनी दियौ।

'बस, वनराज, वनराज, वनराज री काणी सुणाओ।' सगळा भेळै ई बोलबा लाग्या।

हूँ काणी पूरी करी। भळै डरतां-डरतां पूछ्यौः जिका दूजी बार काणी सुणणौ चावै वै खड़्या हुवै।

अेक-दोय नंई, पण सगळा ई खड़्या हूयग्या।

आगलै दिन या ई काणी। तीजै दिन, चौथे दिन, पांचवां दिन तांई बा ई चाली। छोरा मे सूं कोई रमबा रौ कै गीत गाबा रौ नांव ई कोनी लियौ।

हूँ ई जोवै हो कै बांरी मांगणी कठै तांई टिकै!

कोई ऊपरला साब रै खंनै जाय'र बांरा कान भर्या हूंसीः 'जी, अखतरौ कित्तौ सफळ-निस्फळ रैयौ ई बात रौ फैसलौ तो बगत आयां ई ठा पडसी अर वीं दिन थै सिक्षक नै कैस्यौ कै सिरीमानजी औ तो कीं कोनी हुयौ। पण आं छोरां रौ अैक बरस अळ्यौ जासी जिकै रौ कांई हूसी?'

वीं बात रौ मनै जरा-सौई अचूंबौ कोनी हो कै कोई सिक्षक इयां जाय'र कैय सकै। इसी बातां बणाणियां नै हूँ ओलखतौ हो। म्हारा विद्यार्थ्यां नै काण्यां सुणबा नै मिळै ही बर बै म्हारै सूं घणां ई राजी हा। दूजा सिक्षकां रा विद्यार्थी बां सूं राजी कोनी हा, क्यूंकै बां नै संतोष कोनी हो। बां नै चईजै ही काण्यां, भणबा में बां रौ जी कोनी लागै हो। बै किलास मे ऊधम मचांवता हा। ई बजै सूं वै सिक्षक म्हारै सामै खीजै हा।

हूँ या नै कैयां करतौः 'भाई लोगां! थै थारै मारग जाओ नी। म्हारौ

तो अखतरौ है। म्हारै हियै मांय हिंमत है। चिन्त्या तो मनै ई रैवै कै टाबरां री आ साल अळी नंई जावै। ई खातर ई हूँ इत्ती मैनत करूं हूँ। पण थांरी रीत थांरै खंनै है अर म्हारी म्हारै खनै। थांनै नंई सुवावै तो अठै सूं दूजै ठिकाणै म्हारौ वरग लेय ज्याऊं?'

अेक दिन ऊपरला साब म्हारौ वरग जौबा नै आय धमक्या। बियां तो भलेरा हा पण आखै वगत काणी रौ प्रयोग देख'र चिड़ग्या। बोल्याः 'भई! ई तरै अे छोरा इतियास कियां सीखसी? काणी सुणसी बठै तांई तो मजा लेसी, पछैस्तौ ई कान ऊं सुण'र बीं कान काढ़ देसी। जणां काई तो भणायौ अर कांई समज में आयौ?'

मनै ई वांरी बात कीं ठीक लागी। हूँ सोच्यौः 'सेवट काणी री खास बात तो छोरां नै याद रैणी ई चईजै, नंईतर बै इतियास री परीक्ष्या में पास कियां होसी।' म्हारै माथै परीक्ष्या रौ आंकस तो हो कोनी।

दूजै दिन हूँ अेक आजमायस करी। वरग में वनराज री काणी तीजी बार कईजै ही। हूँ बीं रै मांय फेरफार कर'र कैबा लाग्यौ। छोरांस्तौ झट देसी सी म्हारौ गळौ अपड़ लीनौ, बोल्याः 'जी, इयां कोनी हो। पैली तो थैं हजार घोड़ा बताया हा, अर अबै पचास ई कियां बता रैया हो? भळै, पैली तो नदी रै कांठै अेक झूंपड़ी बताई थी' बगैरा-बगैरा।

मनै लाग्यौ : काणी नै अै छोरा कस'र अपड़ी है। मनै हिंमत आई कै छोरा अबै भूलै तो कोनी।

पण म्हारी लूण-मिरचां बुरकायोड़ी काणी इतियास रा परीक्षक रै कांई काम री ही? हूँ सोच्यौः मनै अै सगळां नै परीक्षक री दूरबीन रे मांय लाणी चइजै।

म्हारी कैयोड़ी काण्यां हूँ लिख नाखी अर विद्यार्थ्यां नै बांचया नै सूंप दी। जठै-जठै बात टूंक में कैया जोगी लागी, बठै-बठै हूँ टूंक में लिख दी। केई-केई ठौड़ स्थळ अर काळ रै मामलै में हूँ थोड़ौ चौकस रैयौ। काणी री कैवत में अर लिखत में तो फरक रैवै ई है। ई फरक नै समज'र हूँ बीं तरै सूं ई काणी लिखी, अर छोरां नै काणी बांचबा मे घणौ ई मजौ आयौ। बै दूजी-तीजी बार काणी बांचता दीस्या।

अजै तांणी म्हारी हिंमत कोनी ही कै छोरां नै ई बाबत सवाल पूछस्यूं तो बै बरौबर सई जवाब दे सकसी।

अेक दिन हूँ काणी रा वंट खोल'र सूत्र रूप में लिख नाखी। अेक-अेक वाक्य रै मांय अेक-अेक घटना पोय दी अर छोरां नै फगत रूपरेखा लिख'र बांचवा नै दी।

यै तो बांचग्या। बांचतां-बांचतां यां नै सुण्यौड़ी आखी काणी जाणै याद आंवती लखाई। अवै हूँ अेक दिन हिंमत कर'र प्रश्नोत्तर विधि सूं विद्यार्थ्यां नै काणी री घटनावां पूछणो सरू कर्यो। म्हारा अचूंबा रो पार ई कोनी रैयौ जद हूँ यां नै फटाफट सवालां रा जवाब देतां जोया। अवै मनै पूरी खातरी ही कै बै परीक्ख्या में तो पास होसी ई, पण वां नै इतियास ई याद रैसी।

कीं दिन आडा नाख'र हूँ साब नै वरग में तेड़'र लायौ अर इतियास री परीक्ख्या लिराई। साब कैयौ :'ई रीत-भांत सूं ई दूजी किलासां में इतियास री पढ़ाई हूणी चइजै।'

अै सबदां सूं म्हारै हियै में निरांति हुई।

पण हाल घणौ कातणौ बाकी हो। चार मईना बीतग्या हा। जियां-जियां म्हारा काम में मनै फतै मिळै ही, वियां-वियां म्हारौ हौंसलौ बधै हो।



तीजौ खण्ड

छउ मईना पछै

(१)

सालीणा रिवाज रै परवांण ई वरस ई म्हारी पाठसाळा में कदसूं ई त्यारयां सरू हूयगी ही। डाइरेक्टर साब आयाळा हा। वै जद ई आता, पाठसाळा में पक्कायंत आता। पाठसाळा खांनी सूं वांरै सनमांन में अेक जलसौ हूंवतौ अर विद्यार्थ्यां वींरै मांय संवाद सुणाता, कवित्यावां गाता, कवायद करता अर मोटा साब चोखा काम करणियां विद्यार्थ्यां नै इनाम देता। दूजा छोरां नै ई कीं न कीं इनाम देता, अर वीं दिन आखी पाठसाळा नै मिठाई बंटती।

हैडमास्टरजी सगळी किलासां भैळी कर'र आपरै मुजब उम्दा गावणियां, चोखा संवाद बोलणियां अर तैजीब सूं पेस आवणियां नै छांटण आळा हा। म्हारै खंनै ई तरै रौ नोटिस आयौ हो, पण म्हारी किलास का छोरा बठै भैळा कोनी हुया। हैडमास्टरजी मनै ई री बजै पूछी, जणां हूं कैयौ: 'जी, म्हारै वरग रा विद्यार्थी ई रै मांय भाग कोनी लैय सकै।'

'क्यूं?'

'औ सै तो थैं फगत डाइरेक्टर साब ने राजी करवानै अर वाहवाई लूंटबानै कर रैया हो।'

'हाँ, पण औ तो आपणौ रिवाज है। ऊपर आळा साब री ई आई इंछा है।'

'हाँ, हूसी। पण हूं तो ई नै मानूं कोनी। हूं ईमें भाग कोनी लेऊं। म्हारै वरग रा विद्यार्थी ईरै मांय सामल कोनी हुवै।'

'जणां तो मनै आ बात साब नै बताणी पड़सी। थांरो सैयोग तो आगौ रैयो म्हारै काम में बाधा पुगावौ हो!'

'आप बांनै मजाऊं लिखो। हूँई बांनै ढंग सूं समजावा री कोसिस करस्यूं।'

'आछ्यौ जणां, इयां ई हूसी।'

वी जोस अर उकळाट में हैडमास्टरजी हातूंहात मनै लेय'र रिपोट लिख भेजी। जलसा रै वास्तै दूजा छोरा चुणीज्या। स्याम सुंदर अर भीमशंकर संस्क्रत रा सिलोक बोलण सारू; देवीसिंह अर खेमचन्द कवितया गाबा सारू; चम्पक, रमणीक, नेमीचन्द अर मगनलाल संवाद बोलण सारू; अर बाकी रा डीगा-ऊचा, मोटा-ताजा, फूटरा-फरा पांच-पनरा छोरा कवायद सारू चुणीज्या।

हूँ तो मन ई मन में कांपबा लाग्यौः स्याबास हैडमास्टर साब नै, स्याबास ई पाठसाळा नै, अर स्याबास सिक्पण री आज री रीत-नींत नै।........... चुणीज्योड़ा आं छोरां में सूं अेक ई इसौ कोनी हो, जिकै रौ आपरा विषय सूं कीं सरोकार हुवै। स्याम सुंदर अर भीमशंकर रा कंठ सुरीला हा, बामणा रा टाबर हूणै सूं घर रै मांय संस्क्रत रौ वातावरण हो, बस ईं बास्तै ई बै चुणीज्या हा। पण बांनै बापड़ा नै कित्तौ पचावै तो ई कीं याद कोनी रैवै। सिलोक घोकतां-घोकतां बापड़ा री ज्यांन निकळ ज्यासी। पण इयांकली हालत में और हुवै ई काई! हूँ दुखी होतौ-होतौ घरै गयौ। रोटी जीमतौ हो कै अत्यारनै बडा साब रौ कागद मिल्योः 'दफ्तर मे आय'र मिलौ, काम है की।'

हूँ तो जाणतौ ई हो कै काई काम हो। भगवान रौ नांव लेय'र साब रै दफ्तर पूग्यौ। साब रौ चैरौ रीस ऊं रातौ हो। भंवां तण्यौड़ी ही। सफाचट मूंछ्यां आळा होठ कीं फुरकै हा। घणा रीसाणा दीसै हा। मनै देख'र कैयौ' 'बैठौ।' पछै बोल्या- 'क्यूं भई, थांरी किलास रा छोरा जलसा में सामल क्यूं नंई होवै? बीं में कैई छोरा हुंस्यार अर फूटरा है।'

म्हारौ मन ठंडौ हो, पण मगज गरम हो, जिकौ हातूंहात जवाब फैंक्यौः 'तो कांई फूटरा अर हुस्यार छोरा दूजां रौ मनोरंजन करबानै है? दूजां सांमै नाच कूद'र पाठसाळा री झूटी वाहवाई बटौरबानै है?

म्हारौ उफणतौ पडूत्तर सुण'र बडा साब थोड़ा ठंडा पड़्या अर बोल्याः 'जणां? आ कोई नुवी बात है कांई? कित्ता बरसांऊ औ रिवाज चाल रैयौ है। जद डाइरेक्टर साब आवै जणा तो इयां हुवै ई है।'

'माफ करौ साब!' हूँ ई थोड़ौ नरम हूय'र कैयौ: 'इयांन भलैई हूंतौ रैयौ हुवै पण ई रिवाज नै भांगणौ पड़सी। औ तो सरासर दिखाऔ अर ढोग है, भळै डाइरेक्टर साब री आंख्यां में ई धूळ न्हाकणी है।'

'या कियां?'

'कियां कांई, साब नै आपां जिकौ की दिखास्यां वौ छोरां नै मारकूट अर घोका-घोका'र ई तो त्यार कराईजसी? जिकौ आपां भणावां हां वौ वींरौ सीदौ-साचौ नतीजौ अर फळ तो हुवै कोनी। कित्ता ई दिनां तोड़ी रिहर्सलां चालसी, जोरां सूं घोकणपट्टी चालसी जणां कठैई जा'र अै छोरां सिखायोडा तोतां री जियां बोलसी, जिकौ ई पड़दा लारै सूं यांनै मदत मिळसी जणां! छोरां रौ बगत अर बांरी सगती दोन्यू ई बरबाद हूसी, वै पढ़ाई में लारै रैय ज्यासी। ई काम सारू जिका छोरा चुणीज्या है, वै ईंरै लायक ई कोनी। यांनै तो कूट-पींद'र हकीमजी बणाणौ पड़सी।'

'पण ईं में धोका आळी बात किया हुई?'

'धोकौ इयां कै आपां साब रै हियै में दुकाणी चावां हां कै म्हारी पाठसाळा रा विद्यार्थी हुंस्यार है, फूटरा-फरा है, वांरौ काम सरावणजोग है। पण असल में म्हैं कांई हां अर कांई नंई जिकी आछी तरयां जाणां हां।

साब थोड़ी ताळ मूंगा बैठा विचारता रैया। हूं भळै कैयौ: 'जी, म्हैं तो ढोग करां ई हां, छोरां नै ई यी गैलै घाल रैयां हां। डाइरेक्टर साब ई राजी होया रौ डौळ करसी अर इनाम देता थकां कैसी: 'अै विद्यार्थी आप री बुद्धिमानी, ग्यांन, चातरी अर सळी रुचि री जिकी औळखांण कराई है, बीसूं मनै घोत खुसी हुई है। सांचाणी आंरै मांय सूं कैई टावर ई बात री खातरी अणावै है कै आगै जा'र अै आछा विदवान, आछा सैरी, अर आछा मिनख बणसी। हूँ आं नै म्हारै हियै सूं स्यावासी देवूं। आंरी प्रतभा नै विगसाबा नै ईनाम देय'र हूं बधावूं हूँ, ई बात रौ आज मनै घणौ-घणौ आणंद आय रैयौ है।' अै बातां कांई बांरै काळजै सूं निकळसी? कांई बै जाणै कोनी कै औ कार्यक्रम बांरी खुसामद सारू राखीज्यौ है? भळै इनाम लेवणियां छोरां नै घोकायौ नंई हुवै, खास मैनत सूं त्यार नंई करीज्यौ हुवै तो बियांई किसाक बिद्वान, सैरी अर मिनख है, जिकी आपां सगळा, आंरा मा-बाप अर सिक्षक चोखी तरया जाणा हां।'

साब बोल्या :'भई थै भण्यौड़ा तो हो, गुण्यौड़ा कोनी। बैवार री बातां—

हाल समजौ कोनी। थारै तो बात-बात में थांरा असूल आडा आय ज्यावै। पण म्हांनै तो चारूंघासी जोवणौ ई पड़ै।'

हूँ कैयौ: 'जी भलौ। तोई हूँ ईं रै मांय सामल कोनी होऊंला। क्यूंकै म्हारै सूं इसी धांधळी सैन कोनी हुवै।'

'जणां कांई करस्यो?'

'जणां म्हारै वरग नै ईं पंपाळ सूं मुगत करद्यो नी।'

'पण ईं में घणी भारी मुस्कल पड़ ज्यासी। दूजा मास्टर अर अैलकार मनै कांई कैसी? बींसूं म्हारी मुस्कल कित्ती वध ज्यासी! हूँ तो आ धारै हो कै थांरै वरग रा बिद्यार्थ्यां नै जोय'र डाइरेक्टर साब रौ जी सौरौ हूय ज्यासी। पण थैं तो.........?'

हूँ कैयौ: 'मनै तो आप ईंसूं अळगौ ई राखौ। डाइरेक्टर साब नै बतावण सारू हूँ कीं न कीं करस्यूं जरूर। पण करस्यूं इसौ कै बिद्यार्थ्यां रौ वगत बरबाद नंई हुवै, बांरौ जीवड़ौ तंग नंई हुवै अर दिखावा, ढोंग, धूतक ई करणा नंई पड़ै। आप बांनै म्हारी किलास में जरूर ल्याइज्यौ। मनै भरोसौ है कै म्हारै कार्यक्रम सूं पक्कायंत साब राजी हूसी।'

साब थोड़ी ताळ भळै सोचता रैया, पछै मुळक'र कैयौ: 'अच्छ्या, थै इयां करौ, हूँ थांरा हैडमास्टर रै नांव कागद देस्यूं कै आंनै जलसै रै काम सूं अळगा राखौ, पण निगै राख्या थैं बांनै चिड़ाइज्यौ मती। बै थोड़ा जूना जमाना रा मिनख है अर थैं हो नुंवी उमंग आळा नौजवान! मनै तो थां दोनां नै परोटणौ है अर थैं जाणौ ई हो कै औ काम कित्तौ दौरौ है!'

हूँ म्हारै मतै मन ई मन साब री कदर करतां थकां कैयौ: 'अच्छ्या साब, अबै हुकम हुवै।' इयां कैय'र हूँ बठै सूं टुरग्यौ।

साळा मे आज पूरै उछाव अर जोस सूं त्यारी हूंवती ही। 'साब आसी, मोटा साब आसी' चौफेर अैई सबद गूंजै हा!

मोटा अर नैंना अैलकार, गांव रा मानीता लोग, रैवासी, छोरां रा माइत, बिद्यार्थी अर सिक्षक सै हाजर हा। म्हारै साइना सिक्षकां री हालत निबळी ही। काळजौ धड़कै हो, मूंडौ पिलकौ हौ, तोई तण'र खड़्या हा अर आप-आप रा काम में लामीजियोड़ा हा। हैडमास्टरजी साळा रा सैतान छोरां नै अेकानी बुला'र कैयौ: 'देख लैया हरामखोरां! कठैई गड़बड़ करी है जणास्तौ काल चोखी तरयां धुणाई करद्यूंला, समज्या!'

ताळ्यां री गड़गड़ाट अर संगीत रा रळियांवणां सुरां रै सागै ई डाइरेक्टर साब साळा में पधार्‌या। हैडमास्टरजी बुलंद आवाज में लैजा सूं साळा री रिपोट पढ़ी, जाणै खातरी अणांवता हुवै कै रिपोट बांचता बै धूजै ई कोनी। ई बास्तै बीच-बीच में बै केई बार आपौ आप तण'र बांचबा लागता। पण रिपोट रै छेड़ै आवतां-आवतां बांरौ कुड़तौ आलौ दीसण लागग्यौ हो अर बांरी आवाज खरखरी हूयगी ही।

रिपोट बांच्यां पछै रेसिटेशन–कवित्या पाठ अर संवाद सरू हुया। छोरा इयां बोलै हा जाणै कोई ग्रामोफोन बोलतौ हुवै। बांरै चैरा माथै कीं तरै रा हाव-भाव नीं हा। बै जोर-जोर सूं हात-पग हिला'र बोलै हा। कवित्यावां सुंदर, सरस, ऊंचा कवियां री लिख्योड़ी ही, भावां सूं भर्‌यौड़ी, पण छोरा री समज सूं बारै ही, दौरी। बै बापड़ा समज्यां बिना ई बोलै हा, सागै-सागै हातां रा लटका ई करै हा, जीसूं ठा पड़ै कै बांनै कवित्या रौ रस आय रैयौ है। अैई डोळ संवाद रा हा। वांमैं उपदेसां री वातां ही। मोटौड़ां रै मूडै तो उपदेसां री बातां मत्तै ई ओप ज्यावै पण टाबरां रै मूंडै जाणै बै बाता लाजै ही। उपदेस रौ औ फार्स (नाटक) घणौ ई बेडोळौ अर बेहूदौ लागै हो। अेकलौ हूँ ई नंई ई बात नै खुद डाइरेक्टर साब मैसूस करै हा। बै मूंछ्यां मांय मुळकै हा। सिक्पक भाई थोड़ा अळगा हूय'र जोवता तो बांनै ई इयांई लागतौ।

मेळावड़ी पूरौ हुयौ। डाइरेक्टर सगळां नै स्याबासी देतां थकां आप रो हरख जतायौ। इनाम बैचीज्या। हैडमास्टरजी, बड़ा साब अर दूजा सै खुस दीसै हा। डाइरेक्टर साब सिस्टाचार रै नातै बोल्याः 'थांरी पाठसाळा रौ काम देख'र म्हारौ जी सौरो होयग्यौ।'

इत्तै में ई म्हारा बडा साब डाइरेक्टर साब सूं अरदास करीः 'म्हारी चौथी किलास रा अै मास्टरजी आपनै कीं काम बताणौ चावै। बीं पड़दा लारै अै कीं दिखावण जोग कार्यक्रम जमायौ है।

साब जोवण रौ उछाव दरसायौ। यै झट देणी-सी राजी हूयग्या। हूँ पड़दै लारै गयौ। तीजौ टंकोरौ बाज्यौ'र पड़दौ खुल्यौ। छोरां चिचाळै हूँ। सगळा रळ-मिळ'र अेक गीत नै प्राथना री तरयां गायौ, जिकै नै म्हे रोजीना बियांई गावता हा। आखौ कमरौ स्यांत। सै सोचबा लाग्या कै अेकाअेक औ नाटक कठैऊं आयग्यौ।

प्राथना पछै नैनो नाटक सरू हुयौ-'कचेड़ी में जाऊंला।' अेक छोरौ

ऊंदरौ वण्यौ। कड़्यां में डोरड़ी यांध'र पूंछड़ी वणाई ही। माथै काळौ कपड़ौ ओढ्यां हो अर च्यार पगां चालतौ चूं-चूं करै हो। अेक छोरौ दरजी, दूजौ कसीदा आळौ, तीजौ मोत्यां आळौ, चौथौ मिरदंग आळौ, पांचवों राजा अर छटौ सिपाई वण्यौ हो। हूं छटौ हो, राजा रौ सिपाई।

सगळा पात्र रोजीना आळा गाभां में ई हा। राजा टेवल माथै रौब सूं वैठौ हो। माथै याकी टोपी ही। सिपाई री ठौड़ हूं मूंछ्यां रै वंट देतौ यांनै तांण ली ही। फेंटौ तिरछौ यांध्यौ हो अर हाथ में ही छुरी। मिरदंग आळा रै खंनै मिरदंग ही अर दूजा रै खाली हात हा।

रंगमंच सादौ हो। पड़दै लारै योड माथै सगळौ कार्यक्रम लिख राख्यौ हो। कमरौ साफ हो, झड़कायोड़ौ। आंगणै में अेक दरी विछायोड़ी ही, जिकी अेक छोरा रै घरां सूं मंगाई ही। साळा में इसी कोई चीज-वस्त कोनी ही, जिकै सूं रंगमंच नै सजायौ जावै। तोई पीपळ अर नीमड़ै री डाळ्यां काट'र भींतां माथै लगायोड़ी ही। आंगणै में छोरां चाक सूं आपरी परसन रा चित्र वणाया हा।

ऊंदरै रौ नाटक रमीज्यौ। नाना-मोटा सै स्यांति सूं जोवै हा। छोरा घणौ मजौ ले'र जोवै हा, तो मोटोड़ा अचरज सूं जोवै हा: 'वा भई, औ किसौक नुंवों नाटक। आ तो नुंवी चीज है।'

म्हारै हिसाव सूं छोरां बोत वढिया नाटक खेल्यौ। वै कठैई कोनी भूल्या। लारै सूं वोलण सारू प्रोम्पटर री जरूत ई कोनी ही। कठैई गळती रौ अनेसौ हूतौ कै हूं सामौसाम वीनै सई कर देतौ।

दूजौ नाटक हो 'डीकरी रै घरां जाबा दे' अर तीजौ हो 'सुसिया भाई सांकळिया।'

अेक ई पड़दौ हो। सीन-सिनेरी कीं नंई। छोरा कदेई माथै कपड़ौ नाख लेता तो कदेई हात में कामड़ी अपड़ लेता। याकी री वातां तो वांरै हाव- भाव अर अभिनय माथै ई टिकैड़ी ही।

छेड़ै जातां प्राथना सूं कार्यक्रम पूरौ हुयौ। हूं पड़दै आगै आयौ। नाटक रा मैनेजर री जियां हूं वोल्यौ: 'मैरवान भाई-वेन! आप अवार म्हारा नुंवां नाट्य-प्रयोग स्यांति सूं जोया, ईरै खातर आपरौ घणौ उपकार मानां। ईं वारै में हूं आप सूं दो-अेक वातां अरज करणी चावूं। आप सुणवा री मैर कराओ।

अै चौथी किलास रा विद्यार्थी है। जद हूं आंनै पूछ्यौ कै ईं टाणै आपां

दोय-च्यार नाटक क्यूं नंई रम्मां, तो अै घणौ उछाव अर हरख दरसायौ। तुरतो तुरत नाटक परसन कर्‌या। जिकी काण्यां अै बांची-सुणी ही, बांनै नाटक रै रूप में अबार पेस कर्‌यौ हो। हूँ आंनै कैयौ हो कै जीं तरै हर अठवाड़ियै आपां बिना त्यारी रै नाटक रम्मां हां, बीं तरै ई आज-अबार करणौ है। म्हारी किलास मे नाटक घोकाइजै कोनी। छोरां नै काणी री सगळी बातां बरौबर याद रैवै। सगळा पात्र जाणै कै काणी में बांरो कित्तौ रोल है अर कांई कैणौ है। पछै तो रंगमंच माथै बै आपसरी में अेक-दूजा सूं संबंध बणा'र हियै सू मत्तै ई घड़'र संवाद बोल लैवै। कोई बाळक कदैई आपरौ संवाद घोक्यौ कोनी। सीन-सीनरी अर भेष यणाणौ नाटक रौ गौण अंग है, मैताऊ अंग है अभिनय अर भावां रौ दरसाव। म्हे ईंरै माथै घणौ बळ देवां हां। भेष अर गाबां माथै म्हैं घणौ जोर कोनी देवां, जिकै सूं अभिनय नै बिगसबा रौ पूरौ-पूरौ मौकौ मिल ज्यावै। अबार आप अठै जो-क्यूंई जोयौ है, बीसूं आपनै खातरी हुई हूसी। आंनै औ काम घणौ ई दाय आवै, क्यूंकै ईं काम नै अै काळजै सूं चावै। आंनै कदैई स्याबासी देवा री ई जरूत कोनी रैवै क्यूंकै अै चोखी तरयां काम करै अर बीसूं आंनै आपौआप संतोष मिळै।

आप पूरौ चित-मन लगा'र अै छोरां रो नाटक स्यांति सूं जोयौ, ई सारू भळै आप रौ उपकार मानूं।'

डाइरेक्टर साब रै चैरा माथै री खुसी हूं कदरौ ई जोवतौ हो। बै झट देणी खड़्या हुया अर बोल्याः

'आज दुपैरी में अै विद्यार्थी अर सिक्पक दोनूं रळ-मिळ'र जीं ढंग सूं म्हारौ मन मोयौ है, बींरै वास्तै आंरौ अभिनन्दन करूं हूं। आंरौ काम बोत ई सौणौ हो। मनै इयां लागै हो, जाणै हूँ म्हारी मायड़भौम इग्लैड में होऊं! अै नाना छोरां आपौ आप मायली फुरती सूं ऊंदरौ, दरजी, अर राजा रौ खेलौ रमता हा, नाटक रौ बौ दरसाब तौ सांचाणी अजब-गजब हो। आ ई तौ सांची सिक्ष्या है। रेसीटेशन अर संवाद घोकबा रौ जुग लदग्यौ। अै वातां हकीकत में क्रूर, बेहूदी अर काळजौ चूंटबा आळी है।'*

इत्तौ कैय'र बै थोड़ा थम्या अर भळै कैवा लाग्याः

* "I can not but congratulate both the teacher and the taught for the real treat they gave us this afternoon *It was splendid! I felt I was in a new school in my own country-England* I was really charming to see little kiddies playing mouse and tailor and king and so forth and so on, all spontaneous and free This is true education All recitation and cramming is a thing of the past Oh It's terrible demon! It's ugly, soulkilling "

'हूँ भळे कैणी चावूं कै आज रौ थांरौ काम देख'र म्हारौ घणौ जी सौरौ हुयौ है। हूँ आंनै इनाम कोनी देणी चावूं क्यूंकै नाटक रमती वेळां अैनै जिकौ अलूणौ आणंद आंवतौ हो, खरौ इनाम तो यौई है। सांचाणी आज हूँ घोत खुस हूँ।'*

मेळावड़ौ पूरौ हुयौ। सै आप-आप रै ठिकाणै जाय रैया हा।

वडा साव रै हरख रौ कोई पार नंई हो। वै मनै डाइरेक्टर साव खंनै वुलायौ अर म्हारी ओळखांण कराई। वै वांनै वतायौ कै हूँ भणाई रा नुंवा अखतरा कर रैयौ हूँ। साव म्हारै सूं हात मिलाया अर बोल्याः 'स्यावास! थै थांरै काम में सफल रैया हो। थांरा इसा अखतरा करयां राखौ। सांची भणाई आ ई है, और सै तो ढोंग है, गैरजरूरी है।'**

डाइरेक्टर साव रा अै वोल सुण'र वडा साव रै मन में कांई भाव उमड़ै हा, आ कुण जांण सकै।

हूँ घरै गयौ। सांचाणी आज हूँ आणंद मगन हो। साव म्हारै सूं हात मिलायौ अर स्यावसी दी ही, म्हारी खुशी री अेक वजै तो आ ही, पण ई सूं ई सवाई वजै आ ही कै आज म्हारा प्रयोग अर अखतरा री कीं कदर हुई ही। हूँ सोचै हो. साव ठैरया पोलिटिकिल अमलदार, आंनै ई नुंवी साळा अर ईंरै बाबत सै वातां री कांई खबर? पण मनै पछै जा'र ठा पड़ी कै बै तो आपरा टाबरां नै यूरोप री अेक नुंवी साळा में भणवानै भेज्यौ हो, जिकै सूं ई बांनै नुंवी तरै री भणाई सूं इत्तौ लगाव हो।

रात रा दोय- च्यार सिक्षक साथी मिलवानै आया हा। बै जाणणौ चावै हा कै डाइरेक्टर साब मनै कांई कैयौ'र कांई नंई। अत्यारनै बडा साब रौ कागद आयौ'र हूँ बांरै घरै चलेयग्यौ।

साब घोत राजी हा, क्यूंकै डाइरेक्टर साब साळा रै काम सूं घणा खुस होय'र गया हा। घरै जातांई साव मनै कुड़सी दी और खुद आराम कुड़सी माथै आडा हूंवतां बोल्याः 'पैली मनै आ बताऔ कै छोरां नाटक घोक्या हा कै नंई?'

---

* "I again say, I am very happy to see this I won't give them prizes. The genuine pleasure they felt while acting, is a greater and better reward than anything else I am very glad indeed, very very glad"

** "Bravo! You are success Go on with your experiments. This is some-thing! Rest is sham and bosh"

हूँ पूछ्यौ : 'थांनै कांई लाग्यौ?'

साब कैयौ: 'नंई! पण इत्ती सगळी बांनै याद कियां रैयौ? छोरा तौ घोत ही बढ़िया ढंग सूं बोलै हा।'

हूँ बोल्यौ: 'आ ई तौ बात है। हूँ बांनै काण्यां सुणाई ही, जिकी बांनै घणी दाय आई ही। काणी रै पात्रां सागै अर बांरा मन रा भावां सागै छोरा जाणै अेकैतार मैसूस करबा लागग्या हा।सांचाणी बै काणी री बातां नै हाडूहाड अपणाय ली ही अर नाटक करता थकां बै बांनै ई जाणै परगट करै हा।'

साय पूछ्यौ : 'पण हाव-भाव कैण सिखाया हा?'

हूँ बोल्यौ : 'हूँ तो कोई नै सिखायौ कोनी। म्है तो हर अठवाडियै नाटक खेल्यां करां हां। हूँ ई बारै मांय सामल हुयां करूं हूँ अर छोरास्तौ हुवै ई है। हूँ म्हारै पात्र नै हाव-भाव रै सागै परगट करूं हूँ अर छोरा आप-आपरै पात्र ने आपरै हियै सूं निकळ्योड़ा हाव-भावां सूं सैंजीवण करै है।'

साय पूछ्यौ: 'पण औ सै हुवै कियां है? आ तो म्हारै समज सूं बारै है!'

हूँ पडूत्तर देतो कैयौ: 'पण छोरां री आंख्यां तौ खुल्ली रैवै है नी! बै दरजी, खाती, कुमार, ऊंदरा सै जोवै अर बांरी बातां सुणै। काणी में बांरी जठै-जठै बातां आवै बांनै मींट मांड'र सुणै। फैर सांवरौ आंनै सोचण री अर कलपना करणै री सगती ई तूठी है, जिकै सूं अनभव अर कल्पना रौ सैळ-भेळ कर'र बै नाटक में हाव-भाव, लटका अर अभिनय करै। बांनै सूजै जियांई बै करै। बै मत्तै ई आपरी परीक्ष्या लैणिया है। बै मत्तेई जोय लैवै कै अनभव अर कलपना नै रळा'र रंगमंच माथै उतारीज सकै।'

साब बोल्या: 'अै तो भाइड़ा, बोत ऊंची'र दौरी बातां है।'

हूँ कैयौ: 'पण छोरा इत्ती बातां कठै समजै! औ तो हूँ थांनै जियां-जियां बै करै है बींनै न्यारौ-न्यारौ बता रैयौ हूँ।

साब बोल्या: 'ठीक है, समज्यौ। सांचाणी थैं तो आज कमाल कर दियौ। डाइरेक्टर साब बोत खुस हा।'

हूँ बोल्यौ: 'बै खुस नंई हूंता तो ई नाटक रौ म्हारौ काम तो इयांई चालतौ रैसी।'

साब भळै बोल्या: 'पण ई तरै रा प्रयोग री थैं मनै जाणकारी तो कदैई कोनी दी। हैडमास्टर अर दूजा मास्टरां नै सायत ईंरी ठा कोनी!

हूं कैयौ: 'सांची पूजौ तो हूंई कोई रै सामी आ यात करी कोनी, क्यूंकै यांरै हिसाब सूं तो अै रै फिजूल री चीजां है। वै आपरै छमाई इम्त्यान री त्यारी में लाग्यौड़ा है।'

साब इचरज सूं पूछ्यौ : 'पण यांनै ठाई कोनी पड़ी, आ किसीक बात?'

अबै हूं साब नै मांड'र बात बताई : 'जी, म्है सगळा हर अठवाड़ियै घूमवा-फिरवा जायां रां हां। बठै रम्मत आळी जियां रौ काम करां हां। हूं म्हारै साथै अेक चादर लैय ज्याऊं। वींरौ पड़दौ बण ज्यावै। दोय छोरा वींनै अपड़ लैवै। अेकानी नाटक रम्मणियां रैवै'र सामै जोवणियां।'

साब नै भळै इचरज हुयौ: 'सांच्याणी?'

हूं बोल्यौ: 'या ई तौ आपनै बताऊं हूं।'

साब कैयौ: 'वा जणां! अबै हूं आपणी साळा रा सै वरगां मे नाटक रौ कार्यक्रम दाखल करस्यूं। डाइरेक्टर साब नै तो आ वियां ई घणी दाय है। वाकई नाटक बोत उम्दा हो। आपां रेसीटेशंस री माथाफोड़ी नंई राखां तो?'

हूं कैयौ: 'हूं तो पोतीई फेर नाख्यौ। थै जियां ठीक समजौ।'

साब बोल्या: 'इयांई करस्यां। डाइरेक्टर साब ई कैता हा नी: 'खोज जावै ई घोकणपट्टी रो। मनै म्हारा बै दिन अजै याद है जद हूं घोक्यां करतौ हो।' पण हूं तो नानपणै में थोड़ौ दिमागदार हो जिकै सूं मनै अबखाई कोनी आई। पण दूजा छोरा घोक-घोक'र मर पूरा हौवता। सत्यानास जावै ई घोकाई रौ।'

हूं मन में हँसै हो। सोचै हो कै आज डाइरेक्टर साब कांई पधार्‌या, म्हारै अखतरा रौ औ तरजबौ घणौई भैताऊ निवड़्यौ।

हूं घरै गयौ अर सूयग्यौ।

(२)

छमाई इम्त्यान माथै हा। दूजा वरगां मे लारली पढ़ाई दुराइजै ही। इतियास, भूगोळ, गणित अर भासा री घोकाई पाछी सरू होयगी ही। अेकर तो बांरौ छमाई रौ पाठ्यक्रम पूरौ होयग्यौ हो। पण म्हारौ गाडौ तो अजै घणौ

ई लारै हो, अर इम्त्यान री दीठ सूं जोवां तो कोसां लारै हो। तो ई मनै म्हारा वरग री परीक्ष्या तो दिराणी ई ही।

मनै दुराबा में बगत कोनी गाळनो हो। बौ बगत तो म्हारौ पोतै बाकी ई बंचबाळौ हो। म्हारी किलास में ठेठ आखिर तांई भणाई रौ काम चालबाळौ हो, क्यूंकै छोरा दुराबा रौ काम मत्तै ई कर लेंवता। हूँ इसी योजना ई बणाई ही, जिकी सूं दुराबा रौ काम मत्तैई हूंवतौ रैवै। जियां कै अंताक्षरी री-रम्मत मे कवित्यावां पाछी-पाछी दुराबा रौ काम मत्तै ई होतो रैंवतौ।

पण हालघड़ी हूँ भूगोळ, पदार्थ पाठ अर ब्याकरण रै हात ई कोनी लगायौ हो। हूँ सोच्यौ, अबै ब्याकरण उपाड़णौ चईजै, क्यूंकै औ दौरौ विषय गिणीजै। छोरां नै ईंमें दिलचस्पी ई कोनी आवै। चौथी किलास रा छोरा नै भासा रा पदच्छेद रै मांय रस कियां आवै? ईं में रस रौ ततब किसौ है? ईं में बा किसी चीज-वस्त है जिकी बांनै मजौ तो अणांवै ई, पण सागै ही बांनै इसौ उपयोगी ग्यांन ई अणांवै, जिकौ बांरी जिनगी सारू काम रौ निवड़ै? इसी बा किसी ठौड़ है जठै विद्यार्थ्यां नै लागै के वा, आ तो घणी ई मजेदार चीज है, अणूंती काम री चीज है? इयां सोचतां-सोचतां ई हूँ ईं फैसला माथै पूगौ कै ब्याकरण री भणांई थोड़ी बड़ी उमर-रा टाबरां नै ई दिरीजणी जोईजै, जिकां नै भासा ई पढ़ाई मे दिलचस्पी पैदा हूयगी हुवै। ईं विषय नै तो प्राथमिक पाठसाळा तांई राखणौई नंई चईजै। ईं उमर रा टाबरां सारू जिकौ दौरौ विषय है, अर जिकै सूं बांनै भणाई मे अमूजौ आवै, इसौ विषय भणावां ई क्यूं? ग्यांन रा दूजा विषयां रौ कोई तौड़ौ आयग्यौ जिकौ इसा लूखा अर दौरा विषय भणावां?

पण मनै तो नुंवौ अखतरौ करणौ हो। कीं नंई तो म्हारी सरत मुजब इम्त्यान तांई मनै ब्याकरण विषय सौरी रीत-भांत सूं भणा'र दिखाणौ हो। तात्विक सौच री वजै सूं ई विषय नै बैवार मे म्हारा प्रयोग मेंसूं टाळ'र अळगौ कर नाखणौ चोखौ कोनी लागतौ। मनै तो आ बात साबत कर'र बताणी ही कै चौथी किलास रा टाबरां नैई चोखी तरयां ओ विषय भणायौ जा सकै।

हूँ अेकर भळै ब्याकरण रौ पाठ्यक्रम यांच्यौ अर तै कर्‌यौ कै पाठ्यक्रम में छाप्योड़ी लीक-लीक तो हूँ कोनी चाल सकूं। संग्या, सरयनांव अर क्रियापदां री परिभासावां छोरा बेगासीक घोक तो लैसी पण समज्यां विना वेगासीक भूल ई ज्यासी। जद मनै टाबर पणै में ब्याकरण भणाता हा, —

हूँ ई समज्यां बिना घोकतौ ई तो हो। सिक्षकां नै औ भरम हो कै छोरां नै याद है जणां तो अै समजिग्या। ई तरै री चालती रीत नै तो हूँ लांबा हात जोड़्या। अबै सवाल औ हो कै ब्याकरण भणाबा री नुंवी रीत कांई हुवै! हूँ सोच'र अेक योजना घड़ी, अर बींनै वरग में लागू करी। सांचाणी छोरा नै जबरौ मजौ आयौ। दोय मईनां रै मांय-मांय बै संग्या, सरबनांव, क्रिया अर अव्यय सबदां नै ओळखबा लाग्या। बांनै पूछां तो वाक्यां रे मांय सूं टाळ-टाळ'र बताबाई लाग्या। अेक बचन, बहुवचन, स्त्रीलिंग अर पुल्लिंग रौ ई आंटौ बांनै ढाळै पड़ग्यौ। हूँ कर्ता, कर्म नै ओळखबा री इसी कोई नुंवी जुगत भिड़ाबा मे लाग्यौड़ौ हो कै ई बिचाळै जद म्हारी किलास में छोरा ब्याकरण री रम्मत रमै हा, यीं टेम म्हारा बडा साब आय ढूक्या। बै टाबरां रौ काम जोय'र बगना हूयग्या। बूज्यौ :'क्यूं भई, छोरां नै तास क्यूं रमाऔ हो? छमाई इम्त्यान माथै आयग्यौ। झपाटौ मारौ। देख लैया, कठै ई नीचौ नीं देखणौ पड़ ज्यावै। थांरौ अखतरौ पार पड़नौई चईजै।'

हूँ मुळक'र कैयौ. 'ई बात री तो मनै ई अणूती चिन्त्या है। अै टींगर तो किलास में ब्याकरण री रम्मत रमै है। आप आंनै थोड़ा तपास'र तो देखो!'

बडा साब च्यार-पांचेक सवाल पूछ्या। पछै मनै कैयौः 'ओहो, औ तो बोत ई बढ़िया काम हुयौ। थांरी आ आखी योजना मनै ई बता दीज्यौ। थैं इत्ती दिलचस्पी सूं ब्याकरण सिखा रैया हो तो ई तरीकानै दूजै वरगां में ई दाखल करणौ चईजै। म्हारै घरै आइज्यौ अर अै सगळा साधनां सूं जियां थै भणा रैया हो, बै सगळी बातां मनै समजाइज्यौ।'

दूजा दिन म्हारी ब्याकरण पढ़ाणै री सगळी सामगरी लेय'र हूँ साब रै घरै गयौ अर बठै हूँ म्हारौ काम पैली सूं ई ई मुजब रजू कर्यौः

'साब! औ है म्हारौ पैलौ साधन। ई पूठा रै अेक बाजू नर अर दूजी बाजू नारी जात रा सबद लिख्यौड़ा है। माथै लिख्यौड़ौ है:स्त्रीलिंग अर पुल्लिंग। थैं जोवौला कै आं पूठां माथै नियमित नारी जात रा अर बां पूठां माथै अनियमित नारी जात रा सबद है। म्हारौ पैलौ काम औ हुवै कै अै पूठा छोरां नै बांचण सारु सूंपद्यूं हूँ। बै आंनै बांचै, खूब बांचै, सैरासै पूठा बांचै। ई तरै बांनै जात-जात रा सबदां री ओळख हूय ज्यावै। सैंऊं ऊपर लिख्यौ है नर जात, नारी जात। आंनै पढ़तां ई बांरै मन में सबदां रा लिंग रौ बिचार सळबळीजवा लागै। पण सरुपोत में तो बांनै लिंगवाची सबदां री ई जाणकारी हुवै।

इत्तौ काम कर्‌यां पछै हूँ अेक दिन छोरां नै पूछ्यौ:'बताऔ देखाणी, बळद री लुगाई कुण हुवै।?'

बै बोल्या:'गाय।' पछै बै मत्तै ई बताता गया:'सिंह री सिंहणी, छोरा री छोरी, बूडा री डोकरी, कुत्ता री कुतड़ी, मोर री ढेलड़ी।'

म्हारी आ योजना सफळ रैयी। ओळखांण कराबा सूं बांरै मन में बिचार जागबा लाग्या हा, अबै सबदां री ओळखांण सूं वांमें ग्यांन जागण लाग्यौ।

हूँ कैयौ:'आऔ अेक खेल रमां। हूँ नर जात लिखूं, थैं नारी जात लिखौ। हूँ पुल्लिंग रा सबद लिखबा लाग्यौ अर बै उछाव सूं स्त्रीलिंग रा सबद लिखण लाग्या। जांच'र देख्यौ तो गलत्यां बोत थोड़ी-सी निकळी। जरा-सा छोरां रै ई गलत्यां ही।

हूँ बोल्यौ:'जोवौ, थांनै अेक दूजी रमत रमाऊं। अै दोय पेट्यां पड़ी है। अेक पेटी में नर जात रा तो दूजी में नारी जात रा सबद है। करणौ औ है कै नर री नारी जात सोधौ अर नारी री नर जात सोधौ।'

कित्ती ई जेज तांई छोरा आ रम्मत रमता रैया।

साब पूछ्यौ :'पण पेटी तो अेक ही। सगळा बींरै मांय कियां रम्या?'

हूँ कैयौ: 'ईंरै वास्तै मनै अेक तरकीब काडणी पड़ी। किलास में दस अेकानी अर दस दूजै कांनी कुंडाळा बणाया। ई बाजू रा दस रै मांय नर सबद अर सांमली बाजू रा दस कुंडाळां में नारी जात रा सबद रख दिया हा। अेक-अेक कुंडाळा रै खंनै अेक-अेक छोरौ बैठ्यौ हो। आपरा कुंडाळा रौ सबद लेय'र बौ बींरी नारी के नर जात सोधबा नै जांवतौ अर जठै बींनै सई-सई मिल ज्यातौ बौ बांनै अेकै सागै रख देतौ। ई तरै सगळा कुंडाळा खंनै न्यारा-न्यारा नर-नारी रा जोड़ा भेळा हूय ज्याता। सगळा सबद खलास होतां ई रमत पाछी सरू हूय ज्याती। खेलणियां दोय जणां हूवता तौ बै अेक-अेक पेटी लेय'र नर री नारी जात अर नारी री नर जात सोध्यां करता।'

साब बोल्या:'समज्यौ! आ तो मजेदार तरकीब है भई। पण नपुंसक लिंग सारू थै कांई कर्‌यौ?'

'जी, स्त्रीलिंग-पुल्लिंग सबदां री आछी भली ओळखांण हुयां पछै हूँ बोर्ड माथै 'नपुंसक लिंग रा सबद' सिरैनांवौ मांड्यौ अर नीचै कीं सबद लिख्या:होल्डर, टेबल, दवात, डस्टर, बोर्ड वगैरा। छोरा वांनै बांच लिया अर

सोचदा लाग्या कै आंरी कै जात हूय सकै? जित्ती यांरी जाणकारी ही, वींरै मुजब यै लिंग तै कोनी कर सक्या। जणां हूँ यांनै बतायौ कै अै सगळा नपुंसकलिंग रा सबद है।'

अेक छोरौ पूछ्यौः 'पण नपुंसक रौ मुतलब?'

'जिका नर नंई हुवै अर नारी ई नंई हुवै, वै!' हूँ बोल्यौ।

छोरां रा चैरां माथै समज देखण में आई। हूँ झट देणी-सी बोल्यौः 'सबद लिखौ। तीन खाना पाड़ौ–अेक नर रौ, दूजौ नारी रौ, अर तीजौ नपुंसक रौ।'

हूँ साठ सबद लिखाया अर मनै अचूंबौ आवै कै घणकरा छोरां इक्की-दुक्की भूलां टाळ'र सई लिख्यौ हो। मनै लाग्यौ कै व्याकरण भणाया में जूनी रीत सूं व्याख्या अर परिभासा रै चक्कर में नंई पड़्यौ जिकौ ठीक ई रैयौ। ईं तरीकै सूं छोरां री दिलचस्पी बिसी री बिसी बणी रैई है। मनै समज में आई कै इसी दौरी बातां रमत री रीत सूं सरू कराणी चईजै अर होळै-होळै बांनै सास्त्रीय भासा री बोळखाण कराई जा सकै।

साब पूछ्यौः 'पण जे थै 'किसौ', 'किसी' जियांकला सवाल पूछ'र समजाता तो?

हूँ कैयौः 'जी, बौ तो ''पछै रूल ओफ द थंब'' ई हूंवतौ, खाली घोकाई! छोरां नै समज्यां बिना याद करणौ पड़तौ। अबै इत्तौ समजायां पछै तो मनोरंजन रै खातर 'किसौ', 'किसी' री रीत-भांत ई आपां बतां सकां हां।'

साब कैयौः 'अछ्या, आगै चालौ।'

हूँ बोल्यौः 'ईं रै पछै हूँ वरग रै मांय 'वचन' समजाया। अेक वचन अर बहुवचन ऊपर आळी रीत सूं ई समजाया।'

साब पूछ्यौ : 'अछ्या! ईं में रम्मतां रमाई?

हूँ बोल्यौः 'हाँ जी, अेक वचन आळौ बहुवचन नै सोध'र लावै अर जोड़ा बणावै।'

साब पूछ्यौ :'औ तो ठीक, अबै आ बताओ कै थैं संग्या अर क्रिया वगैरा कियां भणाया?'

हूँ बोल्यौः 'जोवौ, पैली हूँ क्रियापद सांभ्या। छोरां नै बांचणौ तो आवै ई है। हूँ बांनै कैयौ कै बोर्ड माथै लिखू बियां ई थानै करणौ है। लिख्या मुजब

क्रिया करणी है। हूँ क्रिया सबद लिखूंला अर थांनै क्रिया करणी है। जिका छोरा नै हूँ आंगळी दिखाऊं वौई क्रिया करैला।'

हूँ बोड माथै लिख्यौः 'उठौ, बैठौ, भागौ, सूवौ, रमौ, चालौ, नाचौ, बांचौ, बोलौ, हालौ, दौड़ौ, कूदौ, पड़ौ, हँसौ, गाऔ, वगैरा।'

आ सादी क्रिया करबा में छोरां नै घणींई मजौ आयौ। वै कैयौः 'भळै लिखौ।' हूँ ईं तरे रा सबद सोचतौ गयौ अर वै बांरै मुजब क्रिया करता गया। दूजै दिन हूँ अेक कारड माथै लिख्यौः 'कीं क्रियापद'– उठौ, बैठौ वगैरा। सै बांच्या–'कीं क्रियापद।' तीजै दिन हूँ अेक डब्बी ल्यायौ। वींरै माथै लिख्यौ हो-'क्रियापदां री डब्बी।' छोरा वींनै उठा'र वींरै मांय सूं नाचौ, कूदौ, भागौ, पड़ौ, हँसौ, सबद बांचता अर क्रिया करता। पछै हूँ बांनै कैयौ कै क्रियापद लिख'र ल्याऔ। वै लिख ल्याया।

हूँ भळै अेक रमत काढी। हूँ बांनै कैयौः 'जोवौ! हूं थांरै मांय सूं कोई नै कीं करबा सारू कैस्यूं, पछै वौ कांई करै जिकौ थांनै बोड माथै लिखणौ है। जगजीवण नै हूँ कैयौ : 'दौड़ौ।' बौ दौड़्यौ। हूँ छोरां नै पूछ्यौः 'बौ कांई करै है?' अेक जणौ बतायौ. 'बौ दौड़े है।' दूजां नै पूछ्यौः 'बौ कांई क्रिया करै है?' वौ कैयौः 'दौडै है।' पछै हूँ छोरां नै 'नाचौ, कूदौ, बांचौ, लिखौ' रा हुकम दिया अर दूजां नै वै कांई करै है जिकौ बोड माथै लिखबा नै कैयौ। तपास करयौ तो वै सई लिख्यौ हो। अलबत्ता, कोई-कोई समज्यौ कोनी हो। इक्की-दुक्की भूलां और ई ही।'

ईं तरयां ई हूँ बांनै आगै कैयौ : 'अबै थांमे सूं जिकौ जिसी क्रिया करै, वौ कांई करयौ है, बा थांनै बोड माथै लिखणौ है।

हूँ जगजीवण नै कैयौः 'दौड़ौ।' बौ दौड्यौ अर छोरा बियां ई लिख्यौः 'दौड़ौ।' औ खेल चालतौ रैयौ। हूँ छोरां नै आपसरी में रम्मत री छूट दी। घणै ई उछाव सूं वै रमबा लाग्या। सागै-सागै ई लिखबा लाग्या।

ईंरै पछै हूँ अेक दिन बांनै बैठायौ अर पूछ्यौ : 'जद राम भाजै है, जणां वौ भाजबा री क्रिया करै है नी?' बै कैयौ : 'हाँ।' 'जद स्याम सुंदर लिखै है, जणां वा किसी क्रिया है?' छोरा बोल्याः 'लिखणै री।' ईं तरै हूँ बांनै पूछतौ रैयौ। हूँ बांनै पूछ्यौ कै जद स्याम सुंदर भाजै है, जणां बौ किसी क्रिया करै है? छोरा बरोबर सई जवाब दियौ। ईं रै पछै हूँ बोड माथै लिख्यौः 'भाजै है, बोलै है, जावै है वगैरा सै क्रियापद है, अर क्रियापदां रै मांय आपां नै कीं

न कीं करणौ पड़े है।'

छोरा बांच्या अर हाँ भरी।

साव पूछ्यौ : 'पछै?'

'पछै हूँ अेक दूजी रमत ली कै थे जित्ता क्रियापद थांनै याद हुवै, बै लिख'र ल्याओ।' छोरास्तौ पिल पड़्या। जिकां नै जठै-जठै क्रियावाचक सबद लाधा, बै बठै सूं उठा लिया। आखी पाटी भर नाखी।

साव बोल्या : 'जणां?'

'हूँ भळै अेक रम्मत काढ़ी। बोड माथै वाक्य लिख्यौः रामजी भाजै है, चम्पक बांचै है। अर छोरां नै कैयौ कै अे वाक्यां रै मांय सूं क्रियापद तो राखचौ अर दूजा सै भिजाणचौ। सै छोरा बरौबर सई काम कस्यौ। बस बीं बगत हूँ क्रियापद भणाबा रौ काम रोक दियौ।'

साव बोल्याः 'मनै लागै है कै थांरी ई रीत-भांत सूं छोरां नै याद तो बरौबर रैवै पण ई मे बगत घणौ जावै अर रमत रमाणी पड़े।'

हूँ कैयौः 'रमत रमबा में तो छोरां ने घणौ ई मजौ आवै। आपां थोड़ा बगत बिगाड़ा अर बींरै मांय फळ सांतरौ आवै, पुख्ता आवै तौ हरज ई कांई है!'

साव बोल्याः 'औ तो समजग्यौ, पण संग्या रौ कांई कस्यौ?'

हूँ कैयौः 'संग्या रौ काम इयांन सरू कस्यौ। पैली तो हूँ म्हारी रीत रै मुजब कीं संग्या सबद लिख'र पूठा माथै टांग दिया। तरै-तरै रा नांव। छोरा मजा ले लेय'र बांच्या, बार-बार बाच्या। नांवां री पानड़ी में तरै-तरै रा रंग हा अर बांनै खास-खास फांटां में फांट दिया हा। बांनै बांचणौ सगळां सारू आणंददायी होयग्यौ हो। मनै सगळां नै ई तरै सिखाणी हो कै बांनै ठाई नंई पड़े। अबै बै क्रियापदां रा अर संग्यावां रा पूठां मांयसूं संग्यावां टाळबा लाग्या। ई तरै दोय धड़ां नै अळगा करणै री ओळखांण वधै ही। अेकर हूँ बांनै भेळै बैठा'र कैयौः 'जोवौ, अबै हूँ मंगास्यू। कांई मगास्यूं जिकी बात कोनी कैवूं। बस जिकौ नांव आळौ हुवै, जिकै रौ कीं नांव हुवै, बींनै थे लियावौ। जाय'र पूछौ–थांरौ कांई नांव? जे बींरौ नांव हुवै तो लियावौ।'

छोरा झट दैणी-सी समजग्या। बै भाज्या। बोड नै पूछ्यौ–थारो नांव? पछै खुद ई पडूतर दियौ- 'बोड'', 'तो चालौ। अर बोड आयग्यौ। ई तरै ई मेज आयगी। भाटा, धूळ, लकड़ी, कागद, पोथी, कलम, डब्बी बगैरा जिका

ई मिल्या, सै भैळा होया लाग्या। अेक टींगर तो खंनली किलास में सूं अेक छोरा नै उठा'र लियायौ। हूँ पूछ्यौ: 'औ कांई है, भई?' ल्याणियौ बोल्यौ: 'ईं रौ नांव है।' कोई पूछ्यौ: 'सूरज नै कियां ल्यावां?' कोई बोल्यौ: 'लीमड़ौ आइजै कोनी।' मनै खातरी हूयगी कै अबै आंनै संग्या रौ मुतलब समज मे आयग्यौ लागै।

वरग में आ रमत चालै ही, ईं बिचाळै हूँ सग्यावा री कतरणां पेटी भर'र लियायौ। माथै लिख्यौ हो– संग्या री पेटी। मांय नै सौ नांव हा। नाव ई नांव। छोरां री तौ अबै आदत पड़गी ही। पेटी खोल'र वै मुट्ठी-मुट्ठी कतरणां उठा'र लेयग्या। अेक जणौ पूछ्यौ : 'औ रातौ कीं चीज रौ नांव है?' हूँ बींनै सामौ पूछ्यौ: 'तो, ईं ललास नै थूँ कांई कैयसी?' टींगर मुळक'र चलैयग्यौ। पछै हूँ संग्यावां अर क्रियापदां री पेट्यां रळाया दी अर बांनै न्यारा-न्यारा टाळणै रौ काम सूंप्यौ। आ रमत बोत सांतरी रीत सूं चाली। बीं बगत संग्या अर क्रियापदां रौ आपरै मन में बैठेड़ौ ख्याल बै बोत ई आछी तरयां बता सकै हा।

पछै हूँ बांनै अेक दूजी रमत बताई–क्रियापद रै लायक संग्या औळखवा री अर संग्या रै लायक क्रियापद पिछणवा री। जियांन 'घोड़ौ' सबद लैय'र बै 'भाजे है,' कै 'नाट्यौ' सोध सकै हा, 'खावै है' लेय'र रामचन्दर कै स्याम कंवार सबद सोध सकै हा। हूँ बानै अै सै बाता समजाय दी, भळै सोधैड़ा सबदा रा जोड़ा वणा'र धरणौ ई बता दियौ। बांनै ईं काम में घणौ ई सवाद आयौ।

ईंरै पछै हूँ बोड माथै की वाक्य लिख्या अर छोरां नै कैयौ: 'आमे सू संग्यावां अर क्रियापद छांटौ अर पाटी माथै लिखौ। अै वाक्यां में संग्यावां दिखाऔ। संग्यावां नै भिजाण द्यौ अर क्रियापदां नै ई मिटा द्यौ।

हूँ भळै पूछ्यौ : 'औ कांई है? ईं नै कांई कैवै?' अर वै सै सई बता दिया।

ईं तरयां बांनै सग्या अर क्रियापद रौ पदच्छेद करणौ आयग्यौ।

साब बोल्या: 'आ तौ सातरी रीत है भणाणै री। छोरां नै दर में ई दौराई कोनी लागी हूसी। पण ईं काम रै मांय साधनां रौ कीं खरचौ पड़सी अर थांरै जिसी हियै री सूजना ई जोईजै।'

हूँ कैयौ: 'साब! छोरां नै घोकण पट्टी रा घरट में सूं बचावा नै इत्तौ

खरचौ तो करणौ ई पड़ै, ई में कांई वडी वात है।' औ खरचौ तो हूं म्हारै गूंज्या सूं करचौ है, पण जूना-पुराणा पूठा सोध'र पेटी वणाली।

भळै घर रै मांय कागदिया आडा-अंवळा इयां ई पड़्या लादग्या हा, जिकां सूं परच्यां कै कतरणां वणाली।'

साव वोल्या: 'हूं औ खरचौ थांनै दिराया री जुगत भिड़ास्यूं।'

हूँ कैयौ: 'खरचौ दिरावा री दौड़ जे थैं ई रीत-भांत नै कवूल कर'र चौफेरी लागू कर द्यौ तो म्हारै खरचौ भरपायौ।'

साव वोल्या: 'अछ्या भाई! देखस्यूं। ईंरै पछै थैं आगै कांई करचौ?'

हूँ कैयौ: 'ईंरै पछै साव, हूँ विशेषण सरू करचा। पण थैं उकताया तो कोनीक। क्यूंकै अेक तो व्याकरण जिसौ लूखौ विषय, भळै वात नै चोखी तरयां मांड'र कैया री म्हारी आदत!'

साव वोल्या: 'नंई थे थारै कैयां राखौ। हूं पूरी विगत जाणणी चावूं। विगत जाण्यां विनास्तौ सारी वात समज में ई कियां वैठै? अछ्या, थोड़ा ढवौ भाई, आ चाय आयगी। चा पी'र आगै चालस्यां।'

साव सौकीन तवीयत रा हा। उम्दा चा पीता हा अर म्हारौ ई निजू सौख जाणै हा। मस्ती सूं वीस मिनट चा पीणै में लाग्या पछै जोस रा लैरका सागै आगै टुरचा।

हूँ कैयौ: 'हूं म्हारै रिवाज परवांण छोरां रै सांमी विशेषणा री परच्यां राखी। परच्यां माथै विशेषण ई विशेषण हा। अबै वांनै सवाद आयौ जिकौ वांचवा लाग्या। अेक छोरौ पूछ्यौ–'माड़साव! विशेषण भळै कांई हुवै? ' हूँ वोल्यौ: 'जोवौ नी भाई! अै सै विशेषण है।' वै मन ई मन में समजता जावै हा। फेरूं पाछौ खेल सरू करचौ। वै संग्या, क्रियापद अर विशेषण री परच्या न्यारी-न्यारी टाळवा लाग्या।

पछै वांनै अेक नुंवी रमत वताई : 'जोवौ छोरां! हूँ थांसूं मंगास्यूं जिकौ थांनै लै'र आणौ है!'

हूँ वोल्यौ : 'पेन्सल ल्याओ।' अेक छोरौ पेन्सल लियायौ।

'राती पेन्सल ल्याओ!' वौ राती पेन्सल लियायौ।

'पीळी पेन्सल ल्याओ!' दूजौ छोरौ पीळी पेन्सल लियायौ।

हूँ वोल्यौ: 'पेन्सल ल्याओ।'

छोरा पूछ्यौ : 'किसी?'

'राती।' हूँ धकै बोलतौ ई रैयौः 'पीळी, लीली, गुलाबी, मोटी, नैनी.........' बै आप रै सुणता रैया अर ल्याता रैया।

हूँ नुंवौ पाठ सरू कर्‌यौ-'कोई अेक पेन्सल उठाऔ।'

अेक पेंसल उठाई।

'अबै खास लीली पेंसल उठाओ।'

लीली पेसल उठाई।

'अबै खास पीळी उठाऔ।'

पीळी उठाई।

'अबै खास लांबी उठाऔ।'

लाम्बी उठाई।

हूँ बोड माथै लिख्यौ : अै खास सबद– अै विशेषण कीं बतावै है, कीं विशेषता बतावै है।'

छोरां बाच्यौ अर बांरै कीं समज में आई हुवैला।

हूँ नांव अर विशेषणां री पेट्यां काढ़ी अर छोरां नै रमत बतायीः 'नांव रौ विशेषण सौधौ अर विशेषण रौ नांव सौधौ।' अेक छोरौ 'रातौ' सबद उठायौ अर नाव आळी पेटी में सूं 'घोड़ौ' सबद काढ्यौ। दोयांनै 'रातौ घोडौ' जोड़'र रख दीनो। पछैस्तौ विशेषण अर नांव रा ढिगलां में सूं जोड़्यां बणबा लागी। हूँस्तो बांनै जोवतौ हौ अर फिरतौ हौ। कोई-कोई जोड़ी गलत बणज्याती।

पछै हूँ म्हारी अळगी-अळगी रीतसर छोरां नै तपास लीना। बै विशेषण रौ अरथ मन में समजेड़ा हा, जिकौ झटदेणी सई नांव अर विशेषण काढ़े हा।

साब बोल्याः 'थैं तो मजा कर दीना। नांव, विशेषण अर क्रियापदां नै बढ़िया तरै सूं ओळखा दीना। अच्छ्या, ब्याख्या कराओला कै नंई?'

हूँ कैयोः 'ब्याख्या करवाय दी। पण ब्याकरण रै मांय दियोड़ी ब्याख्या हूँ नंई कराऊंला। भळै थांने परीक्ष्या रै मांय ई ब्याख्या नंई पूछणी जोइजै। थै पदच्छेद भलै ई पूछौ।'

साब बोल्याः 'मनै ईं विषै रौ इम्त्यान कोनी लेणौ। मनै तो पढ़ाणै रीआ रीत साळा में दाखल करणी है। छोरा ब्याकरण घोख-घोख'र गरगा।'

हूँ बोल्यौः 'साब! ब्याकरण सीखतां तो म्हारी कग्गर मोला री गोली ही। म्हानै नंई आतौ तो मास्टरजी गदीड़ धरता।'

साब बोल्याः 'अबारई किसा मारै कोनी?'

हूँ कैयौः 'जणां पछै थैं ईंनै बंद क्यूंनी करौ?'

साब बोल्या:'आ तो म्हारै हात में कोनी, वियां है वी! पण अबार म्हारौ मत.........जे आपां आछी तरयां भणावां तो मारणौ मत्तेई रुक सकै। जोऔ नी, थांनै व्याकरण सिखातां कोई नै मारणौ पड़्यौ? पण बताओ देखाणी, सरबनांव रौ थैं कांई कर्यौ?'

हूँ बोल्यौः 'ईंमें करणौ के हो! एक नानौ सो खेल करवायौ। हूँ वांनै समजायौ के 'हूँ कुण?' तो वै बोल्याः 'लिछमी शंकर।'

'अच्छ्या, तूं कुण?' श्याम बोल्यौ:'हूँ श्याम।' हूँ बूज्यौ :'यो कुण?'

अै सवाल हूँ बोड माथै लिख्याः

हूँ - लिछमी शंकर

तूं - श्याम

यो - धनसुख

म्है - लिछमी शंकर, श्याम, धनसुख

थैं - राम, लवकुश, विक्रम, देवराज

वै - भंवर, मूळचंद, बुलाकी, रूपसिंग

छोरा बांचबा लाग्या। हूँ कैयौः 'हूँ, तूं, वै, अै–सगळा नै सरबनांव कैईजै।'

अेक जणौ बूज्यौः 'साब, सरबनांव कीनै कैवां?'

हूँ बोल्यौ : 'थैई सोचो।'

दूजौ बोल्यौ : 'साब, म्हारौ मुतलब लवकुश, इयांई नी? लिछमी शंकर रौ मुतलब थैं, इयांई नी?'

तीजौ बोल्यौः 'जणां म्हारौ, थारौ – अै सगळा सरबनांव हुया कै नंई?'

हूँ बोल्यौः 'बिल्कुल।'

पांचवों बोल्यौ. 'पण सरबनांव कीनै कैवां?'

हूँ बोड माथै लिख्यौः

-राम रै हाथ मे पाटी है।

-राम रै हाथ मे पेन्सल है।

-राम बामण है।

-रान पढ़े है।

-राम रोजीना बेगौ आवै है।

-लिछमीशंकर थांरा मास्टर है।

-लिछमीशंकर थांनै पढावै है।

-लिछमीशंकर थांनै घुमाबा लेज्यावै है।

सगळा छोरां बांच लीना। हूँ तीजा वाक्य में 'राम' री ठौड़ 'वो' अर लिछमीशंकर री ठौड़ 'वै' लिख दीनो। बाचतांई छोरां रौ मगज चालवा लाग्यौ। हूँ पूछ्यौ : 'बोलौ, सरबनांव कीं ठिकाणै राखणौ?' कोई बोल्यौ 'राम' तो कोई बोल्यौ 'लिछमीशंकर'।

हूँ भळै पूछ्यौ : 'राम, लिछमीशंकर - अै नांव है कै सिरनांव है?'

'नांव।'

'जणां राम अर लिछमीशंकर जिसा नांवां री ठौड़ लिखा आवै वांनै कांई केवोला?'

'सरबनांव।'

साथ हँस्याः 'थै मास्टर तो पक्का हो। पूरी बात विगतवार खोल'र समजावौ हो।'

हूँ बोल्यौ : 'आ आदत तो अबै कियां मिटै? वकील होतौ तो दूंजा में ई सलाह देतौ।'

भांत सूं ई। हूँ अरज कर दीनी ही कै आखी साळा री परीक्ष्या हुयां पछै म्हारा वरग री हूणी चईजै। यीं वगत म्हारा वरग में सगळा सिक्षक अर हैडमास्टर साय हाजर रैवै। म्हारी आ अरज ई ही, कै म्हारा वरग की परीक्ष्या रै टाणै अेक-अेक वरग सूं पांच-पांच छोरा वठै वैठै।

परीक्ष्या रै दिन म्हारै मन में स्यांति ही। काळजौ धड़कै कोनी हो। मन में पास-नापास रौ ई सवाल कोनी हो। म्हारै अनभव रै परवांण चिंत्या री कोई वजै कोनी ही। बिद्यार्थ्यां नै कैयोड़ी ई ही कै, 'आपां रोजीना जिकौ काम करां हां, योई आज करणौ है। परीक्ष्या में तो सै पास ई है। आज तो आपांरौ काम जोवण सारू सगळां नै नूंतौ दियौ है।'

म्हारी नाटकी रीत मुजब हूँ पड़दै रै लारै सौक्युंई सजा राख्यौ हो। आगै आळा भाग में सगळां नै यैठायां पछै हूँ पड़दौ खोल्यौ। बठै हाजर राख्योड़ा बिद्यार्थ्यां री मंडळ्यां ही। हरेक मंडळी नै म्हारा वरग रौ अेक-अेक बिद्यार्थी काणी कैवै हौ। काणी रौ काम बारी-बारी सर चाल्यौ। हरेक बिद्यार्थी आपरी काणी खुद ई छांटी ही। काणी भूल नंई ज्यावै ईं सारू जोवण नै पोथी खंनै राखी ही। बो आपरै ढंग सूं मनपसंद काणी बिद्यार्थ्यां नै कैवै हौ अर सुणणियां रै सागै खुद ई कैणै रौ मजौ लूटै हौ। बींनै काणी कैणौ आवै हौ। ठस्कै-ठावकै सूं भाव-अरथ समज'र बौ काणी कैवै हौ। सुणबाळा बरौबर सुण रैया हा। काणी पूरी हुई। सगळा सिक्षक अेक-दूजे कानी जोवै हा। हूँ बोल्यौ : 'आ म्हारी अेक परीक्ष्या है।'

अेक सिक्षक दूजा रै कांन में कैयौः 'क्यांरी?'

हूँ सुण लीनौ'र योल्यौः 'भासा माथै काबू री, काणी कैणै री कला री, याददास्त रै बिकास री, अभिनय री।'

सगळा सिक्षक दूजी परीक्ष्या नै अडीकै हा।

पड़दौ पाछौ खुल्यौ। सगळा बिद्यार्थी गोळाकार यैठा हा। बोड माथै लिख्योड़ौ हौः 'अंतकड़ी री रमत।'

अेक बिद्यार्थी अेक कवित्या बोली। आगै आळौ बींरा छेड़ला आखर सूं दूजी कवित्या गाई। ईं तरै आखौ वरतुळ पूरौ हुयौ। अेकर भळै अंतकड़ी चाली।

बडा साब पूछ्यौ : 'सांमैसांमी क्यूं नंई बिठाया? ईं सारू तो दोय मंडळ्यां होणी चईजै नी?

हूँ बोल्यौः 'नंई, बीं चीज नै हूँ बांडै काढ़ी परी। बींमें हारजीत आज्यावै। बीसूं होडाहोडी अर ईष्या जळमै। ईं तरीका रै मांय अेक जणां नै नंई आवै तो दूजौ मतैई कवित्या बोलबा लागै अर काम बरौबर आगे बधतौ रैवे। अेकर कोई नै याद नंई आवै तो बौ दूजै आपरी बारी आयां बोल सकै।'

वडा साब डाडी खुजाई'र आंख्यां मिचमिचाई।

छोरां नै बिठाया तो हा थोड़ीवार रमबा नै, पण बांनै इत्तौ मजौ आयौ कै घंटड़ी वजायां ई ऊठणौ कोनी चावै हा। बांनै थोड़ी देर भळै देय'र हूँ पड़दौ नाख्यौ। पड़दै सूं बारै आय'र हूँ कैयौ :'आप जोयौ हुवैला कै आंरी पोथ्यां री कित्ती सारी कवितावां आंनै बरौबर याद है। कवित्या रा वरग में आ रम्मत रोजीना चालै है।'

साब बोल्या : "Hear, Hear! बोत अच्छ्या, बोत अच्छ्या!'

पाछौ पड़दौ उघड़्यौ। गोळाकार बैठ्या बै आपसरी में आड्यां'र पाळ्यां पूछै हा। जबरौ उछाव हौ।

बडा साबः'ओहो, अै तो आड्यां'र पाळ्यां है। नैनपणा में सुणी ही, पण अभ्यासक्रम में अै कठै है?'

हूँ बोल्यौः 'जी अभ्यासक्रम रै मांय भासा री भणाई है नी? बींरै मांय छोरां री जिग्यास, विकास अर ग्यांन रो बधापो तो रैवै ई है। भळै ईं रमत रै लारै तो छोरा बावळा है। कित्ती सारी आड्यां आवै है आंनै! अेक-अेक आडी कित्ती मैताऊ है! आज अै अभ्यासक्रम रै मांय नंई है, पण हूँ आंनै सामल करी है। हूँ धारूं हूँ कै आंवतै वरस आप आंनै अभ्यासक्रम रै मांय ई सामल करौला।'

बींरै पछै म्हैं सबदां री रमत चलाई। अेक सबद बोलै बींरै छेड़लै आखर माथै दूजौ सबद बोलीजै; बींरै छोड़लै आखर माथै तीजौ सबद बोलीजै। बियां तो आ रमत सौरी ही, पण जद ठा पड़ी कै कोई बिद्यार्थी गांवां रा, कोई नद्यां रा, कोई डूंगरा'रा, कोई मुसलमानां रा, कोई हिन्दुआं रा, कोई जात्यां रा, कोई बामणां रा तो कोई बाण्यां रा नांव बोलण रौ आपसरी में तै कर राख्यौ हो, जणांस्तौ सगळां नै भारी मजौ आयौ।

हूँ म्हारा सिक्षक भायां नै कैयौः 'ईं रमत सारू घणां घणां सबद भेळा करै, ईं वास्तै छोरां नै कैयो हो कै थै नक्सा अर सबदकोष जिसी पोथ्यां

आंख्यां बारै काढता रैईज्यौ जिकै सूं थारै हाथां में घणां सारा सबद रैसी। घणीवार छोरा रमत रमणै री ठौड़ जात-जात रा सबद--जुदा-जुदा वरग रा सबद भेळा करणै में घणौ वगत लगा देवै। बै अेक दूजां नै सबद सुणावै, अर केई-केई तो सबद लिख लैवै।'

बडा साब बोल्या: ई रमत में घणी तंत लखावै। ई तरै री रमतां सूं बुद्धि री सगती अर हर तरै रौ ग्यांन बधै, ई वास्तै आंनै हरेक वरग में जरूर सामल कर लेणौ चईजे।'

अेक सिक्षक साब नै नंई सुणीजे ई तरै सूं दूजा सिक्षक नै कैयौ: 'अै सिरीमानजी ई तरै रा धंधा करबानै ई तो अठै आया है। आंनै भणाणौ थोडौ ई है। अै तो मजा करया आया है। आपांरी तो पढ़ातां-पढ़ातां खोपरी पक ज्यावै अर अठीनै खेल रै सिवा और है कांई?'

दूजौ बोल्यौ: 'अबै जूनी भणाई री ठौड़ औ नुंवी भणाई रौ जमानौ आयौ है। बै दिनड़ा गया कै जद फटाफट मुंडै याद रैवतौ - 'ग्रन्थ गांठे अर बिद्या पाठे'। अबै तो भणाई रै नांव माथै अै रमतां-गमतांई रैयगी। आगै कै ठा कै होसी। अबै पढाई में तो कोई रो ई मन कोनी। खेल खेलाऔ तो सगळा नै चोखौ लागै।'

म्हारौ ध्यान म्हारा बिद्यार्थ्यां रौ काम दिखाबा में हो, जिकै सूं ऊपर आळी बाताचीतां कोनी सुण सक्यौ। आ तो लारै सूं मनै कोई बताई ही।

हूँ सीटी बजाई अर सगळा छोरा हाथ में बुवारी लेय'र लेणबंध खड़्या हूयग्या। बांनै हूँ बुवारी सागै कसरत करवाई। पछै हूँ बांनै च्यारूंमेर बुवारबा रौ हुकम दियौ। बै आखी साळा में घूम्याया। जठैई कचरौ दीस्यौ कै झाडू मार दी, अर कचरौ भेळौ कर'र तगारी म्हारै सांमी हाजर कर दी।

बडा साब अर सिक्षक भाई आ धांधळ जोवै हा। आ म्हारा वरग रा बिद्यार्थ्यां री परीक्ष्या ही। बडा साब पूछ्यौ: 'बुवारी साथै ड्रिल क्यूं कराई? कीं समज में कोनी आई?'

हूँ बोल्यौ: 'आजकालै तो देस में गंदगी री ई बोलबाला है। जठै तांई ईंरौ राज रैवेला बठै तांई देस री दुरदसा ई दीसै। ई वास्तै हूँ तो पैली लड़त ईसूं ई मांडी है। गंदगी दूर करबा रै वास्तै रीतसर लड़ाई मांडणी जोईजै। बुवारी री ड्रिल तो फगत संकेत-रूपी है। आं छोरां रौ पैलौ सबक आ बुवारी-ड्रिल है। जठै तांई ओरड़ौ पूरौ साफ नंई हुवै बठै तांई म्हैं कीं काम नीं करां।

अबै तो छोरां नै ई गंदगी को सुवावै नी।'

बात चालै ही, जित्ता में ई छोरा हात, पग, मूंडौ धोयाया, अर हूँ दूजी सीटी बजाई।

वडा साबः 'औ थांरौ अखतरौ तो अजब-गजब है। चौथी री पढ़ाई कराबा रौ अखतरौ करतां-करतां भळै कितीक बातां दाखल करी है?'

हूँ बोल्यौः 'म्हारा अखतरां मे आं बातां री गुंजास है। चौथी री पढ़ाई कराणै सूं पैली मनै आंनै पैली री पढ़ाई कराणी जोइजै नी।'

छोरा भाज'र बांडै गया हा अर साळा री आजू बाजू पेड़ां माथै चढ़ग्या हा। हूँ दूजी सीटी बजाई अर वै धमाधम नीचै कूदग्या। तीजी सीटी में पाछा ऊपर चढ़्या अर चौथी में नीचै कूदग्या।

हैडमास्टरः 'आ जबरी भणाई है? आ तो बिना सिखायां ई आज्यावै। ईं में साब! भणाणै रौ कांई है?'

हूँ बोल्यौः 'आजकालै पढ़ायां बिना अै बातां आवै कोनी। आपां अै बातां छोरां नै सीखण ई कठै देवां हां?'

हैडमास्टरः 'थांरी आ बात संई कोनी?'

हूँ बोल्यौः 'सई नंई हुवै तो अै आपणी साळा रा छोरा खड़्या है, पूछ'र देखल्यौ, कित्ताक जणा ईं तरै चढ़-उतर सकै?'

तुरतौतुरत वडा साब सगळा छोरां नै चढ़बा रौ हुकम दियौ, पण दो-तीन जणां घणी दोराई सूं चढ्या।

हूँ बोल्यौः 'साब! ईं तरै री हूँ आंनै कित्तीई तालीम दी है। वै सगळी बाबतां म्हारी भणाई अर अखतरा रा विषय है।' पछै थोड़ौ हंस'र हूँ कैयौः 'साब! परीक्ष्या-पतरी में आं सगळां रा नांव है। आंरा लंबर देणा है।'

वडा साब मजाक में ई पडूतर दियौः 'अच्छ्या, थैई म्हारै सूं लंबर मांगोला कंई?

तीजी सीटी बजातां ई छोरा अलमारी सूं लट्टू-डोरयां निकाळ लाया अर रमबा लाग्या। गळी रा टींगरां री जियां नंई। रोळा-रप्पा अर होडा-होडी कर्‌यां बिना वै रमै हा अर रमबा में रूंगटी ई कोनी करै हा। रमबा री ठौड़ ठावी ही अर वांरौ अेक मुखियौ हौ।

म्हे सै टायरपणां में लट्टू रम्या हा, जिकै सूं सगळां नै मजौ आयौ।

वड़ा साब बोल्याः 'आं छोरां नै लट्टू रमणौ कुण सिखायौ। अै तो

बरौबर ब्यौस्ता अर नेम सूं रमै है।'

हूँ बात रौ खुलासौ करतां कैयौ: 'साब, म्हारी सीखण री ठौड़ है नदी कांठौ। बठै म्है घूमबा-फिरबा जावां हां, कित्ती ई बातां करां हां अर खेल ई खेल में कित्ती ई चीजां सीखां हां।'

बडा साब अंगरेजी में कैयौ: 'थैं सई कैय रैया हो। अबार-अबार हूँ वांच्यौ है कै बाळक खेल ई खेल में सौक्युंई सीख ज्यावै।' हैडमास्टर खांनी जोय'र बै बोल्या: 'अबै साळा में अै सै बातां कद दाखल कर सौ।'

हैडमास्टर बोल्या: 'पण साब! अै सै बातां करबा लाग ज्यावां जणां अभ्यासक्रम पूरौ कियां करांला? अै सिरीमानजी रै माथै तो भार ई किसौ है? बरस भर जिसौ-किसौई भणासी बिसौ भणा देसी अर पछै कैय देसी, 'ओ तो म्हारौ अखतरौ हौ। हुयौ बित्तौ कर दियौ। बाकी ताबै कोनी आयौ। हुयौ कोनी, छोरा कर कोनी सक्या।'अर थैई कैबोला कै अखतरा मे तो जितौ कीं हो सकै, बौ कबूल है। पण म्है तो अभ्यासक्रम री सांकळ सूं बध्यौड़ा हां। आप ई साब, ऊपर सूं लिख'र भेजौ हौ कै 'काम किया पूरौ कोनी हुयौ? नतीजा मोळा कियां रैया? अभ्यासक्रम पूरौ क्यूं नंई कस्यौ?'

बडा साब हँस्या। मन में खीजै ई हा, पण बोला-बोला रैयग्या।

अेक सीटी बाजी अर छोरा आपरा गाबा उतार लीना अर लेणसर खड़्या होयग्या। सै तण'र ऊभा हा, ठीकठाक ब्यौस्ता रै साथ। सै साफ-सुथरा हा। बामण री जनेऊ मैली कोनी हा। हात, मूंडा, बाळ बरौबर धोखा हा। नखां में मैल हो न कोई बाळ बध्यौड़ा हा। आंख्यां में गीड पण कोनी हो। टोप्यां धोयोड़ी ही।

बडा साब थोडा हंस'र बोल्या: 'कित्ता दिनां सूं त्यारी कर राखी ही? साफ-सफाई री त्यारी में तो घणी ई ताण आई हुवैली?'

हूँ बोल्यौ: 'साब, छऊ मईनां सूं त्यारी चालै है। छऊ मईनां सू मैनत करूं हूँ। थै सै किसा जाणौ कोनी?'

दूजी सीटी बाजी अर छोरा आप-आपरा गाबा पैर'र हंसतां-मुळकतां लेण में ऊभा-ऊभा नमसकार कर'र चलैग्या।

हैडमास्टर थोड़ौ डोड में पूछ्यौ : 'परीक्ष्या पूरी होयगी?'

हूँ कैयौ: 'अजै वार लागसी। आप सगळा कमरा में पधारौला?

हैडमास्टर : 'हां, हां। कमरौ अबार थोड़ा दिनां सूं थैं बापरबानै मांग

राख्यौ हौ, अर म्हानै बड़बा ई कोनी देता हा। कीं भेळौ कराता हा नी?'

हूँ बोल्यौ : 'चालौ तो सरी।'

म्हे सै कमरा में आया।

बडा साब बोल्याः 'औ तो अेक नानौ सरखौ संग्रहालै लागै।'

हैडमास्टर : 'हूँ इयां ई धारै हौ। छोरा लाणै-रखणै री भागमभाग में हा।'

हूँ बोल्यौः 'छोरां घणै ई उमाव सूं काम कर्‌यौ है। हूँ कैयौ हौ कै थे जियां सजाणौ चावौ, बियां मतैई सजावौ। हूँ बताऊंला नंई।'

बड़ा साबः 'आ सगळी सजावट अर रचना विद्यार्थ्यां री है?'

'जी हाँ।' हूँ कैयौ।

बडा साब : 'पण आ कियां हो सकै? It is so very tastefully arranged. आ तो बोत ई कलाकारी सूं सजायौड़ी है।'

हूँ बोलौ बोलौ रैयौ। म्हारा काम रौ नतीजौ अबै सैमूंडै बोलै हो।

बडा साब :'औ सै कठै सूं भेळौ कर्‌यौ? कुदरत रौ पाठ भणावानै अै सै बोत काम आवै।'

हूँ बोल्यौ :'साब, कुदरत रै आंगणै सूं ई भेळौ कर्‌यौ। बठै सूं पाठ पढतां-पढ़तां अै भेळा कर लीना।'

हैडमास्टरजी सुर मिलायाः 'छोरां नै घुमाया लेय ज्यावै है, बठै सूं ई लाया हुवैला, साब!'

बडा साबः 'औ तो जबरौ काम होयग्यौ। ई संग्रै नै अबै खिंडाइज्यौ मती। आखी साळा रै वास्तै औ आपां रै काम आवैला। आपां सिक्षकां नै कैय'र ई संग्रै नै मोटौ-टणकौ बणास्यां।'

हैडमास्टरजी मन में गणगणायाः 'पछै सिक्षक भणासी कणां?'

छोरां संग्रै री अेक पानड़ी त्यार कर राखी ही। बडा साब वींनै बांच'र घणांई राजी हुया। बोल्याः 'अै छोरा तो इनाम रै लायक है।'

हूँ कैयौः 'साब, ईं संग्रै नै त्यार करवा रौ आणंद ई आंरौ इनाम है, औ आखौ संग्रै ई आंरौ इनाम है।'

बडा साबः 'तो ई.....................'

हूँ बोल्यौ कोनी।

अेक खुणां में गारा रा रमेकड़ा हा।

बडा साब : 'अै कुण बणाया?'

हूँ बोल्यौ: 'अै छोरा। ईं आखा कमरा में म्हारौ कीं हाथ कोनी।'

बडा साब : 'पण इत्ता सारा रमेकड़ा कद तो बणाया अर कद पकाया?'

हूँ कैयौ: 'अै तो नदी कांठै हर अठवाड़िये त्यार कर'र बठैई न्याव बणा'र पकाया है।'

बडा साब: 'थांरौ दिमाग कीं अजब लागै है। थांरा अखतरा कीं उदबुदा लागै है! कीं साधन नंई मिळे तो नदी कांठै न्हाट ज्यावौ हौ। खेत री माटी रौ गारौ बणाऔ हो..........स्यायास.............''

हूँ बांनै आगै बोलबा ई कोनी दियौ। बीच में ई बोल्यौ: 'अबै आप ईं कमरा में स्यांति सूं बिराजौ, हूँ आपनै आंरौ कीं काम भळै दिखाऊं।'

सगळां नै बिठाया।

हैडमास्टर सोचतां-सोचतां बोल्या:'साब, औ सै म्हैई कर तो सकां, पण पछै छोरां नै भणावां कद?'

इत्ता में ई हूँ कीं गत्तां रा पुट्ठा लायौ। अेक माथै छोरां रौ वरग सरू करयौ हौ बीं बगत रा आखरां रा नमूना हा। पुट्ठां माथै लिख्यौ हौ-अक्खर-प्रगति सूचक पानड़ी।

अक्खरां री प्रगति सगळां नै आछी लागी।

अेक सिक्खक दूजोड़ा रै कान में कैयौ:'अै तो खासकर चोखा-चोखा छोरां सूं होळै-होळै लिखाया होसी।'

मनै सिक्खक री बात खुचगी; पण हूँ बींरौ ग्यांन करयौ कोनी। मनै बींरा विचार साव फोरा लाग्या।

बडा साब: 'भई, थैं अै फैरफार कियां करल्यौ हो?'

हूँ बोल्यौ: 'जुदा-जुदा उपाव कर'र।'

बडा साब: 'यां उपावां नै साळा में दाखल करां तो ?'

हूँ बोल्यौ: 'तो होय सकै, जरूर होय सकै, हूँ आपनै बता सकूं हूँ।'

हूँ अेक दूजी चोपड़ी लायौ। बींरै मांय विद्यार्थ्यां लारला छऊ मईनां में जित्ती किताबां बांची ही, बांरी पानड़ी ही। हरेक पाना माथै छोरां रौ नांव हौ। आपरै हाथां ई बै आपरी बांच्योड़ी पोथी रा नांव टूंक देता हा।

हूँ धीरै हिसाब सूं छेड़ला पानां माथै थोड़ा अेक आंकड़ा काढ्या हा। कित्ता बिद्यार्थी कुल कित्ती पोथ्यां पढ़ी, बिद्यार्थी दीठ कित्ती पोथ्यां बंचीजी, सैसूं बत्थी अर सैसूं ओछी कुण बांची, इत्याद। पोथीवार ई हिसाब काढ्यौ हौ; किसी पोथी घणी बंचीजी अर किसी दर में ई कोनी बंचीजी ही। बांच्योड़ी पोथ्यां री छंटाई पण करी ही कै किसा वरग में छोरां किसा विषय बांचबा मे खास रुचि लीनी ही।

बडा साब देख्या। यै अचूंबौ करता बोल्याः 'इत्ती सारी किताबां बचीजी है! भळै इत्ता सारा विषयां पर! कद बांची हूसी?'

'जी हाँ! बांची है, म्हारी निजरां सामै।'

बडा साब पूछ्यौ :हैडमास्टर साहेब! थांरी सातवीं किलास में लारला छऊ मईनां में बिद्यार्थ्यां कित्ती किताबां बांची हूसी?'

हैडमास्टर : 'साब, बांचै कठै सूं? बांचबा जावै जणां इतियास, भूगोळ, भूमिति अर दूजा विषय किया पढै?'

बडा साब बोल्या कोनी, पण कीं न कीं सोचै हा। म्हारै खांनी जोय'र बोल्या' 'थांरा छोरा भासा में बिना परीक्ष्या ई पास है। बोलो, अबै कांई बाकी बंच्यौ।'

हूँ छोरां रौ हाथां लिख्यौड़ौ मासिक ले'र आयौ।

बडा साब बोल्या : 'अै सै लेख छोरां रा लिख्यौड़ा है?'

'जी हाँ।'

'अै अेक-दोय कवितावां है, जिकी पण?'

'जी हॉ! अबार-अबार कीं छोरा कवितावां लिखबा लाग्या है।'

'पण आंमें थै की सुधारौ हौ कै नंई?'

'नंई, अजे तांई सुधार कोनी करयौ। जिसी लिखी है, विसी ई सामल करी है।'

अै सगळा छोरा मतेई लिखै है, नकलां करै है, कै थैं आंनै बताओ हो?'

'नकल सूं कांई मुतलब? साब, हूँ आंनै कैवूं हूँ कै 'थांनै दाय आवै जिकौ लिखौ, सूजै जियां लिखौ, सै तरै सूं लिखीजै। जो क्युंई थैं लिखौ बींनै मासिक में सामल करौ'' आंनै सगळां रा लेख दाय आवै अर हूँ सगळां नै मासिक में सामल करूं हूँ।'

बडा साब: 'औ मासिक तो खासकर'र छमाई परीक्ष्या सारू त्यार करायौ हुवैलौ?'

हूँ बोल्यौ: 'जी नंई! लारला तीन मईनां सूं हर मईनै आ प्रवृत्ति चालै है। हाँ, ई मासिक नै छमाई में राख्यौ जरूर है, पर परीक्ष्या सारू त्यार कोनी कर्यौ।'

बडा साब खुशी सू गरदन हिलाता - हिलातां कैयौ: 'कित्तौ दौरौ काम है।' मनै बतळा'र बोल्या: 'भारी जबरौ काम कर बतायौ। छऊ मईनां मे कठै सूं कठै पूगग्या!'

हैडमास्टर होळै-सी बोल्या: 'अबै गणित, भूगोळ अर इतियास री परीक्ष्या कद है? दोफारां म्हे सै हाजर रैवां?'

स्यात इयां बोल'र हैडमास्टर ब्यंग-बाण मारणौ चावै हा। बांनै ठा होसीला कै हूँ अजैतांणी भूगोळ अर गणित में कीं कोनी कर्यौ हौ। हूँ कैयौ: 'जी, भूगोळ अर गणित मे म्हारै सूं अबारतांणी कीं कोनी हुयौ, पण बारवां मईनां तांई औ काम ई हूँ कर नै दिखाद्यूंलौ। इतियास में थोड़ौ-सा काम जरूर हुयौ है।'

हैडमास्टर: 'ओहो! इयां बोलौ नी कै मोटा-मोटा विषय तो अजै रैईग्या।'

बडा साब: 'हैडमास्टर साब, बै तौ थांरी निजरां सूं रैया है, आरी निजरां सूं कोनी रैया। थांरै सारू तो इतियास, भूगोळ, गणित अर पावडां में ई सारी पढ़ाई धरी है।'

साब ने लैर मे देख'र हैडमास्टर पडूतर दियौ: 'पण साब! आप री निजर ई तो इसी है। आं विषया में ई तो आप चोखौ नतीजौ मांगौ हौ।'

हँसी ठट्ठा करता सै उठ्या। म्हारी किलास री छमाई परीक्ष्या पूरी हुई। जाता-जातां साब पूछ्यौ : 'थांरौ परीक्ष्या पत्रक कठै है?'

हूँ कैयौ: 'बौ तो त्यार ई कोनी कर्यौ।'

बडा साब: 'जणां परीक्ष्या सूं थांरी किलास नै आजादी देऊं हूँ।'



चौथौ खण्ड

छेड़लौ मेळावड़ौ

(१)

छमाई परीक्ष्या हुयां पछै अेक दिन हूँ साळा रा सिक्षकां साथै बैठौ हौ। चंदर शंकर बोल्यौ: 'सांचाणी, थै मनै अेक अजब आदमी लागौ हौ। थांरौ अखतरौ सफळ रैयौ है। म्हांनै बिसवास ई कोनी हौ कै प्राथमिक री पढाई में ई तरै रा उम्दा फैरफार हूय सकै।'

भद्रशंकर कैयौ: 'भई, अै तो अंगरेजी भण्यौड़ा है जिकौ अंगरेजी किताबां बांच-बांच'र नुवां-नुवां अखतरा करै है।'

चम्पकलाल बोल्यौ: 'बिल्कुल ठीक है, पण अै आंनै ई पोसावै। न तो आंनै रिपियां-पइसां री चिन्त्या, न नतीजै री परवा। अखतरौ अळ्यौ जावै तो आंनै किसौ डंड भोगणौ पड़ै!'

बैणीलाल बोल्यौ: 'भई, म्हैं अखतरा-बखतरा कियां करां। फुरसत तो मिलणी चईजै! अै बातां सोचण-करण रौ वगत कींरै खंनै है? आपां नै ट्यूशन करणी पड़ै, स्याम रा बडा साब रै घरां हाजरी भरणी पड़ै, घर रा टाबर-टीकरां नै संभाळना पड़ै,कै जात-बिरादरी में सामल होणौ पडै। जदकै अै ठैरया फक्कड़राम, अै आंनै ई पोसावै।'

आखिर में हूँ बोल्यौ. 'जोवौ भायां! प्राथमिक री पढ़ाई में थै ईसूं ई बेसी कर सकौ हौ। इत्तौसारौ काम कर सकौ, कै आज री प्राथमिक सिक्ष्या रौ रूप ई फुर ज्यावै, काया ई पलट ज्यावै। पण खरी बात आ है कै ईंरै खातर काम करबाळां मिनख जोइजै। दुनिया रौ अर धरती रौ सरूप आज पैली सूं जुदौ है अर ईंरा सरूप नै पलटबा रौ काम मिनख ई कर्स्यौ है। आदमी में लगन, आतम बिसवास अर अखंड निस्ठा जोईजै। बाकी अंगरेजी भणबा सूं

अखतरा कीं चोखा हुवै. अै तंत-यायरी यातां है, थोथी। जद कीं करवा री हूंस नंई हुवै, जणांई इस्तक रा भाना यणाईजे। खरी चीज है हियै री उपज अर बा कोई चीज-यस्त सारू आपणी कळवळती आतमा सूं निसर'र बांडै आवै है।

भळै चम्पकलालजी! नतीजा री चिन्त्या अखतरा करयाळा ने जित्ती हुवै, बित्ती कोई दूजा नै कोनी हुवै। थै तो तनखा-वधणै री आमना सूं चोखा नतीजा री चेस्टा राखौ हौ, पण मनैस्तौ म्हारा अखतरा री सफळता रौ ई ध्यान राखणौ पड़ै, क्यूंकै सफळता नंई मिळै तो दूजौ अखतरौ करवा री ठौड़ कठै लादै? म्हारी निस्फळता दूजा अखतरा करणियां रै आडी आ ज्यावै।

वैणी भाई नै हूँ कैणौ चावूं कै म्हारा भाई! जात-विरादरी में घूमया-फिरबा अर गप्पां हाकयानै किसी ओछी फुरसत मिळै है। रैयी यात यडा साब रै घरै खूंसड़ा घसवा री, तो थांनै नूंतौ कुण दैवै है। यडा अफसर नै चोखौ काम कर'र दिखास्यौ तो खुसामद री कांई जरूत? अर साळा में, आछी तरयां भणाओला तो ट्यूशन री जरूत ई कोनी पड़ै। अै तो आपां साळा में पढ़ावांई कोनी, जणा ट्यूशन री गरज ऊभी हुवै।'

सिवसंकर बोल्यौः 'पण भाई, पगार ओछी मिळै जिका कांई करां? थांनै तो मूंडै-मांगी पगार मिळज्यावै पण म्है कठै जावां?'

हूँ बोल्यौः 'थैं बेसी पगार री मांग करौला, तो थांनै ई मिल ज्यावैला।'

विस्वनाथ बोल्यौ : 'थानै कांई ठा? साची यात तो आ है कै मांगणी करयां पगार री ठौड़ नौकरी सूं धक्का मिळै।'

हूँ कैयौः 'सगळा सिक्षकां नै बत्थी पगार री मांग करणी जोइजै, देखांणी कित्तांक नै धक्का मिळैला! भळै हूँ तो कैवूं कै धक्का मिळया सूं पैली थैं ई क्यूं नी बारै निसर ज्यावौ? थोड़ा येपरवा होणौ सीखौ। हूँ बेपरवा हूँ जणांईस्तौ म्हारी पावली चालै है!'

भद्रशंकर बोल्यौः 'भाई! येट पूजा कियां होसी?'

हूँ बोल्यौ : 'पेट पूजा? हिम्मते मर्दा, मददे खुदा! धंधा किसा ओछा है? हूँ तो झाड़ू-बुवारी कर'र पेट भरल्यूंला, पण थांरी जियां अधभूखौ कोनी रैवूं! थारी तनखा कोई तनखा है?'

विस्वनाथ : 'अजी साब! अेक री ठौड अठारा जणां जग्या भरवानै

त्यार ऊभा रैवै। थांनै कांई ठा!'

हूँ बोल्यौः आपां बांरै आडा खड़्या होज्यासां । आपां बांनै आपणौ 'चार्ज'देस्यां जणांई तो बै काम करसी नी! भळै आपां नुंवां लोगांनै 'चार्ज' लेबाई क्यूं देस्यां! आपां साळा रै च्यारूंमेर दिनरात चौकीदारी करस्यां, पण जिका खाडा में आपां पड्यां हां बींमें कोई दूजा नै कियां पड़बा देवां! आपां बांरै पगा पड़'र समजास्यांः 'भाई लोगां! अठै सूं पाछा जावौ परा, कोई दूजौ धंधौ सोधौ। आं भुखमरां मे मती आऔ, ईं खुशामद खाना खांनी मत जोवौ, ईं अेदीखाना सूं अळग रैवौ।'

पछै तो केई तरै री बातां चाली। हूँ सगळा सिक्पकां में नुंवौ उछाव जोयौ। मनै लाग्यौ जाणै जूना ढरड़ा री गुलामी री जड़ां में चूंचाड़ी लागगी।'

(२)

अबै हूँ भूगोळ पढ़ावा रौ बिचार करबा लाग्यौ। भूगोळ री पोथी जोई अर निरास होय'र बींनै अेकानी मेल दी। अभ्यासक्रम बांच्यौ अर मननै माठौ लाग्यौ। छोरां नै नद्यां-पाड़ा'रा नांव क्यूं रटाया जावै। खुद मनै कठै याद है! काल डिप्टी डाइरेक्टर साब ई नक्सा में जोय'र आस्ट्रेलिया रौ मारग सोधै हा। नानपणा में रट्योड़ी भूगोळ कींनै याद रैवै ही? हूँ सोच्यौ, ईं तरै री भूगोळ हूँ नई पढाऊँ तो? खुद मनै सच्चौ भूगोळ अफ्रीका गयौ जद समज में आयौ। बीं पछै ई म्हारी भूगोळ आळी आंख उघड़ी। आज मनै भूगोळ में घणोई मजौ आवै अर ईं री भणाई बोत काम री लागै। पण आं छोरां नै अै सै अबार सूं ई क्यूं समजाऊँ अर क्यूं भणाऊं? ई अभ्यासक्रम रै परवांण तो म्हारै सूं चालीजै कोनी। ईं पोथी नै जोय'र तो हँसणौ आवै। तो कांई डाइरेक्टर साब सूं मिलूं? बांसूं म्हारी निजू रीतभांत सूं विद्यार्थ्यां में भूगोळ री वृत्ति अर दीठ उपजाणै री मंजूरी लेवूं?'

हूँ डिप्टी डाइरेक्टर साब रै खंनै गयौ।

साबू पूछ्यौ : 'कियां?'

हूँ कैयौः 'भूगोळ रौ विषय अभ्यासक्रम सूं बांडै काढद्यौ तो?'

'आ कोनी हूय सकै। अभ्यासक्रम रै मांय भूगोळ बोत मैताऊ विषय

है। इतियास सूं भूगोळ री आज घणी जरूत है। आपां रा अखतरा में कोई विषय नै छोड़बा री बात कोनी। विषय नै चोखी तरै भणाणै री बात है। थै चावौ जियां भलैई भणावौ पण दूजा सिक्षकां नै खातरी अणाद्यौ कै भूगोळ मजेदार विषय है अर आछी तरै भणायौ जा सकै। ईं बात में ई म्हारै सारू थांरै अखतरां रौ मोल है।'

डाइरेक्टर साब अटकळ सूं म्हारौ मूंडौ बंद कर दियौ। पण हूँ कैयौ: 'थांरौ औ अभ्यासक्रम अर आ पोथी मनै कोनी जोईजे। हूँ म्हारी रीति सूं ई भूगोळ भणास्यूं। उमेद है थांनै निराशा कोनी हुवै।'

'हूँ आ ई चावूं हूँ।' साब बोल्या।

थोड़ी ताळ पछै बै मनै अेक दूजौ सवाल पूछ्यौ : 'परीक्ष्या रै बाबत थांरा कै बिचार है, लिछमीशंकरजी! नुंवी जात री पढ़ाई रा हिमायती तो परीक्ष्या नै बरौबर भूंडै है, अर सांचाणी ईंरा अेब ई घणां भयंकर है! पण आपांनै तो सिक्ष्या रौ विभाग चलाणौ है जिकौ ईनै हटा कियां सकां हां? आपांनै तो नतीजौ चईजै। परीक्ष्या नंई लेवां तो कदास सिक्षक चित-मन लगा'र भणाणौ ई छोड देवै। जे अच्छ्यौ सिक्षक पढ़ायां राखै तो परीक्ष्या रै बिना आपांनै ठा कियां पड़ै कै बींनै पढ़ाणौ आवै है कै नंई। भळै बिद्यार्थी रै मांय पढ़ाई बिगसी है कै नंई आ जाणबा रौ कीं साधन तो होणौ ई चईजै। ईं मुसकला रै बारै में थांरी कांई राय है?'

हूँ बोल्यौ: 'थांरी मुस्कल सई है। जठै ताई चावै जिका बिद्यार्थी पढै है, अर जठै तांई चावै जिका सिक्षक पढ़ावै है, बठै तांई परीक्ष्या री तो जरूत रैवेला ई। परीक्ष्या तो जणां ई हटा सका कै जद बिद्यार्थी भणबा री मांयली हूंस सूं भणबा आवै, अर बांरै सामै भणावा री कळा वाळौ सिक्षक भणाबा री हूंससूं भणाबा बैठै। पण अबार आळी भाड़ेती हालत में परीक्ष्या बणी रैसी, हट कोनी सकै।' डिप्टी डाइरेक्टर साब कैयौ: 'अलबत्ता, हूँ ईं बाबत में कीं सुधार करणी चावूं हूँ।'

हूँ बोल्यौ: 'आज थैं फगत छमाई और सालाना परीक्ष्या लेवौ हौ, बींरी जग्यां मईनै री मईनै परीक्ष्या दाखल करौ। जे बिद्यार्थ्यां नै परीक्ष्या री कसौटी माथै ई खरौ उतरणौ है, तो परीक्ष्या रै साथै बांरी जित्ती गैरी जांणचीण बधैला वित्तौ ई बांरौ भौ घटैला। क्यूंकै गैरा परिचय सूं डर सैयौ जा सकै। दूजै, परीक्ष्या हुंश्यार बिद्यार्थ्यां री हुंश्यारी मापबा सारू नंई, पण

कच्चा'र कमजोर बिद्यार्थ्यां नै जगाबा नै है, बांरी कमजोरी कित्तीक हैं, आ ठा पाड़बा नै है। निजर रौ औ बदळाव मैताऊं है। तीजै, जिका बिद्यार्थी आ माने है कै बांनै विषय रौ पूरौ ग्यांन है, बांनै परीक्ष्या सूं माफी दे देणी चईजै। खुद री इंछा सूं ई बिद्यार्थी आपरी कच्चाई मपावण सारू परीक्ष्या देवै। जिका बिद्यार्थी आपरी कच्चाई नंई मपावै बांनै कच्चाई निकाळबा रौ मौकौ कोनी मिलै, ईं तरै री समझ बिद्यार्थ्यां नै देणी चईजै। जिका विषय परीक्ष्या सूं माप्या जा सकै, बांरी ई परीक्ष्या राखणी चइजै, बाकी विषयां नै परीक्ष्या सूं बाद कर देणौ चईजै। भळै परीक्ष्या री बगत बिद्यार्थ्यां नै पोथ्यां देख'र जवाब लिखबा री छूट देणी चईजै। कैणौ चईजै कै उत्तर नंई आवै तो देख'र लिखद्यौ। जिका जबानी नंई बता सकै बै किताब जोय'र समजा देवै। बिद्यार्थी पोथी नै कीं तरै सूं बापरै, बीरै मांय बांरी मत्तैई परीक्ष्या होज्यासी। ईंरै अलावा विद्यार्थ्यां री तीन ई स्रेण्यां होणी चईजै- ऊंचली किलास में चढ़बा जोगा, नाजोगा, अर कमजोर, जिका पक्का हुयां पछै चढ़बा जोगा होज्यासी। पैला लंबर पास, अर दूजा लंबर पास आळी घड़ाबाजी रद कर देणी चईजै।'

साब बीच में ई बात काट'र बोल्या: 'आगलै बरस मनै थांनै म्हारौ डिप्टी थरप लेणौ चईजै।'

हूँ थोड़ौ मुळक्यौ'र आगै बोल्यौ:' भणाणियां सिक्षकां नै ई परीक्ष्या लेणी चईजै। बैई आपरा बिद्यार्थ्यां री सगती अर कमजोरी रा कारणां नै आछी तरयां जाण सकै, अर बैई बता सकै के बिद्यार्थी ऊँचली किलास में चाल सकै कै नंई। हां, थांरै खंनै डिप्टी री जरूत तो है, पण बिद्यार्थ्यां री परीक्ष्या लेबा सारू नंई, परीक्षकां री परीक्ष्या लेबा सारू। आ देखबा सारू कै परीक्षकां नै परीक्ष्या लेणौ बरौबर आवै है कै नंई!'

डिप्टी डाइरेक्टर: 'औई भळै नुंवौ बिचार है।'

परीक्ष्या रै बाबत मनै घणोई कैणौ हो, पण साब रै जीमबा रौ बगत होयग्यौ हौ, जिकौ बै ऊठग्या हा। हँसता-हँसता बै बोल्या: 'अच्छ्या, ईं बारै में आपां अेकर भळै विचार करांला। अेक दफा सगळा सिक्षकां रै सामै थैं ईं विषे में भाषण देवौ।'

हूँ ऊठ्यौ। मन ई मन गणगण्यौ : 'इयां भाषण सूं सुधरबा आळा सिक्षक है कठै? बांनै परीक्ष्या री गराड़ी में सूं काढणौ घणौ मुस्कल है। फेरूं जे इयां हुय सकै तो फगत बडा साब रै हुकम सूं हूय सकै, पण बै.तो

यापड़ा.................।

(३)

चौथी किलास रा छोरा भूगोळ रा नांव अर विषै सूं की परिचितहा। हूँ नक्सा मंगाया अर काठियावाड़, गुजरात, बंबई इलाकां रा नक्सा भींत पर टांग्या। छोरां नै अचूंबौ हुयौ। अजै तांई हूँ वानै भूगोळ पढ़ाई कोनी ही। वै आपरी कोप्यां में सूं पाना फाड़्या अर भूंगळ्यां बणा'र चिटली आंगळ्यां में चढ़ाया लाग्या।

हूँ पूछ्यौ : 'अै भूंगाळ्यां क्यूं बणाऔ हौ?'

छोरा बोल्याः 'साब नक्सा धोकवा।'

हूँ हबकग्यौ : 'नक्सा धोकवा? जबरौ ढाळौ है भई भूगोळ भणाणै रौ?' कीं रमूजायां जोवा री नीत सूं हूँ छोरां ने कैयौः 'अच्छ्या, भावनगर बताओ?'

छोरां बम्बई इलाका रा नक्सा माथै च्यारूंमेर निजर नाखी। मुंबई बांच्यौ, अहमदाबाद बांच्यौ, हैदराबाद बांच्यौ अर नीचै उतरपरा पूना बांच्यौ; पछै ईं पासी आय'र पोरबन्दर बांच्यौ, लारै ऊभा कीं छोरा भावनगर सोध लीनौ हौ। बांरी भूंगळ्यां बतावानै उंतावळी हो रैयी ही। आखिर अेक जणौ पूछ्यां बिना ई भावनगर बता दियौ।

हूँ पूछ्यौः 'भावनगर किसी दिसा में है?'

छोरां ऊपर नीचै डावै-जींवणै पासी जोय'र मन मे कीं हिसाब लगायौ, पछै की कायदौ सोच'र बोल्याः 'साब, उतरादी दिसा में।'

दूजौ छोरौ बोल्यौः 'उतरादी दिसा तो ऊपर है, बा बाजू तो अगूणी कैवावै।'

मनै हँस आयगी।हूँ बोल्यौः 'ऊपर तो आकास है, बठै कठै उतराद?'

छोरा बोल्याः 'नंई साब, ऊपर उतराद अर नीचै दिखणाद।'

अेक छोरौ बोल्यौः 'उतराद-दिखणाद तो लांबौ है अर अगूंण-आंथूण चौड़ौ है।'

भळै अेक छोरौ बोल्यौः 'सूरज ऊगै बठीनै अगूंण।'

हूँ पूछ्यौ : 'नक्सा में बताओ देखाणी सूरज कठै?'

सै सोच मे पड़ग्या। हूँ पूछ्यौ : 'शेत्रुंजी नदी कठै है?'

छोरा भूंगळ्यां सूं शेत्रुंजी नदी बताई।

हूँ बूझ्यौ : 'आ कींरै मांय जाय'र मिलै है?'

नक्सा मे बांच'र छोरा बतायौः 'खंभात री खाड़ी में।'

हूँ बूझ्यौः 'आ अठीनै अरबसागर में क्यूं कोनी मिळै?'

छोरा कैयौः 'आ ईंरी मरजी! ईंनै खंभात री खाड़ी में ई मिलणौ हूसी।'

हूँ बूझ्यौः 'आ नदी इयां नीचाण में क्यूं गई?'

छोरा बोल्याः 'साब! इयांई तो जासी। जोवौ नी, दिखणाद नीचै तो है।'

मनै अचूंबौ हुयौ। लारली साल भण्यौड़ी भूगोळ बै अजै तांई भूल्या कोनी हा। घोकणपट्टी पक्की ही। ईं बरस हूँ आंनै इयां ई भणा सकूं, पण ईंनै भूगोळ री भणाई कुण कैसी? हूँ छोरां नै कैयौः 'नक्सां नै बंद करद्यौ। अेक मईना पछै आपां भूगोळ पढ़स्यां। अबार कीं दिन तांई आपां चित्र बणास्यां।'

छोरा म्हारै सांमी जोवा लाग्या। चित्र विषय साळा में नुंवौ हौ, ईंनै अभ्यासक्रम रै मांय ठौड़ कोनी ही। साळा में ई तरै री सिरजण आळी अेक ई प्रवृत्ति नै ठौड़ कोनी ही। पण मनै इस्तक री अेकाद प्रवृत्ति नै दाखल करणी ही।

दूजै दिन हूँ छोरां नै कैयौः 'चीतरौ, चायै जो चीतरौ। जिसौ आवै बिसौ चीतरौ। देख-देख'र चीतरौ, नीचै राख'र चीतरौ, सोच'र चीतरौ, भावै जियां ई चीतरौ। मिनख चीतरौ, ढोर चीतरौ, पंखीड़ा चीतरौ, पतंगिया चीतरौ, झाड़ चीतरौ, फूल चीतरौ, आकास चीतरौ, घर चीतरौ, पदारथ चीतरौ, नक्सा चीतरौ, चायै जो चीतरौ।'

पाटी में बरतां सूं चित्र चितरीजवा लाग्या। आंका-बांका, इसा-विसा कित्तीई तरै रा चित्र बणवा लाग्या। आखी संवार चित्र मे चलेयगी। घंटी बाजी जणा आंख खुली। बगत पूरौ होयग्यौ हो।

हूँ छोरां नै कैयौः 'जिकां रा माईत कोपी-पेंसल देवै, बै कोपी में बणाओ अर बाकी रा पाटी माथै।'

दोय-च्यार दिन निसरग्या। कित्ताई चित्र बणीज्या–ईं तरै रा कै

जिकां नै चित्रकार देखणौ ई कोनी चावै, पण बै विद्यार्थ्यां री कल्पना रा, बांरी सगती रा चित्र हा। मनै लाग्यौ : 'चित्रां री हिसाब अर संग्रै राखणौ चईजै। थोड़ी मुस्कल उठा'र बडा साब सूं मिल्यौ, अेक पासी खाली रद्दी पानां कढ़ाया अर साब सूं दोय दरजन रंगील पेन्सलां कवाड़ी। साब हंसतां-हंसतां बोल्या: 'भणाणौ ऊंचौ टांग'र चित्र बणाबा रौ नुंवों विषय साभल कर्‌यौ दीसै।'

हरेक विद्यार्थी सूं चित्रकला री अेक-अेक कोपी बणवाई अर वीं परवांण हूं बांनै चित्र बणाबा रौ कैयो। चित्रां रा वातावरण सारू हूं लीमड़ा री डाळ्यां, पीपळ रा पांनड़ा, तुळसी री मंजरी, थारामासी अर आकड़ा रा फूल राख्या, अर बौपारी री दुकान सूं भांत-भांत री छप्यौड़ी किनारां रा नमूना लाय'र टांग्या। दो-अेक भायां रै घरां सूं कीं चोखा-चोखा चित्र लाय'र जोवण सारु राख्या। रोजीना काम आबाळी चीजां दवात, कलम, डब्बी, दियासलाई री पेटी इत्याद भेळी कर'र राखी। बोड माथै लिख्यौ:'चीतरौ, चीतरौ, चीतरौ। आपरै मत्तैई चीतरौ। थांनै चित्र बणाणौ आवै है। रोजीना चोखा-चोखा चित्र बणीजै है, चित्र बणाऔ।'

छोरा तो चित्र बणाबा रै लारै ई पड़ग्या। केई जणां तो छपाई अर वेलबूंटा नै हूबहू चीतर दिया। केई जणां फूलां रा रंग जिसा ई रंग फूलां में भर्‌या। कोई चीतरतौ ई कोनी हौ तो केई जणां बैठा-बैठा जोवै हा कै दूजा कियां चीतरै है।

अेक पखवाडा पछै हूं हाई इस्कूल रा चित्रकला-सिक्पक नै तेड़ ल्यायौ। हूं कैयौ:'थांनै चित्र बणाणौ कोनी सिखाणौ, थैंतो थारै बोड माथै चायै जिसा चित्र बणांया राखौ। पण होळै-होळै बणाइज्यौ अर सफाई सूं बणाइज्यौ। झाड़ देख'र झाड़ बणाऔ, कुड़सी देख'र कुड़सी।' चित्रकला सिक्पक बियां ई कर्‌यौ अर छोरा बांनै टोर बांध'र जोवै हा। दूजै दिन चित्र बणाबा रौ काम औरूं जम्यौ, इयां लाग्यौ जाणै विद्यार्थ्यां में चित्र बणाबा रा कायदां री समज बापरी हुवै। पछै हूं चित्रां रा पानां नीचे बणाणियां रा नांव अर तारीख लिखाणी सरू कर दीनी।

थोडा दिन टाळ'र चित्रकार सिक्षक नै हूं भळै बुलायौ अर बै रेखाचित्रां में कै आलेखन चित्रां मे रंग भरबा लाग्या। चित्रकार च्यार-पांच चित्रां में सफाई सूं रंगां रा बरता सूं रंग भरै हा। विद्यार्थ्यां नै रंग भरबा री नुंवीं तरकीब जाणबा नै मिली।

भळै थोड़ाक दिनां पछै हूँ अेक सर्वेयर भायला नै बुलायौ अर बींनै आखी साळा नाप'र साळा रौ नक्सो बणाबा नै कैयौ। म्हे दोनूं साळा रौ ''प्लैन'' नापै हा अर छोरा लारै फिरै हा। छोरां री निजरां सामै म्हे मकान रौ नक्सो कागद माथै खींच'र बतायौ। दो-पांच दिनां तांई हूँ छोरां नै सर्वेयर रा ओफिस में ई भेज्या, जठै बांनै ड्राफ्ट्समैन गळ्यां, गांवां अर सींव में साथै लेयग्यौ अर सांपड़तै पैमायस रौ काम बतायौ। साळा में बैठ्या-बैठ्या छोरा साळा नै, कमरा, घर, गळी, कूवा अर तळाव नै चीतरबा लाग्या। बांरी चित्रकला नै बधाबानै हूँ बांनै कुदरत में घुमाया लेय ज्यातौ। बठै कोई चीज नै कियां देखणी चइजै, ईं रै अभ्यास सारू बांनै रमत रमातौः जियां कै कोई झाड़ माथै निजर नाखतां पांण बींरा थड़-डाळखा कीं तरै रा है, बांनै देख'र आंख्यां बंद कर्‌यां पछै कागद माथै चीतर लेणौः सूरज-उगाळी री वेळां वींरा रंग नै जोय'र बांरौ ध्यान करणौ अर सिंझ्या रा बदळता रंगां री खासियतां नै देखणौ। दूर सूं झाड़ किसौक दीसै अर खंनै गयां किसौक लागै; पेड़, पदारथ, भाखर, मिनख अर बांरां पड़छाया किसाक पड़ै— आं बातां माथै छोरां ध्यान कर्‌यौ।

ईं तरै थोड़ाई दिनां में म्हारी किलास में चित्रकला रौ काम आछी तर्‌यां चालबा लाग्यौ।

(४)

अेक दिन हाई इस्कूल सूं हूँ अेक दूरबीन ल्यायौ अर छोरां नै बतायौ कै दूर री चीजां कीं तरै नैड़ी दीसै। बांनै भारी अचूंबौ हुयौ। आखौ दिन बारी-बारीसर वै आंख्यां पर दूरबीन टांग्यां ई रैया। रात रा हूँ गिरै-नखतरां-तारां नै जोबा नै टेलिस्कोप लेय'र आयौ। म्हारा भायला बोल्याः 'थूं ई जबरौ धमालियौ है।'

म्हारा सिक्षक अबै घणखरा इसा मौकां पर म्हारै सागै ई रैता। वै मनै भूंडणौ टाळ'र म्हारै सूं कीं सीखबा नै त्यार होयग्या हा। बडा साब आपरी इंछा मुजब तै कर दीनौ हौ कै हर अठवाड़िये वै सगळा अेक कलाक म्हारी किलास में आय'र बैठै अर देखै कै हूँ कियां काम करूं हूँ।

रात नै म्हारा विद्यार्थ्यां नै चंदरमा और तारा दिखाया तो वै 'आ हा हा' करबा लाग्या।

चंदरमा दिखातां-दिखातां हूँ यात मांडी : 'वीं चंदरमा रै मांय चरखौ कातती डोकरी अर बकरी दीसै है, पण यठै ऊंडी खायां अर भाखर है, अर यठै इत्ती ठंडक है कै कोई मिनख कोनी रैवै।' छोरा म्हारै खांनी ताकया लागग्या। हूँ योल्यौ: 'आपणी आ धरती अर चंदरमा दोनूं वैनां है अर सूरज आंरौ याप है।'

विद्यार्थी घणा ई अचरज सूं म्हारै खांनी जोवै हा।

अेक जणौ योल्यौ: 'इस्तक री काणी किसी किताय में है।'

हूँ कैयौ : 'आ काणी कोनी, सांची यात है।'

छोरा योल्या : 'हो ई कोनी सकै।'

हूँ कैयौ: 'आ सांची यात है।'

तुरत हूँ सूरज में सूं धरती कियां छिटकी, जिकी बात सरू करी, अर बीं बात रौ रंग आछौ जम्यौ। दिन पर दिन यीतता गया अर जित्तै हूँ यांनै धरती री पुड़त ठंडी कियां हुई; खाडा टेकड़्यां कियां हुई; नदी-तळाव कियां हुया; सैवाळ, जळजीव, मछल्यां, मींडका, जळ-थळरा जीव, जंगळ अर जंगळी मिनख, अर पछै धीरै-धीरै आज रौ मिनख कियां हुयौ आ सगळी बात कैयी। अै बातां घणी उद्‌बुदी ही। छोरा चित्त-मन लगा'र सुणै हा। हैडमास्टरजी सातवी रा छोरां नै ई सुणया नै खिनाता हा।

अेक दिन हूँ धरती रौ गोळौ लायौ अर कैयौ: 'जोवौ, हूँ थांनै बतायौ ई हौ कै अै सगळी चीजां धरती माथै कियां बणी?'

पछै हूँ पाणी अर जमीं कठै है, काळा अर गोरा लोग कठै है, पीळा अर राता मिनख कठै है, ठींगणा अर डीगा मिनख कठै है, अै सै यातां बताई। ई रै पछै बांनै धरती रा कुदरती विभाग अर बांरा नांव वताया। पछै आपां अेसिया में हां, अेसिया मे औ दीसै हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान में औ दीसै है काठी लोगा रौ मुलक काठियावाड़ अर काठियावाड में औ भावनगर है, सै वताया।

हूँ छोरां नै कैयौ: 'औ ल्यौ गोळौ अर बीं पेटी सू नक्सा काढल्यौ। पछै सोधौ कै ई गोळा माथै कठै-कठै वै नक्सा सई-सई मिलै है।'

हूँ छोरां नै नित-हमेशा कीं नुवौ-नुंवौ सोधबा नै कैबा लाग्यौ। हूँ बोल्यौ: 'थै आज तंई जिका-जिका गांव जोया हुवै, बांनै सोध काढौ। आ जोवौ कै बठै किसा किसा रास्ताऊ हूय'र जा सकौ हौ। मारग में किसी नद्यां आवै है, किसा-किसा गांव आवै है, बांनै ई सोधल्यौ।'

अेक तरीकौ तो औ हुयौ। दूजै खांनी, हूँ अफ्रीका जोय लीनौ हौ जिकौ अफ्रीका रौ नक्सौ सांमी राख'र बठै री बातां बताबा लाग्यौ। हूँ बांनै बिक्टोरिया, नियाग्रा, टांगानिका, जांबेसी, नील अर अफ्रीका रा सिंघा-हाथ्यां अर बठै रा लोगां—मस्साई अर कोवोरंडौ री बातां बताई। पछै अेक दिन हूँ बांनै कैयौ: 'अै आपणी आजू-बाजू रैबाळा कोळी, कुंबार, रैबारी, घांची है नी, बांनै देखबा नै जाऔ।' इयां कैय'र हूँ बांरै साथै गांवां, सरहदां, नदी कांठै अर भाखरां में भमबा नै जात्रा करी। बींसू बांरै मांय लारली पढ़ाई खांनी रुचि पैदा हुई।

पछै हूँ यांरै सारू भूगोळ रौ अेक बाचनालै थरपबा रौ बिचार करयौ, पण बी तरै री आछी जात्रा- पोथ्यां आपणी भासा में लादी कोनी। जित्ती मिळी, बांनै दे दी अर कैयौ: 'पोथी बांचता जाऔ अर नक्सो जोवता जाऔ, आदमी कठै सूं कठै जावै है, आ देखौ अर बांरै साथै घूमौ।'

विद्यार्थ्यां नै जात्रा-पोथ्यां बांचणी दाय आवै। दो अेक जणां नै काठियाबाड़ सर्व संग्रह में घणौ मजौ आयौ। नक्सा में सूं अेक गांवड़ौ छांट'र वै बींरै बारै में सर्व संग्रह सूं पूरी जाणकारी हासल करबा लाग्या। ई तरै कित्ताई अजाण्यां गांवां री जाणकारी भेळी करबा लाग्या। रविशंकर रावळ रा चित्र बांनै अम्दाबाद री आखी जाणकारी कराई। जे हरेक खास-खास जग्यां रा चित्र-एल्बम होता तो अच्छ्यौ होतौ। अेक दिन रवि भाई आया अर यांरै खंनै मदरास री अेक फिलम ही, जिकी हूँ विद्यार्थ्यां ने दिखाई। सलेमा नुकसाण करै है पण दूजै पासी यौ भणाई रौ अणमोल साधन ई है। दूर री हूबहू झांकी दिखाबा सूं विद्यार्थ्यां रौ भूगोळ री दिलचस्पी बधबा लागी। अेकर 'सीजर्स सिगरेट' री तास म्हारै हाथ आयगी। बीमें देस-देस रा लोगां रा चित्र हा, जिका हूँ विद्यार्थ्यां नै दिखाया। म्हारौ मकसद बांनै आखी दुनिया रौ ग्यांन करया रौ कोनी हौ। यांनै की याद रैवै, औ ई कोनी हौ। फगत इत्तौ ई मकसद हौ कै वै आछी तरै समज लैवै कै आ दुनिया कित्ती बडी है। ई रै मांय किसी सारी चीजां अर जग्यां जाणबा-जोया लायक है अर बांनै जोया सारू किसा-किसा साधन है। बस, म्हारै सारू इतौ ई घणौ हौ।

हूँ अेक दूजी रमत काढी, बींरौ नांव है 'चालौ आपां मुसाफरी पर चालां।' विद्यार्थी भावनगर सूं अम्दाबाद, दुवारका, मुंबई, हिंवाळै, ... इत्याद जग्यां सारू बईर होता। पछै कियां बईर होणौ, किसी-किसा

में बैठणौ, कठै-कठै गाड्या पलटणी, कठै-कठै जोवण जोगी जग्यां है, वठै देखण री किसी-किसी ठौड़ है, कित्ता दिनां में जात्रा पूरी हुवै, कुण-कुण मिलसी, अर कांई कांई चीजां खरीदबा जोगी है इत्याद वातां पर विचार करता; सांचकला खरचा रौ अंदाजौ लगाता, सैरां री गाइडां जोय'र जात्रा में देखण जोगी जग्यां रा नांव टूंकता अर भूगोळ सूं बखाणबा-जोगी चीजां सारू बांच-बांच'र आ पक्की करता कै कांई-कांई चीजां मोलावणी चईजै। बै ईं तरै सू सै बातां रौ अभ्यास करता जाणै सांचाणी जात्रा माथै निकळ्या हुवै। औ अभ्यास हूँ भूगोळ नै समजबा री रीत रा अेक नमूना वतौर करतौ। बाकी रौ काम विद्यार्थ्यां माथै छोड देतौ। कदेई बै नक्सा में आ टंटोळता कै दियासलाई री पेटी कठै सूं आई। कदेई बै अठै री रूई बिलायत किसा-किसा मारग हूय'र जावै, आ जाणबा सारू कलपना में रूई री गांठा माथै बैठ'र वईर हो ज्याता। कदेई बै बजार घूमबा जाता अर निगै करता कै अेक दुकान में किसा-किसा देस अर किसा-किसा गांव जम'र बैठ्या है। कदेई बे नद्यां रा नांवां री, तो कदेई पाड़ा रा नांवां री, कदेई देसां रा नांवां री तो कदेई सैरा'रा नांवां री, ईं तरै भूगोळ री चीजां अर भूगोळ रा नांवां री अंतकड़ी रौ खेल खेलता। चित्रकला में जित्ता चित-मन सूं बै झाड़ रौ चित्र बणाता, बीं तरै बांनै देस-देस रा नक्सा बणाबा में ई आणद आतौ। वै आपरा चीतर्‌यौडा नक्सां में आपरी आंख्यां सूं जोयोड़ा, खुद बांच्यौड़ा, खुदौखुद सुण्यौडा गावां, नद्यां अर डूंगरा नै दरसावता अर वधारै दरसाव सारू भूगोळ बांच'र जोवता कै नुवां गांव किसा है, किसी ठौड है। ईं तरै म्हारी भूगोळ री पढाई चालती।

म्हारा सिक्षक साइनां मनै अेक दिन कैयौ: 'भाइडा! औ काम तो थांरै ई ताबै रौ है। इती सारी बातां म्हे कठै सूं जाणां? ईं रीत-भांत सूं म्हानै भूगोळ री बातां करणी कोनी आवै!'

हूँ कैयौ: 'भायां! सौक्युंई आ सकै। आपां नै थोड़ी मैनत करणी चईजै। आपांरै मांय कीं उछाव होणौ चईज।'

(५)

सालीणी परीक्ष्या रौ बगत नैड़ौ आवै हौ। हूँ म्हारा काम रौ तखमीनौ

लेबा नै बैठौ हो। बैठां-बैठां गणित रौ बिचार करबा लाग्यौ । बात आ कोनी कै आज तांई हूँ गणित रै हात ई नंई लगायौ हुवै, पण आज ईंरी चरचा करबा रौ म्हारौ मन है। जद हूँ म्हारा वरग रा बिद्यार्थ्यां नै, बै गणित में कित्तौ-कांई जाणै है, आ ठा करबा सारू अभ्यास-पोथी सूं सवाल लिखाया तो बै सै बांनै सई कर बताया। पैली तो हूँ सोच्यौ कै अै सै गणित में पक्का है अर आ चोखी ई बात है कै जिका विषय में हूँ कीं खास नुंवौ काम कर'र दिखाबा-जोगौ कोनी, बीं विषय में अै बिद्यार्थी ठीक ठाक हा। पण जद हूँ बांनै होळै-सी हिसाबां रै मूळ में मौजूद तरक पूछ्यौ, रीत रौ कारण पूछ्यौ तो मनै अंधारौ देखण नै मिल्यौ। मनै लाग्यौ कै बिद्यार्थ्यां नै जोड़-बाकी करणी आवै है, पण बांरौ ग्यांन तोतां आळौ है, मशीनी। हूँ सोचबा लाग्यौः 'ईंरौ कांई उपाव करां?' हूँ अमूजबा लाग्यौ। अेक तौ गणित म्हारौ बालौ विषय कोनी हौ। दूजौ, गणित री भणाई रा दोसां नै हूँ समजै हो, पण बांनै दूर कियां कर सकां हां, ईं बात री खोज हूँ कदेई करी कोनी ही। ईं हालत में म्हारै सांमी औ अेक आकरौ सवाल हौ कै हूँ कियां-कांई करूं? हूँ बडा साब खंनै गयौ अर साफ-साफ कैय दियौः 'साब! गणित विषय में हूँ कीं नुंवौ कोनी कर दिखा सकूंला। हाँ, छोरां नै आछी तरयां समजा'र पढ़ाघूंला अर अभ्यासक्रम पूरौ कराघूंला।'

साब बोल्याः 'इयां कियां? गणित री पढ़ाई में सुधार री गुंजास कोनी कंई?'

हूँ बोल्यौः 'जी हाँ, है। पण बै फैरफार मूळ सूं ई होणा चईजै। छोरां नै गिणती सिखाब री बेळां सूं ई सई पद्धति बताणी चईजै। गणित इस्तक रौ विषय है कै जे अेकर तरक सूं मन रै मांय नंई ठसै तो पछै हमेसां रै वास्तै पांगळौ रैय ज्यावै।'

साब कैयौः 'तो थैं सरु सूं ई यांनै क्यूं नंई सिखाओ?'

हूँ उत्तर दियौः 'पण बीं सारू वगत कठै है? अर जे वगत हुवै तो ई आं बिद्यार्थ्यां नै, जिका यंत्र री जियां काम करबा रा हेवा होय चुक्या, जिका गणित में कारण पूछै ई कोनी, तरक कर्‌यां बिना ई आपरी गणतरी कर्‌यां राखै, बांनै सई रास्ता माथै लाणौ बोत दौरौ है– बोत मुस्कल है।'

साब बोल्याः 'जणां आं छोरां री गणित...............'

हूँ कैयौः 'वियां तो हूँ म्हारै सूं बणसी जित्तौ आच्छ्यौ ई करूंला, पण म्हारौ इत्तौ ई कैणौ है ईं विषय में जिका-जिका नुंवां अखतरा हूय सकै, यांनै

हूं कर नंई सकूंला।'

साव पूछ्यौ : 'मानल्यौ कै थांनै पैली सूं ई अेक किलास सूंपद्यां तो थें वींरै माथै नुंवां अखतरा करोला कै नंई?'

हूं कैयौ: 'मनै ईं बात री उमेद तो है ई कै गणित रौ अखतरौ अेक-दोय री गिणती सूं ई सरू करूं. जिको पछै हूं सगळां नै कैय सकूं कै म्हारी आ रीत सही है। म्हारा सिक्षक भायां नै गणित मे कीं न कीं नुंवी पद्धति दाखल करवा री सीख है, आ बात हूं जाणूं हूं। जे आंवतै बरस मनै अखतरा करवा रौ मौकौ मिळैला तो चन्दर शंकर अर हूं ई विषय में अखतरा करांला। हूं जाणूं कै मोंटेसरी री गणित पद्धति बोत चोखी है। या सैज है। हूं वींनै बांची-गुणी है, पर पूरौ अनभव कोनी कर्‌यौ।'

साव बोल्या: 'जे आंवतै बरस थे अठै डिप्टी री, सिक्षण मिन्दर रा सिक्षक रौ अर गणित रा प्रयोगकर्ता रौ पद साम्भो तो?'

हूं बोल्यौ: 'वा तो हरिइंछा! पण ईं बगत आपनै इत्तौ ई कैणौ चावूं कै गणित रा विषय में हूं कीं नुंवीं बात कर'र नंई बता सकूंला।'

(६)

सालीणी परीक्ष्या नजीक आई। हूं म्हारी रीत सूं विद्यार्थ्यां नै त्यारी करावा लाग्यौ। वै बोत उछाव-उमाव सूं त्यारी करै हा। मनै भरोसौ हौ कै म्हारा विद्यार्थी परीक्ष्या में सफळ निवड़ही।

परीक्ष्या रौ वौ दिन आयौ। बडा साव सगळां री परीक्ष्या लिवाली। आज म्हारा वरग री वारी ही। म्हांरी सरत मुजब बडा साव नै खुद परीक्ष्या लेणी ही। वै मनै हंस'र कैयो. 'अच्छ्या भई लिछमी शंकर जी! हूं थांरै वरग री परीक्ष्या कोनी लेऊं, थांरा वरग रा सौ विद्यार्थ्यां नै हूं ऊपरली किलास में चढाऊं हूं।'

हूं बोल्यौ: 'जी नईं, इयां ना करो। इयां करवासूं बेईं विद्यार्थ्यां नै न्याव कोनी मिलै।'

साव कैयौ: 'थांनै उत्तौ या मांथै अन्याय हुवौ? किंयां?'

हूं बोल्यौ: 'जिण भैरा चढावण जोग नईं है, वांनै हूं ऊपर कोनी चढा सकूं।'

बडा साबः 'पण मनै बिसवास है कै थै सगळां नै बरौबट त्यार करया है। थांरी पढ़ाई मनै मंजूर है।'

हूँ बोल्यौः 'आ तो सई है, पण कांई म्हारी पढ़ाई सगळां में अेक सरीखी ऊगी है? कोई-कोई रै तो बा अड़ी ई कोनी। बै तो साव कोरा अबोट रैयग्या।'

बडा साबः 'जणां बां रौ कांई करणौ चईजै, थैं ई बताऔ।'

हूँ बोल्यौ : 'जी बां में सूं कोई-कोई नै तो साळा छोड़ ई देणी चईजै। रुघा नाई रौ बेटौ इतियास, भूगोळ अर गणित रौ जीव कोनी। बौ ई साळा में अमूजै। पण बौ आपरै धंधा में इत्तौ हुंस्यार है कै सौ नायां रौ सेठ बण'र बडौ सारौ सैलून खोल सकै। ईंनै हज्जामगीरी में और हुंस्यारी सीखबा नै अर सैलून रौ इन्तजाम करबा री अटकळां सीखब नै मुंबई भेजणौ चईजै।'

बडा साब : 'ठीक, दूजा कुण-कुण है जिका साळा सारू नाजोगा लागै है?'

हूँ बोल्यौः 'साळा सारू नाजोगा तो कोनी कैय सकां, पण साळा बांरै जोगी कोनी। जिकां कामां रै बास्तै बै लायक है, बै काम साळा बांनै कोनी देय सकै।'

बडा साबः 'अच्छ्या, आ बात है। पण इसा कुण-कुण है?'

हूँ बोल्यौः 'जीवण सेठ रौ बेटौ नेमी पुलिस बिभाग रै लायक है। बीं नै अखाड़ा में भरती करणै री जरूत है। सेठजी बींरै सारू मुसाफरी रौ परबंध कर देवै अर बौ कोई चोखा थांणादार खंनै रैय'र थोड़ा कानून-कायदा बांच लेवै, तो पांच बरसां मे जोरदार थांणैदार बणज्यासी। अबार सूं ई औ आधी साळा माथै थांणैदारी कर रैयौ है।'

बड़ा साब : 'अच्छ्या, भळै कुण-कुण है?'

हूँ बोल्यौः 'जी ईं तरै तीन जणां भळौ काचा है। बांनै हूँ आं छुट्यां में म्हारै खंनै राख'र ऊपरली किलास वास्तै त्यार करूंला। पण साब, आपणी साळा री किलासां अर अभ्यासक्रम री करड़ाई रौ कीं उपाव नंई करौला?'

बड़ा साबः 'ईं बात नै जाबाद्यौ। ईंमें म्हारा हात-पग बन्ध्योड़ा है, आ बात हूँ पैली ई थांनै कैई बार कैय चुक्यौ हूँ। जणां ठीक है, थांरी परीक्ष्या निवड़गी।'

हूँ बोल्यौः 'नंई साब।'

बडा साबः 'छमाई आळी जियां कीं दिखाब रौ सरंजाम कर राख्यौ हैं कांई? थांरी तरकीब अबै हूँ जांणग्यौ हूँ।'

(७)

आज म्हारी साळा रौ मेळावड़ौ हौ। परीक्ष्या रै पछै हर साल ई तरै रौ जलसौ हुयां करै। ऊंचा लंबरां सूं पास होणियां बिद्यार्थ्यां नै आज इनाम दिरीजबाळा हा। गांव रा सेठ, सिरीमंत अर अैलकार हाजर हा। ई मौकै रौ कार्यक्रम बणाबा सारू बडा साब मनै कैयौ हौ। औ काम हूँ म्हारा बिद्यार्थ्यां नै सूंप्यौ हौ। बै जोक्युंई कर्‌यौ हौ, म्हारी सला सूं ई कर्‌यौ हौ।

सैऊं पैली डांडिया रास सरू हुयौ। आधा घंटा तांई बै झुकझुकाटी मचा दी। पछै सरतां आळी रमतां चाली–दौड़ री, छलांग री, तीन टांग री, कुड़सी री इत्याद। रमतां निवड़ी'र मूक अभिनय सरू हुयौ। बिद्यार्थ्यां में सूं कोई सेठ रौ, कोई सिक्ष्या अधिकारी रौ, कोई थांणैदार रौ तो कोई नेतावां रौ अभिनय दिखायौ। बींरै पछै बिद्यार्थी आपरा बणायोड़ा चित्र ले'र आया अर लुळ-लुळ'र सगळां गिरस्थ्यां नै दिखाया। कमरा मे बैठ्या सै जणां चित्र देखण में लामीजग्या हा।

अबै इनाम देणै रौ काम हो। हर साल सवा सौ रिपियां रा इनाम दिरीजै हा, जिका हुंस्यार बिद्यार्थ्यां रै बिचाळै वंटीजता हा।

बडा साब ऊभा हुया। हमेस रै रिवाज मुजब बै दो बोल कैबा लाग्याः

'आज रौ इनाम रौ मेळावड़ौ हूँ जुदी जात रौ लेखूं हूँ । अै म्हारै पागती बैठ्या भाई लिछमी शंकर इनाम री बाबत में मनै नुंवों पाठ सिखायौ है। ई साल रा सवा सौ रिपियां रा हूँ जुदा-जुदा इनाम कोनी बांटूं, पण आं सूं नुंवों पाठ भणायाळा अै भाई रै नांव माथै साळा में अेक वाचनालै थरपूं हूँ। मनै आ बात कैता थकां घणौ हरख होय रैयौ है कै हर साल इनाम रा रिपिया वाचनालै में जावै, ई तरै रौ हुकम मनै ऊपर सूं मिळ्यौ है। इनाम न्यारा-न्यारा बिद्यार्थ्यां नै निजू हैसियत सूं मिळै तो वांमें गरब अर निरासा आय ज्यावै। ई वास्तै आ नुंवीं ब्यौस्ता करीजी है कै इनाम रौ फायदौ सगळां नै मिळै । मनै इनाम री फिजूलगी बतायाळा अर ई अखतरा रो तजरबौ करायाळा भाई

रौ हूँ सगळां रै सामी घणौ-घणौ अेसान मानूं हूँ।

ई मौके बताणौ जरूरी है कै अे भाई म्हारै खंनै चौथी किलास नै नुवीं रीत सूं पढ़ाणै रौ अखतरौ करबा बास्तै अेक साल पैलां आया हा। वीं बगत हूँ आंनै बैवार-बायरौ पोथी पिंडत ई धारै हौ। 'इसा खपती घणांई है, जद' कसौटी माथै परीक्ष्या होसी, मत्तै ई न्हाट ज्यासी' इयां मान'र हूँ आने मंजूरी दे दी कै थांरौ अखतरौ लागू करौ। हूँ कैणी चाऊं कै मनै आं में दर में ई बिसवास कोनी हौ, पर मनै कबूल करणौ चइजै कै आंरौ प्रयोग– आं रौ अखतरौ सफळ निवड्यौ है। अे म्हारै बिचारां में फैरफार कर्‌यौ है अर म्हारा हिवड़ा में अवै मनै संभळायौ है कै प्राथमिक सिक्षण रा जूना ढरड़ा रौ छैड़ौ आणौ चईजै। म्हारै जिसा सिक्षकां अर सिक्षा अधिकारियां नै अबै राजी-खुशी छुट्टी लैय'र नुवीं पीढ़ी रा कलपनासील सोचणियां अर, सैक्षिक बिचारकां नै ठौड़ देणी चईजै।

हूँ म्हारौ हरख कियां पेस करूं? आंरा वरग रा आं विद्यार्थ्यां पासी जोवौ। अे कित्ता ब्यौस्ताळु, तंदरुस्त अर मौजीला है। आंरी सगती कित्ती बधी है, ईं री हूँ साखी भरूं हूँ। आंनै लेय'र आंरा माँ-बापां रौ सन्तोष हूँ बारबार सांभळ्यौ है।'

बडा साब रौ भासण पूरौ हुयौ। सै गया, हूँ ई घरै आयौ।



पोथी में बापरीज्योड़ा कीं नुंवां सबद

अखतरौ	=	प्रयोग
सांपड़तै	=	प्रत्यक्ष
अघरौ	=	कठिन
खातरी	=	विश्वास
भणत्तर	=	शिक्षण
निसाळिया	=	विद्यार्थी
केळवीजी	=	विकसित हुई
नोंधपोथी	=	नोटबुक
मेळावडौ	=	जलसा
बेनामून	=	बेमिसाल
उपाड़णौ	=	हाथ में लेना
पानड़ी	=	सूची
सांभळौ	=	सुनो
सांभ्यौ	=	संभाला
आदरी	=	शुरू की
गम्मत	=	मनोविनोद
वरग	=	कक्षा
झीणवट	=	बारीकी से
अभिमुख	=	तैयार
वधारै	=	अधिक
कसौटी	=	जाँच
ओरड़ौ	=	कमरा
जोइजै	=	चाहिए
भळै	=	फिर, पुनः
तेड़ौ	=	बुलावा
भणाई	=	पढ़ाई
मैमा	=	महिमा
अळ्यौ		द पेकार